

१. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 २. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 ३. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 ४. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 ५. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 ६. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 ७. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 ८. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 ९. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.
 १०. 'वसन्त षोडशी' काशी १९१९.

कथा-प्रभास

प्रभास कुमार चौधरी



मैथिली अकादमी, पटना

कथा-प्रभास

(तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा)

प्रभास कुमार चौधरी



मैथिली अकादमी, पटना

प्रकाशक : मैथिली अकादमी प्रकाशन १६१

मैथिली अकादमी

धनकुशापुरी

गठन-००००००

(८) मैथिली अकादमी

साधारण सदस्य : डॉ० गणेश मुखर्जी

प्रथम संस्करण

विषयसूची १६००

प्रति—५५००



मुद्रक :

मुन्शीवर प्रसाद,

मुन्शीवरपुर, गढ़वा—१

प्रस्ताविका

कथा आनु एक सशक्त विद्या भिन्न । बहुत हर्षक विषय ये सम्पत्ति मैथिली
कथा साहित्य बहुत समृद्ध में रहत छति । अतिरिक्त कथा संपत्ति प्रकाशनक
दृष्टिकोने मैथिलीक अतिरिक्त कथाकार प्रभास कुमार चौधरीक 'कथा-प्रवास'
प्रकाशन करैत अकादमी । अतिरिक्त आत्मिक अनुभव करैत छति । कथा कहवाक
एक अपूर्व योग्यता, सहज आकर्षक शिल्प, परिचित सहजता भी विश्वसनीयता
कथा कथनक प्रभावशीलताक लेल प्रभास कुमार चौधरी मैथिली कथा साहित्यमें
अतिरिक्त छति । कथा-प्रवास लेखनमें सेहो ई बहुत योग्य छति ।

'कथा-प्रवास'में विद्युत तोष दमकक मिश्रण कथाकारक अदृष्टांत
नोट अतिरिक्त कथा संरक्षित छति । मध्यमगीय समाजक यथार्थ चित्रण, सामाजी
विकासक चर्चा तर कृद्वाक पितामह लोकक अर्थक व्यवस्था-कथा भी एक अतिरिक्त
समाजक संकल्पनाक विद्या को दर्शित छति । रहस्यमय छति । कथा अति कथा
साहित्यक प्रेमो पाठक अकादमीक एहि अतिरिक्त प्रस्तुतिक स्वागत करैत छि ।

मैथिली अकादमी

२६-११-१९८०

(डॉ० गणेश मुखर्जी)

अध्यक्ष

प्रकाशिकी

[illegible]

(一)

मनोवैज्ञानिकता, दाहकतः सर्वत्र उद्यम-प्रयत्न विरले वर्तते अस्ति । ई शक्तिशाली भो कथा कहेन अस्ति ये सर्वसाधारण देहात्मिक शरीर अभिव्यक्त रूपतः अवर्तते अस्ति । कदाचित् आत्मनः विवेकीयता यो विवर्तित अवस्था वर्तते पश्चात् विवर्तक त्वेक उद्यमिन् अवलोकन अस्ति आहूति ई शक्तिशाली कोनो दौर्भाग्यता दम्बलित करम जा सकक । दहकत-प्रतिवादात् सामाजिक व्यवस्था, विवर्तमानस्य जीवन, मानुस व्यवहार को अविचार से प्रवृत्त अस्ति अथवा अविचारित सम्प्रतिष्ठ, दुःख-वैतना तथा विविध प्रकारक ई अभिव्यक्त शरीर अवस्था वर्तते अस्ति ।

[illegible]

इस भाषा करते की वे असाधारण कथा-याचक एवं सुन्दर-सुश्रुत
अभिज्ञ हुए थे। अतः कथा-याचक व सुन्दर-सुश्रुत के रूप में स्थापित कराए। सर्वथा
संकेत रहितो मुद्रण कार्य के दिग्दर्शक-निधि बिके।

नैविनी शकारयो

25-11-10

देवकान्त म्हा

निवेष्टक-गृह-संस्थान

[illegible][illegible]

कथाकार काव्य समुद्रतट पर चलते हैं वृक्ष छाये में । विपरीत प्रसूरति,
हरिनीह्न बाहुक पीप पत्र, गोविन्द साक वायाम बोली, गणितमय 'सुन्दर-दक्षिण'
तन्त्रिक 'अवधुतान', राजकमलक 'मार्गिक गीत' सुबोधक सधुमान, 'शुभक'
'बन्धु' का 'सुन्दर कहक बाटा', रामदेव काव्य 'मनुक सन्ताप' दक्षिणक
दक्षिण देशक, बालकान्तक 'लोकक', साहित्यानन्दक 'विश्वेश्वरसमृद्धि' राजमोहन
काव्य 'अप्यन लोक' का हृदय बाधी, अरुणो, सुपति, दुल आदि कथा एहि दक्षिण
प्रकाशित अल अहिर्न भवितक 'रमजाओ' गं धारण्य भेत कथा-पारा सपुत्र एवं
विकसित भेत भी अन्य भारतीय भाषाक कथीक जनकता प्राप्त कं सवनाक
हृदयि जनक ।

[illegible][illegible]

हमारा माइयो ओकर कारण बहू तगैठ जखि जे हम बेर बेर कहैठ जायन छै । जवन जायक प्रति सैपिलक जून आवन । जवन प्राप्ति हवे पकाछि हन ।

मोरीत रहती है या मोरीत नहीं। का मोरीत नहीं बलि सम्पूर्ण परिवार, भाद-बहिन, दोस्त-मित्र, भास-भर का संसार के सभी मित्रिके हमर कपाक कंग बनेल रहैत बलि । भास का मोरीत नहीं बलि दुगु बेटी चितो या सिपो (बहना का बनेना) के बनेना परिवार में एहि सम्पूर्ण प्रेक्ष कानी होवार कयलक ।

एहि कथा संकलनक प्रकाशन हेतु हमर अकादमीक सम्पत्ति ३१० रुपय के मोर मोराला प्रेस काशी प्रकाश करैत छी । अकादमीक विद्वान लिदेकक का साहित्य-मोरी सम्पूर्ण का० देवनागरी भाषा के सम्पूर्ण देनाक अविचारिकता करत हुनकर मोराला के छोट कयलक कयलक हैत । मास (३१० संकेत पुस्तक) काहि सम्पूर्ण का० हेतु सँ आकाश-मन्त्रा कयलक बलि, छकर हुनकर सँ बनेल छल ।

प्रभात कुमार जीवरी

काशी १९८०

सातम दशकक कथा : प्रभासक

- ☐ लिखाक बन्द । चिट्ठी कयल
- ☐ दुबल कयल : जयराज काशीर
- ☐ सुभास-द्वारा
- ☐ बय चिट्ठी : तीरु इन्
- ☐ जयराज
- ☐ बिरमिद
- ☐ कलान्त
- ☐ चिनकरी
- ☐ अष्टाध्या
- ☐ अष्टाध्या
- ☐ सुयति
- ☐ अनन्तरिहार बभन
- ☐ कयली
- ☐ दुबल

काशी-प्रभास

लिफाफे बन्द : चिट्ठी खोजत

एकटा संकल्पक शब्द नही बाबू लिफाफे देखत हर रोज़ जता मिलनि—
कोनका अब पढ़िमे लो । आते दणये कोन ? जखन पढ़ेक बलि, तू भवने दिवेंक
ने पड़ि लो ।

लिफाफे हस्त के जेह देरी कोनक संकल्प बलि मिलनि का एकटा लिफाफे
हर दीनि मिलनि । हस्त कोनक जखन । परचरारत अंगुरक बीच रखत लिफाफे
का । पढ़िमुनि क देखनि, जगत पता देखनि, पठाब'बलाक नाम देखनि
आ कोर लिफाफे देखत पर राखि देखनि । लिफाफे फाड़ि क' एष पढ़ेक साहब
नहि मिलनि । केन खोजि लिफाफे के हुनक पुत्र पोरिनाक पत्र नहि, कोनो लिफाफे गैर
साहब कोर के लिफाफे भूनेह देरी हुनकर पाक काल पसरि जखन, का कोन क'
लिस जगद भः जखन ।

हु बंदा पहिले नकुलक पत्रपत्रो लखना बाबूका बाबू देखत पर राखि लेख
मिलनि । बाबू कोन टा पत्र जखन — एक टा मे वीर (बो) बाबूका हस्तपत्र
आ कोन के हाथमिलेखन कोरक निरख । समेटा बाबू नुखी पुत्र एष
पत्र लख, किरानी बाबूका हस्तपत्र लख देखनि का हस्तपत्र कमलमिलने जे एकर
हस्तपत्र जखन पर बलि बलि । पुत्र कोन बाबू जखन छलहि जे कोन वतर समक
पर नहि जखन । कोन के समय पर करम बाबू के करम किरानी बाबू कोन
बाबूका कोरके मे नहि लिखने छलहि । कोनका बाबूका पर लिपिवा जखन छलहि
—'नका करे सर । काम ही एखना रहता है । इतना लख काम कोर जखन
किरानी । मे तो कितनी बार कहू बाबू, सब एक किरानी के जखन का नहि, एक
कामिलेखन बाबूका पर ।' हुनकर जखन सामने वृष भः जखन छलहि कोन बाबू ।
देहातक पापुनी नकुल मे हुनका कोनका लखनाक कोनका नहि । पर कोनको कोन
देखी लेख । लिफाफेको कमला तू कोन लख नहि छलनि — देखत कोन साहब जखन
जखन किरानी बाबू पर ।

उत्तर पत्र । मायै वीर्यक पत्र । पञ्चम दूतक रीति वाचक पत्र । निरुद्ध
 देखाहि मरैत बाहु डेटाक हुन्य भिनि भोहि रैत लवाइ । टीणो देस मिमन्थे नहि
 भोजनि । पत्ता पैकलनि—नरैत नाथ छा, सुदधान्तर हाइल्लुन, महुकक, बिका—
 इच्छावा । पत्तो पदार्थक नाथ देल्लनि—छोटे-इलाय अर, रमय काकोली, पिपैका टोट
 कट्या । तैयो भेज उत्तर पत्र के भोजिक रहबाक काहू नहि नि रहल ललनि,
 जेना श्री भिक्षाक कोभो जनेस दुसं हूँ, सकट भीतर तुनक भूषक पत्र माछी होनि,
 मकारा मुक्त करीबाक छु अपन सपनत अलि समझै रहलनि बेरेन जावु के । मकारा
 ली कपभनि काहि सुदा तप अर्थ । कतेको दर दुइ प्रतिज भ रिफाय हाक से
 छेलाजि बलि, भूदा निपाक हत्य मे मरैत देह कोनक बरकप दहि जाउत छनि,
 टुटि बाइत छनि । कायक देवस परे हुनकर करधनाइत कामुर रैत छनि ।
 कायक श्री पछर बंवाज दहि टुटैत छनि ।

त' की ओ गये गये बाबू नहि पकड़नि कहि । की ओ गये पकड़ि लोभ ।
 तिसाकन बन्धुगु के स स्वयं हनो जेक से की गयेत छनि हुनका ने ? ओ गयेत
 छनि, समय जयेत छनि । कामवक पठिरे देखाय पारबखन रनि जात छनि ।
 पकड़ि एक-एक बाहरि लपट न' जेते छनि—संशयक नीचां कुताबत हुनकर
 मारुत-हारस बाधि एं किउ नहि बचैत छनि । पकड़ि देनि तेव छनि की । पकड़ि
 पशमाक केस कमजोर छनि । बाधिका भाति कार मुमिन न' देखि कहि, जेव
 हयन' बढछनि । बाकुर पकड़ि कहे छनि मुदा लपटाय नहुका न' की होय
 पाकिर कहनि लुचन न' । बाकुर न' बाकुर जेव पकड़ि कहि—देखि कह
 छनि कह, बाकुर पकड़ि कहि जायत, नीचां जनि जात, पकड़ि कहि कहि कहि कहि
 कहि । ईशमलित बन्धु छनि कह, लपटाय कहि । बाकुर हनो पकड़ि ।

[illegible]

इसने मैं को भी सोचने के लिए कहा, 'मनोविज्ञान' किताब सद्यःप्रसारक कारण होइत है।
 'तो इसका सावधानी कृति में क्यों अपना मैं महाजनक दृष्टि सुचारु कर्त्तव्य की होइक ?
 सुलभक दायित्व बोधी कोना बोईक ? बोईक आ रमेतक हेतु काष्ठर जोईक ?
 सुलभक ? कोष्ठक बोईक बद्ध कमजोर भा' मेक राशि । सुमंशा नृचिते रहित
 प्रान्त, कोष्ठक का आश्रय में देखवताक छवि । मांशली नेता कोष्ठक धारतुम छेक,
 एकका कोष्ठक विवक्षित उ' करवते पदवति । कोष्ठक मनु सभ विम भाक केस
 कर्त्तव्य बोईक छवि । काबी व कोना ? बाध एककटा फाक छेक, सेहो पुरान, भाटल
 का बतरन । फर हानवताक मध्य विर्यक सुनसु । अन्धका समजोर केरक के विर्यक
 देखन । देखन सोचना सेम अहिना की मम समजोर छवि । महाजनक सुद, धरक
 निषटक राधन—

का श्रेष्ठ ध्यान बहिले रक्षाक ध्यान सर्वत्र समि भरेन बाहु के । हुबहार
हस्तो वर ४ रमा के दोष हृवका भरोस छवि लखा ली कोनो बलीन जमि, चाहि
मे ने सोनो बिनया लेक, ने रक्षागि । मे विद्याय, मे उपराम । लेक लाली काज,
बाज काज । भरेन बाहु नहि बनेत छवि के रमाक लेख कखन दिन उरोत छनि बा
उपन नहि होउत छनि । भरे भालि खुलवा पर भरेन बाहु देखो छवि मे गगिन
महाराज लेक, मुसलोक बोरा नोपन लेक, गुनाक बाधन विद्यामोक्ष छेक, सराह
कुटी माधव, मा कृत कोटिक' एखन लेक, मा खुलहु पवारिन', केतली मे पाहुन
पावि भरा रमा बैसनि छवि । साग भवत-भवत सभ के बसवर भेटि जाइत लेक
मा दस बने दस आ ले क' स्पष्ट छनि जाइत जाँस । मुदा रक्षाक काक सुपहुरिया
होग हुने क हुनो जलन नाह होउत छनि । कुटीक हिस मे भरेन काबु केही छवि
के एक क्षण से बहिन क सम्भारने रमा भरे स तीन बजे गरि भंसावर मे स्पष्ट
रहैत छनि । बाधासिली नहि छनि, के हो जमने बजने पड़ेत छनि । ब्रमदा करेन-
वाँत हु बडे कृष्णहि होउत छनि, त' बल्लो-बल्लो कल पर हु लोटा कल झरि
प्रबल्लोका एका पर बैसि जाइत छवि । कर जखी-जखी हु कीर भुँइ मे व' रमा
बने बानु कोलावर पडिवा, जिवा नीलाय काउत छनि । मुदा जाहि बने बाउ
कजक केहिमे जाइत छनि । एकरो दिन फोले डेटो व' जमनेक व' सुनन बागोबा
मरव पर उठो सेतनि । शायक बर कोकन जसि ली । भरे भाँइ से बँह कम । एक
हाथ से कोटि मे कपडो, दिविबाक उबाधक दसोडो रमा नुहाइक जानू मे बैसनि
रहैत छनि बा उठन मे लुबिहोउक बापीन पहाइक बोधये मही उठा नरेन

विष्णुपद उभय . विद्मो ह्यनन

15.

[illegible]

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

[illegible]

या अनुवाद अखिल ने साधू तिस मुनिराई पुर्व किछ दशर किछ सार्थि ॥

१. महाराष्ट्र का राजधानी मुंबई है।
 २. महाराष्ट्र का मुख्य मंत्रि देवेंद्र फडणवीस हैं।
 ३. महाराष्ट्र का मुख्य नगर मुंबई है।
 ४. महाराष्ट्र का मुख्य नदी कोरवा है।
 ५. महाराष्ट्र का मुख्य नदी कोरवा है।
 ६. महाराष्ट्र का मुख्य नदी कोरवा है।
 ७. महाराष्ट्र का मुख्य नदी कोरवा है।
 ८. महाराष्ट्र का मुख्य नदी कोरवा है।
 ९. महाराष्ट्र का मुख्य नदी कोरवा है।
 १०. महाराष्ट्र का मुख्य नदी कोरवा है।

१०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

[illegible][illegible][illegible]

राशि वराह दिवस बौध्द उठाने लग्न । तैयो बन्धन लनेक पाद रह्य जेना
 पोरन कारी बधीष्ट । जोय करय त' बन्धन के पुठा पाणि जगद । बही जगत
 बांलनमे परोक्षक उखारिमे दगित रही । तब का अर्जुन कोशनीय बीचक मधक पर
 मृगनिस्तेलीक मारक छोद दिव । के बने गिशा योग रह्य था मरुत पर गरमनि
 उठनि छाह दिवानीक उजरा मरुता बगद हो भेठन । पण्डक जेना कारी कगार पर
 दुखेय बानुनक लम्बा होय ।

आहूत संवत् आषाढ वैशाखीक आहूत नहि भिने छल । जहाँ जेम्हा
संस्थानि देवुन पर जूझनि किछु बलि-दान कएलहुँ । पीछर रोडगीक सपत्नीक नहि
छिहकीस नहर जेम्हा हुन ठक पहरण बाहराने छनि रहल छलैक । जहाँक बाकल
कनकाकल काकुरिके देखि अम होइत छल जे मोगना गीतान पाली बाहूनिने
जिने पर रहल देख्य जाय १

हम जलसंबन्धितमे पढ़ने रहें । कलकत्ते के गोपालाहूँ जी कहते हैं कि "हम भी जल
है हमें ही " मुदा अनेक के शरीर जलगत भय वा अकॉमनरी नलम रीत मसीनम
नहि जाय ,

दुग्ध कन्या : चन्द्रमणि शर्मा

[55]

महोदय श्रीमान् देव प्रभु राजा विदुषो एव कृतं च वैदिकं चरितं
 चर्चा परं भवति तस्मिन् पक्षः । यदा विमर्शं कर्तुं भवति तस्मिन् पक्षः ।
 गोठलोय महोदय कृतं संज्ञितं यत् ।

[illegible]

अन्तर्गत प्रदत्त रूप नष्टि बाणिज्य (॥३८३॥) कि ३६८० कोटिप्रति
पाइए ३२ करोड । अन्तर्गत १०० करोड । अन्तर्गत १०० करोड
विशेष नष्टि यन्त्र । अन्तर्गत १०० करोड बाणिज्य (॥३८३॥) :

कदाचि वात भूति रूह्य कवि नावि मेन जल । व्यप्य कर्त्तुं बह्म वाचन
यत् । एतन् विवर्त्तयिष्ये कः परमं नुकयन्त्ययं शान्तक कार भवि भुवि कृत्स्न ।
अहो अहं अरवा पर कन्नाम कं रत्नम ज्ञो ।

१॥ गणेश ज्ञान का मैं हूँ मुक्त हूँ गुरु ज्ञान : धर्म के लोकोक्ति ।
 प्रश्न १॥—“हम सब ज्ञान सत्य सत्य हूँ । गणेश ज्ञान के लोकोक्ति ।
 गाना या गान ? का लोकोक्ति सत्य सत्य हूँ ?

[illegible]

हम जानें यदि ऐसा नहीं। चिकित्सा का ज़रूरत है। हम नहीं
मानते कि यह है। यह है। यह है। यह है। यह है। यह है। यह है। यह है।

दरमज्या नष्ट काँडे विना हुनउ दिन तुकन लडा खानासि भइ - "खाँद
दिन दूध कच हूँसक रेसहुँ" मे एतेक ताँत पोस अहाँके" । मुदा खाँद, शक्ति
एकमति हुन काँडे विना भए अहाँके काँडेसिमाँसायानि जो, के बरौके" नहि सुउँव
क्षमि जहाँ आगहन जो ।

[illegible][illegible]

॥५॥ मित्रोत्तमः कृतज्ञः, अर्थात् कृपयात् अनेन देयः अस्ति । तिस्रः अथ
चतस्रः अथ पञ्चदश । अथ चतस्रः अथ पञ्चदश । अथ चतस्रः अथ पञ्चदश ।
अथ चतस्रः अथ पञ्चदश । अथ चतस्रः अथ पञ्चदश ।

[illegible]

कहाँ जो-ए० कहावतें। हय कबहूँ केरुन, यधूर बेटलहुं। मुवा हय
ई सुख स्वादी नहि भे' सकल। एक राति कहीं जसमहुं न' हुमा जीहन
कठिन भ' भ'। बाबाके घण्टाये सात सुलाख पीताय कामेल बनि लेख छल

यहाँ बिना जाने कावस रहो ! मारे यहाँके कसबाना बघबाक हल
 जान भट्ट व भट्टा (न. ५) ॥ २ ॥ यहाँ १ २ ३ ४ ५ ॥ ६ ॥
 यहाँ नहि कोई देखत । कबनो किछु कहत बचनत ॥ यहाँवाप कसबाक सेनाधि
 यही यही काल बरि । जाइत काल कहन रही—किबसे भूक होइत वरि
 प्रथम ॥ २ ॥ यहाँ १ २ ३ ४ ५ ॥ ६ ॥
 यहाँके बलिष्ठत छानाडु बरि बैलकै बलि । योंकर बागडा भट्टरंग ॥
 यहाँके । किबसे त बा यहाँके बचनत नहि यहाँ केकत

[illegible]

[illegible][illegible]

अतः आगतं नहि कथमे एते ईदं वद अथवा न न कथयन्ते इ
 का तं क अथवा अथवा इ एतेन क न एत नै कानो विविधता इति
 मतेन इति अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
 अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा

[illegible][illegible][illegible]

बोहो बिन ह्य मुनि अवलुं । बिदा होइक काम कहीं रह्य पही—
“हृदय कथा कथय लिखन प्रवास । खली नाम कथित देखे । नहि हो, सत
लिखि देखे ॥” ह्य वचन के रह्यो

आ लाइ एंडर दिग्गज बाइ कथन दैल कथन पूरा कर' लगवहुं, त' एकटा अनारिफत श्री बाबाब टपकि बदन। अरर र' उवासी ई जे हुन बाबाबा मर कथो नहि ध' सकत छिबंक ।

वहाँ जनेत से। जो जनेत देरी की कपनक ? वहाँ बागमि... वहाँ !
मनताम क्या लिखि रहत से ! वहाँ भूख से ।"

[स्वयं हि रूप कानां फलम् यदि स्वं] भवानियमं मुदा शंसति मृत्युम् ।

[illegible][illegible]

इ कहि जो ली जाय जायति । किछु दूर जा कहि पुरिष कृपया सगु आनि
 ॥ १७ ॥ यह कहि जो ली जाय जायति । किछु दूर जा कहि पुरिष कृपया सगु आनि
 हम अहंकि को रर कप अहि दिख देल । जो अहंकि को रर कप अहि दिख देल
 हम बीकरी नाम छिहक ।

का स्त्री कर्म यौन का रूप कहते हैं 'यन' लिख' यौन येलते ।
 इस हिमबिंदों के उद्गम शिखर पर कथा निखन, जहाँ घर-घर कथा लिख ।
 कहते हैं यौन ही कथा बुन । हृदय में लिख यमरा ।

भारती परिषद सदन अधि। आर विद लेंस सी। भारें ठाँक रिजुटिंग
आदिन सदनक अधि। ●

सुभाषित १८५३

सुभद्रा-हरण

ओ कर सासुरसो वहु ! अपनैस ! ओसर बेर !

जोकर भविष्य सर्वत्र सुखदेता । विभक्तान् कथं, हंस अपस्त विभक्तं विनाशितं
 महि कर्हि शृणुषी । सप्त जोकरा सुखदेते कर्हि हंस । सुखदा नहि । जार न
 मार, सरसाते कर्मजारी श्वेत वनमण्डल करं खननीक, जे बोला सनकारा नदीने
 पंडु तिलकले — धाम — बोखता, दास सुखदेता पछर —

संभावक शक्ति के अन्तर्गत आ/वाक भाव विभुत्वका लक्ष्य । पांशवा एक
संभावक शक्ति । युवा हाथों के लिये का सुन्दरतम भाव गहि रक्षित अर्थ । अर्थ अर्थ
हृद का कोवार्थ । हृदयार्थ अर्थ हृदय ।

[illegible]

मुम्बई पांच बरखक जलि तखन एक दिन बाक-बाग हुन बाजार कन
 प्रलेक बागसँ मोर बाँड प्रनिम कएतः कयले प्रलेक हुन । बाजार को मेलेक
 प्रलेक बाग मेलेक संगम जनाक य मेलेक । हुन माक एक दिन । सोर बनक
 मुम्बई तगरि य मेलेक ।

[illegible]

ग. ब. पा. म. भा. (कालिका) श. क. उत्तरी उत्तर में वेनी हरकाली धुक
म. ब. म. भा. (कालिका) श. क. उत्तरी उत्तर में वेनी हरकाली धुक
म. ब. म. भा. (कालिका) श. क. उत्तरी उत्तर में वेनी हरकाली धुक
म. ब. म. भा. (कालिका) श. क. उत्तरी उत्तर में वेनी हरकाली धुक
म. ब. म. भा. (कालिका) श. क. उत्तरी उत्तर में वेनी हरकाली धुक

[illegible]

एक दिन जाँदू इधरक सबसो नवपिक बसहस्यो मरामिनारक साकिन
मनन के १२० मिनट नवपिका जासक भोगस एकटा नव खास छति
न. न. राजन स. स. पार्क के बहुरासबनी जवरा बागछक दिसर जवनी
न. स. सु. प्र. न.

[illegible][illegible]

समस्तसेवांक सादर चौकटिक (हृत्करं देवासीक) अला बिबली चौकरी गुप्त

ताम्र प्रसन्न हूँ तब ही मुझे
 अतः पहिले तो एक ही
 बिजली की छरी को ही कहते हैं। अतः ही कहते हैं कि
 कलागत
 कलागत
 कलागत

कोई भी

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

[illegible][illegible]

गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः ।
 गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः ।
 गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः ।

[illegible]

मुसदरा कम नसि : माडल काम कोकर यशोके देखियेक । कुन
कठमसो बाकोर मा मुटु । यमचम करेक मेमबर कारी रज ।

का मित्र विम काद सुभद्राक पदों में लगी बाधें जयमें । सोद नम
मनामन साकध के नि में । बाधें कहिह क हरी व ने पदों रमिक हन
बनका छोड़ ने सुभद्रा आगक पैर के पैरुने व क मर मर सुभद्रा ।
क्या हा हा ।

॥ नरक संघटि बेनेक । कोन काटे कोन रस्ते वषां नुन नईक

विगत एक दिन दोपहर विगत टुकनगर बॉम्ब मीटिंग केवट की के बागवट
बागवट मोर्चा के संगे धूमधमा टांकि बर्तन लवट = १०० टांकि ५ १०० ५०, ५
बागवट - बागवट बर्तनिक ।

"की संज्ञा वह्निमा अथर्क लो" १५

५३

可取之計也

*८८३ में 'स्वयं' अर्थ 'व्यक्ति' न मिले।

“क्या सब रस्ते में किछु दिन ?”

“आज तो हिम्मे” रहने सुम ।

न की ? अरबलाम् सगवा भिनीका बलि ।

३

[illegible]

५६८ ६८ है । हम अंगद-रथे रहने, धैर्य बोरें ।"

उ शृङ्गाय.

"ਸ਼ਾਂਤੀ, ਸੁਖ, ਸੁਖ"।

हय किन्तु चार दूक' चाहेन सन्निरीक नुवां सगरि पहल ने पाव छान
न के हयन सिक नान नु' हइय न । य' की सहेन मनगारन ह व नारने
टकटकी संगीने छिये ।

[illegible]

आ हय किछु कही सुनइयाक बनजा सिद्धिपति जामन—'सून गोद
मे नमिक मरुत न मुझे छोड़ो। मैं कहूँ है नाम हारा मे गज
है रुमा मे जाना मुने देव मे भक्त मन मेरा—'हे हे हे
बाब अदीके कामरा हय बाकि

है। यह दिन सुषमदेवी प्रेतादि भी डोकावित्तैक। आई होम नाटक करते छ
 ५५ ? बापू किर्कक महि हहां जपन घरतलाय। यम ?"

शुद्धता विद्वांसि ज्ञानिनि श्रीही लक्ष्मी मन्त्रे लक्षणकः श्री मन्त्रे शुद्धी
सर्वे देवताः । श्री ।

सुभाष-संरक्षण

69

नमः कर इति शिवाय— इति शिवाय न १००० अक्षरान् अथवा न १०००
या कस्योक्तं वा लोका इति शिवाय न १००० अक्षरान् अथवा न १०००
काले मयि न कर्तव्यम् किंवा न १००० अक्षरान् अथवा न १०००
मोक्ष ?

[illegible][illegible][illegible]

जो धूमि व पीठ काटि देत कति रह पर पात कहते । पयसाँस
काही पीठ पर कटौती डटका-डटका बेगु छेह जेन बुरक चह। होत मरुवा
रोटीक पयसी बसो नोचि जेन डोरक ।

२४ ।

सुभाष-चन्द्रब

हृदयः शुभं वैशिष्यं करोति कायजि । 'बादसतं व' व शोभि वैदु हृदय माहितक ।
बाह्यं कर्तुं-हृदयं वैशिष्यं ॥

इससे बाद किछु शत्रुताक साक्ष्य नहि भेल । दोसर दिन शुभसिरीक से
बांछद करनका निराश हरि बेलेंक ।

[illegible]

दुर्घटनीक पुरा करत खडखड सौ एखा कवका पुनः पसरवता—
 मर क' एकाबोस मर जा गे'नीक लुधन ।

हैं अथवा सुदूर नज़रों से उद्दिष्ट हैं। किमुन्मा सगाई द्वारा हिलकै
हुमसुन वगैरे मुज्जां एतरे । दादा बल्लभ बेप रहेक गुन-ताय पेश-देव
बेदा-वेदा रहेक ।

[illegible]

५५३ सुप्रसन्नः कः पठे आश्रयेत् । तस्मै नरः शरीरं धातुं नैव जयते ॥
किञ्चनम श्रेष्ठं कः शृणो नमः ॥ ५५४ नमः तस्मै मया हंशयेत् । किञ्चनम शिवदा
यं कः हयरा मयत्तकः ।

काव्यज्ञान वाणि बुद्धि का। कलुषमयक वर जलशय फलत राही। शीघ्र पठन
 व इत। देव का जलशय। वरजल अर्जन रहे। इत। शय निद्रि। अल मुमदरा
 वाहने के अर्ध छन। देखते वाहसि। 'वदलान वाहसि।

[illegible]

अथवा

【天狗】

पुष्पदन्त पृष्ठ १२ गान २ = पुष्पदन्त काव्य

“कदाचि” ज्ञान प्रविष्टं तं कदाचि कदाचि एवम् । “२ काव्य” इत्यत्र
केन ।” अं हं मावन्ति—“कदाचि कदाचि मिते हं मावन्ति” अं मावन्ति
कदाचि हं ?

‘हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति’ । अं मावन्ति
कदाचि हं ?

कदाचि कदाचि कदाचि ? अं मावन्ति पुष्पदन्त ।

पुष्पदन्त कदाचि मिते हं मावन्ति । अं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति
कदाचि कदाचि मिते हं मावन्ति पुष्पदन्त, मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति
कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति
कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति
कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति

२०]

पुष्पदन्त

गद्यविद्वन् ! तोहर डंक

आज कोन टाग करे ? कदाचि भीक बका देखार ।

कोन पाद तागल छत्र से नहि जाग । अं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।
अं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।
अं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।
अं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति
कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति
कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति
कदाचि मिते हं मावन्ति कदाचि मिते हं मावन्ति ।

अन्तरिम हं मावन्ति

२१]

बाबरनवाँ भद्रपूर दुर्गस्थ । धनहास जंगल बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।
 'हृदय' वगैरे अनेक नामों के नाम हैं । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।
 बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

न बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

एक बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ । बाबरनवाँ बाबरनवाँ ।

लीवो विन्ड बर-गुजरात राज्य का लु विद्यालय में प्रतिष्ठित है। वेन वी लीवो
 लकी गंधारत-पुनक बर-गुजरात राज्य का लु विद्यालय में प्रतिष्ठित है। वेन वी लीवो
 लकी गंधारत-पुनक बर-गुजरात राज्य का लु विद्यालय में प्रतिष्ठित है। वेन वी लीवो

१. बालक

[illegible]

“आ, हमारा लं कहर अति नहि रहल । कत, तो कउ बुझारि छ” भव
‘बहुला । १ भव भव जेकर भव तो नहि रहल । कत, तो कउ बुझारि छ” भव
हता दियोक ।”

1847] *Journal of the American Medical Association* 17

गृह्य मन्त्रेण वर्ति ।

प्रेमक तुरहरीषः नहि पावकः बन्धनस्य राशिः । हिमिरिदंरि पानि ।
रहि-रहिषः अवका । विदुलता । बन्धनस्य यत्नः दानुकः हृत्तिकारः यत्नः अहरे ।
बाह्ये बाधमः शोकः क्षान्तः, भाविकः कर्त्तरि । नहि अयं दृक् पश्यतः काटकः गीषः
दशकः दृक् विदुलः शरीरः संश्लिष्टः बन्धनान्तः ।

[illegible]

‘श्री तद्दि कुरु प्रोवा : श्री प्रोवा प्रोवा कुरु प्रोवा : श्री प्रोवा प्रोवा कुरु प्रोवा :’

481

मह विजयौ । अंगूर चंद

गर्भित भवति । कफर सञ्चारं सौं जे सुंवर सानुके घर बाहुत ह्यम पयस तीरिका
राशि केवक १५

मोना विहंगमसि धानि करस मेप नका, वरस' लेन बापुरा फाट' लेन
इति ।

[illegible]

‘सुकर पावे ई रे दो’ स्वयं कहि घरये रह’ई हिवकोत छै । तौरा को भर
पावे-र रहि प्रीक । छूट नाहू जावे सोना, कहि दे के तीरा बासुक पर नहि
न ह-० ५ अगरे न नह-०, चाराम मुग जनरा जेत न ह-० ६
गाइर कर बेच रहल श्री सोदी । कहि दे के बहुलक स्वयं तौरा सोनसँ रज ह-० ७
पुरान स्वयि श्री-दी छ देनकी । तौं काको जवने घँ ई मण कहि दे सोना पार
न ह-० ८ न ह-० ९ कलेः हयोः न न ह-० १० राखीक मोहू

“ई लो” कहि रहल हें मोर १ कोना बाबि छकल ई मम ली २ एक बेर
हयत नित ताकिन ई मय्य बाब लें ३ रह्य, मय्य किराफ बा शिले—

कोनो मन्त्राव मद्दि वाथहीन निरुत्तम मे दृष्टम हृदयम धिचक्षी सोमः सांगदे

[illegible][illegible]

* देख जनना काय एना नहि कर । बासक्याकिं लाग हँसिक विदा करे ।
 पुन ॥ १ ॥ निज मीतु ड ॥ कहुन ॥ नहि म ड ॥ न म ॥
 रेहि साकत ॥ पर ॥ ।

मह बिन्दवी : ज्ञानेश्वर संस्कृत

E 14

मिन्दुल भर्मा देह तो क्या निकल लेक ? मानक भीत छोड़कर हनुमन्त

और तो शरीर, केहन कान्नीक इकिनिमोय ई कुंभ । एहि टीक के एक ला

मैं भोग छोड़ आनान कर । हय जानती जं बंमल मोत यको छिओक—

कुंभ-कुंभ निरधु, बमलु भाक कोय

हरम छोरे

(भाक बाड़े जकर कहने) चिहनी

भोगमैं छाती कुंभ आरत कछि । मयल होवाक इहवाक भिजलता कर

हय काबि कहि देवनि मुष्ठाकको के के हुरश भुल नहि पार भावत

को बय चिहनी बाध कह । ●

...

उपरफांट

कामक द छेनीया या विधान पर दिनकरका मरें सोझ टिहरल गेलक

बन्दर देव काहने बाध नहि पैत । अरत माध बहि भायो गात ।

अन्दर नीकवे पुड़ि पैत । धरि पार बमबाध दुटा ख्या छलैक ।

पार बमबाध होकर रक्ता रेलवे भुज बाटे छलैक । धनिकरने पका सीधक कोर

[illegible][illegible][illegible]

बन्हा सांत्वनाद्वयैक स्थानस्य कर्त्तुं यत्नं वा नयनशक्तिः, शक्तिरिति
सर्वत्र सत्यम् ।

पञ्चर किन्तु विद्वत् नहि कं लम्बा । ओहि जनकादि सुखीये पाविये पञ्च
देव । ५ गति हू त ज्ञा पुन गाँ पू न मष्टि । केन दया भविष्य।
हेन । सेवन संभयः कथय उदा धर्मिक येनेन उ। नाम नाते हू दुर्गे ।

4.

उदरचूट

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में जो राजा को सलाह दी है, उसका पालन करना ही राज्य की शान्ति और समृद्धि का एकमात्र मार्ग है।

सबस सिङ्गल रोनेके । दिक् धरि ह्योः ५ किराफा मोमाबस पंछि पर
रुट' बर्नी धरती सिङ्गल-सिङ्गल बरबाराइ रनुज ।

[illegible]

परमिसे हुनवाक शिवाय इकबित कर' मरनेके मुक्तता रस्ता देखिके ।
 मन्त्रालयका जे जे जे हुनवाक मन्त्रालयका कामका मुहुरत रस्ता रस्ता मुक्तता रस्ता
 हुनवाक मन्त्रालयका जे जे जे हुनवाक मन्त्रालयका कामका मुहुरत रस्ता रस्ता मुक्तता रस्ता

गन्तव्ये श्वगतये अर्धे चनेक । श्वगतये ये सुहृदा पीपरे मुने पठन्ति सुसमुद्र
 दारु लब्धे । अत्रि नरि सुभाषण इ न ह्युत्तरा श्वरः । वसन्त न पन्था नगरे
 हनेक नरि अर्धे चनेक श्वरः । अत्र न ह्युत्तरा श्वरः । अत्र न ह्युत्तरा श्वरः ।
 पर नरि वसन्त नगरे अर्धे चनेक श्वरः । अत्र न ह्युत्तरा श्वरः । अत्र न ह्युत्तरा श्वरः ।
 चनेक नरि अर्धे चनेक श्वरः । अत्र न ह्युत्तरा श्वरः । अत्र न ह्युत्तरा श्वरः ।

[illegible]

श्रीसमस्तभारत के आदि देव सिद्धि करुणिक । कन्दर्प करुणिक महि छत ।
 मदी पूज बनन करुणिक ते आकर भववन सिद्धि करुणिक । कन्दर्प करुणिक महि छत ।
 श्रीसमस्तभारत के आदि देव सिद्धि करुणिक । कन्दर्प करुणिक महि छत ।
 मदी पूज बनन करुणिक ते आकर भववन सिद्धि करुणिक । कन्दर्प करुणिक महि छत ।

कर्मसुखी

[୪୭]

'माक के बिहू, जगत तिहाय परबने' शक के दिहू बन्दर ।
 ब्रह्मचरिण सभसभ जेन सभ ॥ १ ॥ 'माक' ॥ १ ॥ जगत में बन्दर
 सभसा भोकर छाने ॥ १ ॥ मेरेक हू ॥ १ ॥ छतर भोकर छाने सुभसभ दिह
 माय पकलन छति बरवतन छरन ॥ १ ॥ छतर भोकर छाने सुभसभ दिह
 जे छ ब्रह्मचरिण सभसभ जेन सभ ॥ १ ॥ 'माक' ॥ १ ॥ जगत में बन्दर
 ब्रह्मचरिण सभसभ जेन सभ ॥ १ ॥ 'माक' ॥ १ ॥ जगत में बन्दर

पश्चिमार्ध आकाश गट नुई त्वेदिकक धिर भोवो हव? अस्थितो ॐय मनि
रहल छन आरि त अ = ५५ त्वेद = ५५५
महेश्वरीना महामै धिर भोविक कर्कश ५५ कलक हीही पमहि भेज होइक ।

[illegible][illegible][illegible]

मन्दाकिनी नदी का जल अनेक शक्ति है। नाना रंग रहने के। शरीर
नदी रहने के, बुद्धि हीन के जो बहुत बड़ा है यह शक्ति है। ५१ नदी ११

राष्ट्र, वैश्व सद्भावना, वैश्व शांति, मध्य पूर्व संकट, वैश्व-वैयक्तिक जीवन का ऐतिक स्थिति
संस्कृत-वैयक्तिक जीवन एकत्र, सुकल संस्कृत-वैयक्तिक जीवन ।

[illegible]

— 'बन्दर फुल सांदि का ।' भोरे बागिच पल्लत नानी कहैक

— 'मन्दिर कम बोझ पार हो जाए मगध आगि दे।' किलि कूट
रुका भाव कहियल।

“जम्हाई देने सठार कत धो ।” छोटका माया कहुबिने ।

‘ब-इ-ए, कल घमसानक धुआँ क कि हाकल-लैहिआएल आइएबे’ भाषा
कहुँ देइथिन ।

म "व माय करी उत्तर, कौक शैलमा। धातों की श्रुति के विचार'।
 मरीक—'रक्तवर्ण' सुख-विषय गृहि समेत कृक। हृदयशरीर कृद्विषय
 नै पद्विध धानि पद्वि नै, दलन मर मर मरवक होन । सुदा हृदय के सुमेर
 अ' ५

मानवी बाह्य पर्याप्त सामर्थ्य प्राप्त होऊ शकते अथवा नव्हे याबद्दल विचार करणे गरजेचे आहे.

[illegible]

[illegible]

हृदयं ज्ञापयन्, कथं न भवेत्— ११ वन्द्यं निश्चयं कथयन् ।

“सर्वसौदा च” श्लोके “समस्त” (१) प्रयोग करता है। सत्य सुखद चन्द्रदेव (२) प्रयोग करते हैं।
संस्कृत सत्य का योग्य कलमविवरण।

"आप न बिवाह कराव" पणत नोहरा' धापी हेंसो कवल्पिन ।

“हमारा सबसे बड़ा मित्र है गुरुदेव । वह एक पुण्यस्थान है जो हमें सबकुछ सिखाता है ।”

चन्दर इति नम, छोट न केन । एकते नम मानस्य का रमह करण कृतो
नाम चन्दर कर्तव्यो गृहि सुनने छय । स्नाहक मुखस चन्दर कल्य-चरिते छन न
सुखस-गुणस, काका-विरकये निवृत्त ।

[illegible]

गान्धर्व विद्वत्सु ।

विना दुःखम् ।

“अन्तर मे वांछि गरम ईसर एवम् तः वा।” नहका वाक्का वाक्का
मोकाकां मे वांछि एवम् ।

चन्द्रकान्त सेनापति बर्निस जी, धनकटकी संक ।" संस्कृत भाषा इत्यस्मिन्
कृतं कथयति ।

‘चन्दर-इने पूरा के दिवाहूँ ।’ मनसाचरने लामो भावि उठयोह ।

“अः इह कते गन्धार्कं भूया मरियोक ।” अथ नृ हरकण डेटोके कोराके
दंते मोडी कछापित ।

५७]

॥४५॥

अन्तरके' मलसक, जेना' एहि अंगना देखी कत । धौ' त' मूँठ व ७१ रे
आपन चीन्हा-आनक माया' बाअके अर-बाहिर बमस्वाति रोई रहल कत ।

[illegible]

कादरक मुद्रित कोलो कटाई साथ आदिक रहि देखे । अपनाके संयस
 एतेक लवक नअवा पुनस एतौ कहनके "कहुत दिन देखता थ" गन खल, से
 मोल कोना केय मे लवके देखि आयो । सबस भेट थो मल, काज काजा भेटय, "
 वा एतपनपुनक तलके प्रथम क आक्रमसे जाहुर बाधि नेक

वसिष्ठः ब्रह्मन्मुनिर्गुरुः तत्रैव प्रपन्नोऽयं ।
निधानपुरे नृणां वासस्थाने । पञ्चरत्नैश्च यथा मेतुते ॥

इयान्तर्गु अतर्हि एककारणा सम्बन्धे जीवात्मा-जीवो गीतिका ५१.११ पञ्चदशक ।

दूर पार सप्तऋतुहारे मे दूरक जेहि एकटा गदं चुनौ - गण ७३६ ।
अ दूरक जेहि सप्त ऋतु अ पदार्थ मे चयन भवक विनोत भ' गुनक

अन्तराज्यीय खनिज : ७

११.५८१॥ ५५॥

अथ रक्तं

42

काज ! काज ! काज ! जेना सोई दुवटा सेभोन्टो कसिहोन्ट मति
 सावति...
 येन...
 कसिहोन्ट...
 काज ! काज ! काज ! जेना सोई दुवटा सेभोन्टो कसिहोन्ट मति
 सावति...
 येन...
 कसिहोन्ट...

अजुका केह एउटा कसो छोक ! निजक - सो पुष्प छ । भुवा कसो
 अजुका केह एउटा कसो छोक ! निजक - सो पुष्प छ । भुवा कसो

आम एकटा छत बाट मुनि से...
 आम एकटा छत बाट मुनि से...

अजुका केह एउटा कसो छोक ! निजक - सो पुष्प छ । भुवा कसो
 अजुका केह एउटा कसो छोक ! निजक - सो पुष्प छ । भुवा कसो
 अजुका केह एउटा कसो छोक ! निजक - सो पुष्प छ । भुवा कसो
 अजुका केह एउटा कसो छोक ! निजक - सो पुष्प छ । भुवा कसो

आ जतीक महार कादमर सिजिहाकत बाहू कसो...
 आ जतीक महार कादमर सिजिहाकत बाहू कसो...
 आ जतीक महार कादमर सिजिहाकत बाहू कसो...

तोरु हुनो कसो छोक ! सुनोनाक बाट...
 तोरु हुनो कसो छोक ! सुनोनाक बाट...
 तोरु हुनो कसो छोक ! सुनोनाक बाट...

हम जनेछ छो मे हामर एहि कादमर तोरु बिज्जल नहि हुनो...
 हम जनेछ छो मे हामर एहि कादमर तोरु बिज्जल नहि हुनो...

माउं होन अति...
 माउं होन अति...
 माउं होन अति...
 माउं होन अति...
 माउं होन अति...
 माउं होन अति...
 माउं होन अति...
 माउं होन अति...
 माउं होन अति...
 माउं होन अति...

सो फेर हंसले के भाजि रह्यो कसि...
 सो फेर हंसले के भाजि रह्यो कसि...
 सो फेर हंसले के भाजि रह्यो कसि...

सो भावक कुर भजिह्यो कसि...
 सो भावक कुर भजिह्यो कसि...
 सो भावक कुर भजिह्यो कसि...
 सो भावक कुर भजिह्यो कसि...
 सो भावक कुर भजिह्यो कसि...

अ...
 अ...
 अ...
 अ...
 अ...

1. निम्नलिखित में से एक (1) को चुनिए और इसका विवरण दीजिए।
 (क) निम्नलिखित में से एक (1) को चुनिए और इसका विवरण दीजिए।
 (ख) निम्नलिखित में से एक (1) को चुनिए और इसका विवरण दीजिए।

१. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$
 २. $\frac{1}{x^3} = x^{-3}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-3} = -3x^{-4} = -\frac{3}{x^4}$
 ३. $\frac{1}{x^4} = x^{-4}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-4} = -4x^{-5} = -\frac{4}{x^5}$
 ४. $\frac{1}{x^5} = x^{-5}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-5} = -5x^{-6} = -\frac{5}{x^6}$
 ५. $\frac{1}{x^6} = x^{-6}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-6} = -6x^{-7} = -\frac{6}{x^7}$
 ६. $\frac{1}{x^7} = x^{-7}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-7} = -7x^{-8} = -\frac{7}{x^8}$
 ७. $\frac{1}{x^8} = x^{-8}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-8} = -8x^{-9} = -\frac{8}{x^9}$
 ८. $\frac{1}{x^9} = x^{-9}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-9} = -9x^{-10} = -\frac{9}{x^{10}}$
 ९. $\frac{1}{x^{10}} = x^{-10}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-10} = -10x^{-11} = -\frac{10}{x^{11}}$
 १०. $\frac{1}{x^{11}} = x^{-11}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-11} = -11x^{-12} = -\frac{11}{x^{12}}$
 ११. $\frac{1}{x^{12}} = x^{-12}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-12} = -12x^{-13} = -\frac{12}{x^{13}}$
 १२. $\frac{1}{x^{13}} = x^{-13}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-13} = -13x^{-14} = -\frac{13}{x^{14}}$
 १३. $\frac{1}{x^{14}} = x^{-14}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-14} = -14x^{-15} = -\frac{14}{x^{15}}$
 १४. $\frac{1}{x^{15}} = x^{-15}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-15} = -15x^{-16} = -\frac{15}{x^{16}}$
 १५. $\frac{1}{x^{16}} = x^{-16}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-16} = -16x^{-17} = -\frac{16}{x^{17}}$
 १६. $\frac{1}{x^{17}} = x^{-17}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-17} = -17x^{-18} = -\frac{17}{x^{18}}$
 १७. $\frac{1}{x^{18}} = x^{-18}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-18} = -18x^{-19} = -\frac{18}{x^{19}}$
 १८. $\frac{1}{x^{19}} = x^{-19}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-19} = -19x^{-20} = -\frac{19}{x^{20}}$
 १९. $\frac{1}{x^{20}} = x^{-20}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-20} = -20x^{-21} = -\frac{20}{x^{21}}$
 २०. $\frac{1}{x^{21}} = x^{-21}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-21} = -21x^{-22} = -\frac{21}{x^{22}}$
 २१. $\frac{1}{x^{22}} = x^{-22}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-22} = -22x^{-23} = -\frac{22}{x^{23}}$
 २२. $\frac{1}{x^{23}} = x^{-23}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-23} = -23x^{-24} = -\frac{23}{x^{24}}$
 २३. $\frac{1}{x^{24}} = x^{-24}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-24} = -24x^{-25} = -\frac{24}{x^{25}}$
 २४. $\frac{1}{x^{25}} = x^{-25}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-25} = -25x^{-26} = -\frac{25}{x^{26}}$
 २५. $\frac{1}{x^{26}} = x^{-26}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-26} = -26x^{-27} = -\frac{26}{x^{27}}$
 २६. $\frac{1}{x^{27}} = x^{-27}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-27} = -27x^{-28} = -\frac{27}{x^{28}}$
 २७. $\frac{1}{x^{28}} = x^{-28}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-28} = -28x^{-29} = -\frac{28}{x^{29}}$
 २८. $\frac{1}{x^{29}} = x^{-29}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-29} = -29x^{-30} = -\frac{29}{x^{30}}$
 २९. $\frac{1}{x^{30}} = x^{-30}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-30} = -30x^{-31} = -\frac{30}{x^{31}}$
 ३०. $\frac{1}{x^{31}} = x^{-31}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-31} = -31x^{-32} = -\frac{31}{x^{32}}$
 ३१. $\frac{1}{x^{32}} = x^{-32}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-32} = -32x^{-33} = -\frac{32}{x^{33}}$
 ३२. $\frac{1}{x^{33}} = x^{-33}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-33} = -33x^{-34} = -\frac{33}{x^{34}}$
 ३३. $\frac{1}{x^{34}} = x^{-34}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-34} = -34x^{-35} = -\frac{34}{x^{35}}$
 ३४. $\frac{1}{x^{35}} = x^{-35}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-35} = -35x^{-36} = -\frac{35}{x^{36}}$
 ३५. $\frac{1}{x^{36}} = x^{-36}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-36} = -36x^{-37} = -\frac{36}{x^{37}}$
 ३६. $\frac{1}{x^{37}} = x^{-37}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-37} = -37x^{-38} = -\frac{37}{x^{38}}$
 ३७. $\frac{1}{x^{38}} = x^{-38}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-38} = -38x^{-39} = -\frac{38}{x^{39}}$
 ३८. $\frac{1}{x^{39}} = x^{-39}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-39} = -39x^{-40} = -\frac{39}{x^{40}}$
 ३९. $\frac{1}{x^{40}} = x^{-40}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-40} = -40x^{-41} = -\frac{40}{x^{41}}$
 ४०. $\frac{1}{x^{41}} = x^{-41}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-41} = -41x^{-42} = -\frac{41}{x^{42}}$
 ४१. $\frac{1}{x^{42}} = x^{-42}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-42} = -42x^{-43} = -\frac{42}{x^{43}}$
 ४२. $\frac{1}{x^{43}} = x^{-43}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-43} = -43x^{-44} = -\frac{43}{x^{44}}$
 ४३. $\frac{1}{x^{44}} = x^{-44}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-44} = -44x^{-45} = -\frac{44}{x^{45}}$
 ४४. $\frac{1}{x^{45}} = x^{-45}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-45} = -45x^{-46} = -\frac{45}{x^{46}}$
 ४५. $\frac{1}{x^{46}} = x^{-46}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-46} = -46x^{-47} = -\frac{46}{x^{47}}$
 ४६. $\frac{1}{x^{47}} = x^{-47}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-47} = -47x^{-48} = -\frac{47}{x^{48}}$
 ४७. $\frac{1}{x^{48}} = x^{-48}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-48} = -48x^{-49} = -\frac{48}{x^{49}}$
 ४८. $\frac{1}{x^{49}} = x^{-49}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-49} = -49x^{-50} = -\frac{49}{x^{50}}$
 ४९. $\frac{1}{x^{50}} = x^{-50}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-50} = -50x^{-51} = -\frac{50}{x^{51}}$
 ५०. $\frac{1}{x^{51}} = x^{-51}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-51} = -51x^{-52} = -\frac{51}{x^{52}}$
 ५१. $\frac{1}{x^{52}} = x^{-52}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-52} = -52x^{-53} = -\frac{52}{x^{53}}$
 ५२. $\frac{1}{x^{53}} = x^{-53}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-53} = -53x^{-54} = -\frac{53}{x^{54}}$
 ५३. $\frac{1}{x^{54}} = x^{-54}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-54} = -54x^{-55} = -\frac{54}{x^{55}}$
 ५४. $\frac{1}{x^{55}} = x^{-55}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-55} = -55x^{-56} = -\frac{55}{x^{56}}$
 ५५. $\frac{1}{x^{56}} = x^{-56}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-56} = -56x^{-57} = -\frac{56}{x^{57}}$
 ५६. $\frac{1}{x^{57}} = x^{-57}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-57} = -57x^{-58} = -\frac{57}{x^{58}}$
 ५७. $\frac{1}{x^{58}} = x^{-58}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-58} = -58x^{-59} = -\frac{58}{x^{59}}$
 ५८. $\frac{1}{x^{59}} = x^{-59}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-59} = -59x^{-60} = -\frac{59}{x^{60}}$
 ५९. $\frac{1}{x^{60}} = x^{-60}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-60} = -6$

तथा न कश्चन च न अयम् । तस्मात् एकदा सादृशं तु
यस्य स्यात् । इति चेन्न न तत्र केनैव प्रकृतं स्वरूपं स्वरूपं । इति चेन्न
नमः । इत्येतत् सोपानं ततोऽन्तरकोषे । "यो हिरण्यं यज्जनते, सो हिरण्यं विन्दते" ।
अयम् । इति चेन्न न तत्र केनैव प्रकृतं स्वरूपं स्वरूपं । इति चेन्न
एवम् । इति चेन्न न तत्र केनैव प्रकृतं स्वरूपं स्वरूपं । इति चेन्न
यस्य न तत्र केनैव प्रकृतं स्वरूपं स्वरूपं । इति चेन्न
इति चेन्न न तत्र केनैव प्रकृतं स्वरूपं स्वरूपं । इति चेन्न

हम अंतर्गत का प्रयोग करने के लिए कि यह प्रयोग करने के लिए हमें अधिक जानकारी चाहिए।

१. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$
 २. $\frac{1}{x^3} = x^{-3}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-3} = -3x^{-4} = -\frac{3}{x^4}$
 ३. $\frac{1}{x^4} = x^{-4}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-4} = -4x^{-5} = -\frac{4}{x^5}$
 ४. $\frac{1}{x^5} = x^{-5}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-5} = -5x^{-6} = -\frac{5}{x^6}$
 ५. $\frac{1}{x^6} = x^{-6}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-6} = -6x^{-7} = -\frac{6}{x^7}$
 ६. $\frac{1}{x^7} = x^{-7}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-7} = -7x^{-8} = -\frac{7}{x^8}$
 ७. $\frac{1}{x^8} = x^{-8}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-8} = -8x^{-9} = -\frac{8}{x^9}$
 ८. $\frac{1}{x^9} = x^{-9}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-9} = -9x^{-10} = -\frac{9}{x^{10}}$
 ९. $\frac{1}{x^{10}} = x^{-10}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-10} = -10x^{-11} = -\frac{10}{x^{11}}$
 १०. $\frac{1}{x^{11}} = x^{-11}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-11} = -11x^{-12} = -\frac{11}{x^{12}}$
 ११. $\frac{1}{x^{12}} = x^{-12}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-12} = -12x^{-13} = -\frac{12}{x^{13}}$
 १२. $\frac{1}{x^{13}} = x^{-13}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-13} = -13x^{-14} = -\frac{13}{x^{14}}$
 १३. $\frac{1}{x^{14}} = x^{-14}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-14} = -14x^{-15} = -\frac{14}{x^{15}}$
 १४. $\frac{1}{x^{15}} = x^{-15}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-15} = -15x^{-16} = -\frac{15}{x^{16}}$
 १५. $\frac{1}{x^{16}} = x^{-16}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-16} = -16x^{-17} = -\frac{16}{x^{17}}$
 १६. $\frac{1}{x^{17}} = x^{-17}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-17} = -17x^{-18} = -\frac{17}{x^{18}}$
 १७. $\frac{1}{x^{18}} = x^{-18}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-18} = -18x^{-19} = -\frac{18}{x^{19}}$
 १८. $\frac{1}{x^{19}} = x^{-19}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-19} = -19x^{-20} = -\frac{19}{x^{20}}$
 १९. $\frac{1}{x^{20}} = x^{-20}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-20} = -20x^{-21} = -\frac{20}{x^{21}}$
 २०. $\frac{1}{x^{21}} = x^{-21}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-21} = -21x^{-22} = -\frac{21}{x^{22}}$
 २१. $\frac{1}{x^{22}} = x^{-22}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-22} = -22x^{-23} = -\frac{22}{x^{23}}$
 २२. $\frac{1}{x^{23}} = x^{-23}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-23} = -23x^{-24} = -\frac{23}{x^{24}}$
 २३. $\frac{1}{x^{24}} = x^{-24}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-24} = -24x^{-25} = -\frac{24}{x^{25}}$
 २४. $\frac{1}{x^{25}} = x^{-25}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-25} = -25x^{-26} = -\frac{25}{x^{26}}$
 २५. $\frac{1}{x^{26}} = x^{-26}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-26} = -26x^{-27} = -\frac{26}{x^{27}}$
 २६. $\frac{1}{x^{27}} = x^{-27}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-27} = -27x^{-28} = -\frac{27}{x^{28}}$
 २७. $\frac{1}{x^{28}} = x^{-28}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-28} = -28x^{-29} = -\frac{28}{x^{29}}$
 २८. $\frac{1}{x^{29}} = x^{-29}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-29} = -29x^{-30} = -\frac{29}{x^{30}}$
 २९. $\frac{1}{x^{30}} = x^{-30}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-30} = -30x^{-31} = -\frac{30}{x^{31}}$
 ३०. $\frac{1}{x^{31}} = x^{-31}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-31} = -31x^{-32} = -\frac{31}{x^{32}}$
 ३१. $\frac{1}{x^{32}} = x^{-32}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-32} = -32x^{-33} = -\frac{32}{x^{33}}$
 ३२. $\frac{1}{x^{33}} = x^{-33}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-33} = -33x^{-34} = -\frac{33}{x^{34}}$
 ३३. $\frac{1}{x^{34}} = x^{-34}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-34} = -34x^{-35} = -\frac{34}{x^{35}}$
 ३४. $\frac{1}{x^{35}} = x^{-35}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-35} = -35x^{-36} = -\frac{35}{x^{36}}$
 ३५. $\frac{1}{x^{36}} = x^{-36}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-36} = -36x^{-37} = -\frac{36}{x^{37}}$
 ३६. $\frac{1}{x^{37}} = x^{-37}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-37} = -37x^{-38} = -\frac{37}{x^{38}}$
 ३७. $\frac{1}{x^{38}} = x^{-38}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-38} = -38x^{-39} = -\frac{38}{x^{39}}$
 ३८. $\frac{1}{x^{39}} = x^{-39}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-39} = -39x^{-40} = -\frac{39}{x^{40}}$
 ३९. $\frac{1}{x^{40}} = x^{-40}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-40} = -40x^{-41} = -\frac{40}{x^{41}}$
 ४०. $\frac{1}{x^{41}} = x^{-41}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-41} = -41x^{-42} = -\frac{41}{x^{42}}$
 ४१. $\frac{1}{x^{42}} = x^{-42}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-42} = -42x^{-43} = -\frac{42}{x^{43}}$
 ४२. $\frac{1}{x^{43}} = x^{-43}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-43} = -43x^{-44} = -\frac{43}{x^{44}}$
 ४३. $\frac{1}{x^{44}} = x^{-44}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-44} = -44x^{-45} = -\frac{44}{x^{45}}$
 ४४. $\frac{1}{x^{45}} = x^{-45}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-45} = -45x^{-46} = -\frac{45}{x^{46}}$
 ४५. $\frac{1}{x^{46}} = x^{-46}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-46} = -46x^{-47} = -\frac{46}{x^{47}}$
 ४६. $\frac{1}{x^{47}} = x^{-47}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-47} = -47x^{-48} = -\frac{47}{x^{48}}$
 ४७. $\frac{1}{x^{48}} = x^{-48}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-48} = -48x^{-49} = -\frac{48}{x^{49}}$
 ४८. $\frac{1}{x^{49}} = x^{-49}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-49} = -49x^{-50} = -\frac{49}{x^{50}}$
 ४९. $\frac{1}{x^{50}} = x^{-50}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-50} = -50x^{-51} = -\frac{50}{x^{51}}$
 ५०. $\frac{1}{x^{51}} = x^{-51}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-51} = -51x^{-52} = -\frac{51}{x^{52}}$
 ५१. $\frac{1}{x^{52}} = x^{-52}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-52} = -52x^{-53} = -\frac{52}{x^{53}}$
 ५२. $\frac{1}{x^{53}} = x^{-53}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-53} = -53x^{-54} = -\frac{53}{x^{54}}$
 ५३. $\frac{1}{x^{54}} = x^{-54}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-54} = -54x^{-55} = -\frac{54}{x^{55}}$
 ५४. $\frac{1}{x^{55}} = x^{-55}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-55} = -55x^{-56} = -\frac{55}{x^{56}}$
 ५५. $\frac{1}{x^{56}} = x^{-56}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-56} = -56x^{-57} = -\frac{56}{x^{57}}$
 ५६. $\frac{1}{x^{57}} = x^{-57}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-57} = -57x^{-58} = -\frac{57}{x^{58}}$
 ५७. $\frac{1}{x^{58}} = x^{-58}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-58} = -58x^{-59} = -\frac{58}{x^{59}}$
 ५८. $\frac{1}{x^{59}} = x^{-59}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-59} = -59x^{-60} = -\frac{59}{x^{60}}$
 ५९. $\frac{1}{x^{60}} = x^{-60}$ $\therefore \frac{d}{dx} x^{-60} = -6$

441

निर्दलित

[illegible]

बहो कोय एक दिन खुदो देतावर लो कहि बैसले - "बख हूबर
देरा बन ॥"

इस दूर बरबरा सेमई : खन काठको संकटित भावे मृदुटी पाणि मुका
मेन्तु : बागवत १२ वर इच्छा उत्तम पुत्र कहने छै तिन
बहु नीच लज्ज छै धिजा ह्यध, कुरंग तंहर हात्तो पणका । मैमली नीक
बाकि देव छन्द नः ।

इस प्रसङ्ग-केंद्रित इस बड़ी सन्धिपत्र के कथन बाह्य के मर्मांश
के । अथवा यह सन्धिपत्र का उत्पन्न भी इसके भित्तों के । छोटी रंग
के मर्मांश के उक्त के मर्मांश के । अथवा यह सन्धिपत्र का उत्पन्न भी इसके भित्तों के ।

हम तोहर धर केनिदीक । एकदम बहका श्रुतिमे पैर धन पीरा मकान
 मर्याद राखे छल । अहम नौ लखेन छुके छैन बहका मे मर्याद पक्षल होइ—उज्ज्वल
 देन नौ लखे छल । जेना नौ लखेना नहि नै छैन नैल छैन बहका कीस करी
 हाम छहिन केन नैल । जेना नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल
 बहरे मर्यादमे मर्याद क करी । नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल
 नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल
 नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल नैल

॥५॥ दण्डवत् प्रणम्य नमो भगवते वासुदेवाय ।
इति श्री कृष्णार्जुनसंवादे शूराध्याये अष्टमोऽध्यायः ॥

[illegible]

सांभर बेरा में बहुराज्य स्वतः हम ने जाली सांभर यशदा दोस्त दानि बेन

विष्टा नह

[illegible][illegible][illegible][illegible]

15

निर्देश

६. निम्नलिखित सूचना के अनुसार कार्य करने के लिये समिति गठित करने के लिये सूचना दी जाती है।
समिति का नाम : []
समिति के अध्यक्ष : []
समिति के सदस्य : []

कृष्ण बोलता है : आदमी ने कहा : तुम सब बोलते हो कि मैंने बहुत से
 बच्चे को पढ़ाया है, लेकिन तुम सब भी पढ़ाओ, मैंने पढ़ाया है, मैंने पढ़ाया है,
 "मनुष्य के लिये" का अर्थ है कि वह बच्चा भी पढ़े।

[illegible]

होसि रहस्य तबो कि त हर माय बन आवि कुतफुत्त का बाबकि खबीह् एवद
आलम होतो बाका ॥

[illegible][illegible]

इ-वाणि रिय होरा ओरु' वावर्ष कवळो कर्नेत रहस्यु' । बुदा मानेस के
 कर्ति ? वकलि क' ल' जलने ओर वाव सप आनिश कयसे' "महेश्वरा कसल
 ओक वां ?"

मात्र पुस्तकानि "मैत्रो वाचा । कामेऽक्षर, श्रीगेर राम ।"

ਸਿਰਫ਼ ਬਣ

此图

“हि मां, कयल किहू ? सोबल्लूँ : एतल कयना के कहूँ सोबल्लूँ
बनानी ही त भ स तेँ कहूँ कयल किहू ।”

'कुनै' यी । सार हयस आकृतिक प्रकार कर कः इति । वदयनः
 कः न । गः अ ।
 अ ग न क । न ह ।
 । न । द ।

उस घर की दुआ काजें जादू फैलाने लगी ।

[illegible]

मौलाना: हाँ हाँ, मेरे तब मौलाना की कबल नबो

"नै शीरी जहाँनी कोल हरे नै हरे हुयका सल बँसि गेल ।"
श्री जगन्नाथ भक्त

महिलो की ओर मुक्ति का उल्लेख नहीं मिल सकता है। इसका मतलब यह है कि महिलाओं को मुक्ति का अर्थ नहीं था।
 ४. महिलाओं के लिए कोई भी योजना नहीं थी।
 ५. महिलाओं के लिए कोई भी योजना नहीं थी।
 ६. महिलाओं के लिए कोई भी योजना नहीं थी।
 ७. महिलाओं के लिए कोई भी योजना नहीं थी।
 ८. महिलाओं के लिए कोई भी योजना नहीं थी।
 ९. महिलाओं के लिए कोई भी योजना नहीं थी।
 १०. महिलाओं के लिए कोई भी योजना नहीं थी।

महिलाओं को एक मुठ्ठी में हार हार कर लेना । उनके साथ ही 'कर्म' का भी नाम लेना ।
 'कर्म' का नाम लेना ही है जो 'कर्म' का नाम लेना । 'कर्म' का नाम लेना ही है जो 'कर्म' का नाम लेना ।
 'कर्म' का नाम लेना ही है जो 'कर्म' का नाम लेना । 'कर्म' का नाम लेना ही है जो 'कर्म' का नाम लेना ।
 'कर्म' का नाम लेना ही है जो 'कर्म' का नाम लेना । 'कर्म' का नाम लेना ही है जो 'कर्म' का नाम लेना ।

दो० नारायण सांग पुरैत कुसवी *कलान्तर कायले* ११५

“कह पाविये रहत छी ।”

‘‘तौ’ बन्धुभिः ज्ञाते । हास्यं विचित्रं कथ्यते ।’ ‘आ’ सुपरा संयं यत् ।

मोटा श्वेत अण्डाकार सेब रहते—कोई वाहनें। एकही तैयार मोहर काफी काम बन पाए। हृषिक एकदम सख्त। मैं देहकाम—दो पात्र प्रति—= होनि। शैविक मोहर कारी कारि, एकदम सख्त-समस्त।

[illegible]

"श्री" मङ्गल इत्यवधिक + का, अत्र ।

[illegible]

श्रुतिविक परोक्ष मन्वीक आदि रीति रह्य । कुन योरी बहि-भरि दादि बरि
र नैय री बहय । न न पन्थ । एत छन हयन पावी कत । यगउठ दि
म न २ । हू । न पात । हू । दिन नरत री हूपा । लक । नैत ।
नैत न । री बहय । हूपा । कतोररनी बहय पन्थमानी बरि हूपा । हूपा री
कतोररनी बरि

[illegible]

हृदय में कलिले लड़ी या लीं किछु भी जडा कहि रखले । गुणदा कसक

५४ शुभ नक्षत्र : कोकन किनारे लबरी-लबरी रसिकवचन किं ? ॥ १॥
 नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र :
 ५५ श्री कान्तिपोक किडु नक्षत्र किं ? ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ १॥
 ५६ नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र :
 ५७ नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र :
 ५८ नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र :
 ५९ नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र :
 ६० नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र : नक्षत्र :

॥१॥ एक श्रौतार्थ विष्णु वेदक कर्ता समर्थक । 'रुनि वेद श्रौतार्थ प्रसारक कर्ता
 ॥२॥ यः सत्त्वार्थः सत्त्वार्थः सत्त्वार्थः सत्त्वार्थः सत्त्वार्थः सत्त्वार्थः सत्त्वार्थः सत्त्वार्थः
 ॥३॥ २००० मीलन हवा प्रायः बहिये रहन समर्थ । अति क विषय श्रद्धा क
 ॥४॥ संतर्प ।

[illegible]

पक्षा निर्जोष सल्लि आकर जोर दिजोव छै, जो आगेर नोइएर जति
 यल्लि ! आ बान्ता योनिक् कत एव बिकारी अति मयैल रह्य ! ओकरो देखिक् मुसको
 छाम होइत छै के जो समय उप जुट्य अछि, फराक जोकर कोनो अजिन्त्य नोइ
 छै । एकसरे जेहटा समेक छल के मोहो पंखा उकां पैथ पर जोड़न समय तब जति
 जेहटा समेक छल के मोहो पंखा उकां पैथ पर जोड़न समय तब जति
 जेहटा समेक छल के मोहो पंखा उकां पैथ पर जोड़न समय तब जति

[illegible]

٢٤

बंगाल

[illegible][illegible]

डा. कल्याणजी का. शिंदे, जे. ए. ए. कॉलेज, मुंबई
 डा. कल्याणजी का. शिंदे, जे. ए. ए. कॉलेज, मुंबई
 डा. कल्याणजी का. शिंदे, जे. ए. ए. कॉलेज, मुंबई
 डा. कल्याणजी का. शिंदे, जे. ए. ए. कॉलेज, मुंबई

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

443

E4

[illegible]

मायायम बनका से ओकरा कहाँ आपत्ति समेक । बापके पैरुट धूमिसे श्वेत
 छनि, पीह नहि छात्रनह । दुनकर अन्धधन्धला समझेर मरदा रहै छनि । मनीषा-
 धरि जोक धन दस, दस आ । परिधक भिलास कर रहै अन्धाने अन्ति । धरि जो
 बाह सन्तानक हारक मुक्त-मुक्तिधन ध्यान कोनरे भूख सौं । हर अन्ध-धन
 दासा बेर-बुद्धि धारि रहै छनि । एकरो धन आचार ई अन्धकार मरि रहै जे
 नृतकी समर्थ किछु ज्ञान राख्य ? कस सं कस अपनत्व आ स्नेहक जोर तें रहै ।
 मुदा बोलाता लभत सैक बेला अन्धक समझक नदी ओकर धरम पर दिवस छै ।
 बां देख' सं अस्मयं न' जायत, तै बाध समझयो टटि कयतक ।

बाह्य विद्यापीठों में सुशोभी छात्राओं के अभाव में। राम स्वयं ही बाह्य पंच
मंगल मुक्तक प्रत्यक्ष देखकर बहुत बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया कि
‘आज सबारे छवि ने जहाँ’)

राम ईश्वर पर राज्याय चढ़ी दिव्य लक्ष्मण—मन्त्र कही २ जो शक्ति
येन । दस कर्म जायितक लेन विद्या हामक ।

गुनीला पुढर्किणी सडतोक—रवि दिन कोठे थाविण कडवाक बाळ ?

११५ अक्षरसंज्ञा के लक्षण- येन । मूर्तत्वात् कार्त्तव्यं विधाती उच्यते । नच संज्ञा ।

[illegible]

44

संस्कृत-भाषा

[illegible]

राज ठाठ के ठाठ में शनैः। सुदृष्टि पर टाकल कभीय पहिरिय सोमलक मे
 जहू म्बाबंरुष बाग्यापन्नस दुग पत्त । भेदानमे मोवायत, चिसुंअय धूमल, मुहा

५४. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ का अवकलन करने पर $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$ ।

सोने-खोरे कहाँ बिदा भैलहुँ ?

“वेदों पर ब्रह्म के अनेक नाम हैं। वेदों में ब्रह्म के अनेक नाम हैं।” राम

‘आमान चें बहिले ह्मला मानि जेने म्ही ! आद तें एक तारोण छेक ।’

‘हो, हो गले पड़ने । जाओ, अलग दिख । तुरकारो हाट हो न’ अर्धवर्ष की ।

—कृष्णारोमार्तं चोरे अर्थनि छति । सद्यः श्रीपः कौलि जेल छी ।

कवेककलस शसु नूकषर ठरु शसु ! कवेक वसुनर नरु कुरनर ! कुर
नरु कुर वरुनर कुर न' कुर ।

"कहीं बमलठे ?" सुनिया होकानई । "—अस, बने घुनि-फिरि
बने सो ।"

‘अहिंसे जयनाथे जयन वेदरा रंजि विष’ । मूर्ति म प्रसन्नहुं का बाहर
 बिलर म वेच्छे । ॥१॥ सोना काटनी घुमेज अहि ५

गवः शयनं कृतम्—हं हं च भोक्तुं नै आशयं नहि मितम्, इमं ज्ञादमं नहि,
बहुत को होमां कर्म नयनं कदा ही । ॥ १॥

सुनोएह रहि जुझै तारुनि सै अकारण को क्षीय अनगैस करत बाधेय भय ।
 ५ अंगरेज = - १७७० भवन न १७७० अंगरेज नरैत मुद = १७७० दि
 दुसरेके । १७७० हबलनाएल बहुरा भय ।

[illegible]

कदम्ब

59

[illegible]

शक्ति सादर शान्त क श्रुतिप्रमाण पर साक्षि वेत । समस्त पक्षों को ही साक्ष्य
 देने के लिये प्रस्तुत है ।

[illegible][illegible]

॥ = ५ ॥ अथ ध्यान कर्म विधि यं विविता विद्वान् देवा ॥ ३ ॥
 अथाहं वन्दे आत्मनो गुरुं तं विदुः सुविदुः सदाशिवं ॥ १ ॥
 श्रीगुरुः पश्यन्ति तं ध्यायन्ति तं वन्दन्ति तं शरणं गच्छन्ति ॥ २ ॥
 अथ ध्यायन्ति तं ध्यायन्ति तं वन्दन्ति तं शरणं गच्छन्ति ॥ ३ ॥
 अथ ध्यायन्ति तं ध्यायन्ति तं वन्दन्ति तं शरणं गच्छन्ति ॥ ४ ॥
 अथ ध्यायन्ति तं ध्यायन्ति तं वन्दन्ति तं शरणं गच्छन्ति ॥ ५ ॥

रुद्र जे हाथ में हति क सीसाइ विषास बड द' ओन्पाई १२ सतनेक ।

45

दिनचर्या

कै-हल देवाय जगि मगीत छेकः छान्दस्योत दीहेन बेरा मया समीत-मनीत
बबल नाल मजल हनेरु कोर छुटि रगत गैक बा बं शम आङ्कूरी छैन कामाच
कोट छन्दिक व. तत्पला चठैत छेकः एक डेर नेहि पू डेर नाहुं धमक बेर,
डेर डेर ।

[illegible]

पंजी नमो भक्ति । पीयूषद मृग ह्रीन्तु भक्ति या जलम सेहो मे' कास्त
भक्त । भूत इवैव लोकनि यथायाम् वसत्, किञ्च नाट, प्रया श्लोक ।

[illegible]

मम दिल सबारे को बने एक तू बाहर सब दुःखदुःख कोपी ज' है
तुम्हें कहे मैं कह रहा हों न जाने क्या कहा कि नाबालक पर का बिना ही दुःखदुःखा
हैं नहीं बरके पावन के लज्जा के होन विग्न बिदि न इति मम अथाय स

—हो एक ही ! इहे समय कहिना कहेन मे पई हो ।

—अरे फर से है बाबू ! तर मेरे, बड़ा शयक हों मैं का बड़ा हों
 देहाका भा मयती । मयती का टुटका : बार किसे नहि ।

मुद्रा ककारा सीधन सूर्यक ते एक दिन इ अक्षरवा यमिन हरि यमनक का
यमन १ एकदा यमन दुष्टिः ३ न गदकः ।

बौद्ध धर्म कोर्टोंन हिल कभल भूतों नें रस्ता में प्रसारण में
 वहाँन प्र विज्ञापन में प्रसारण में प्रसारण में प्रसारण में

की बातें लोक प्रयोग ! एता विन्तिन किरक छै ? इय पुछसिअंक ।

[illegible][illegible]

प्रमोद बोधि दिने बहु व्यस्त भुज इत इत्यम् । यतो जेतो हेतु वलामने
 दोषः । एतत्तु नैवेद्यं दिने दिने । यतो जेतो हेतु वलामने । यतो जेतो हेतु वलामने ।
 यतो जेतो हेतु वलामने । यतो जेतो हेतु वलामने । यतो जेतो हेतु वलामने ।

भा. ई. मसिहा जेहन हन उनीच पुनीसक.

सं. सप्त अक्षरि देखीक । सुप्रसन्न मनसुन अति हसत जेठ । सैत-अप
हैत तां सकल किशोरीक संगे पिय अछि मध

‘सो’ कहि वेग’ । लीहुर किनकर कम्पलेंट छीउ ?

ਘਟੇ 1

दिनांकः

[illegible]

एक कवक हेतु कपास मैल के रंजन हृदयपत्र कारोम लगा रहल बाकि
नरनी कपड के नरन हृदय पत्र निरुद्ध नरान हृदयपत्र कपड के नरन
हृदयपत्र कौनों प्रेरण बाक नहि जनै । कायस्थ मैल हूँ ।

नौकरी के लिए दूना घर में ही पान बेचने का प्रयास कर सकते हैं। यदि यह काम सफल हो तो नौकरी के लिए दूना घर में ही पान बेचने का प्रयास कर सकते हैं। यदि यह काम सफल हो तो नौकरी के लिए दूना घर में ही पान बेचने का प्रयास कर सकते हैं।

[illegible]

टिपिंग पत्रिका संपादक प्रकाशक. केंद्र की ओर से वृत्ति भंडार

—महि नहि, मोठे किर्लक है। हमारा ही मान्य अर्थक । बहुत दिनों
पहले मैंने का नाम सुना था । अब हमारे यहाँ कभी निवास
करें—ऐसी आशा है ।”

१३१ ८ संन उ हन ओह हनन कल तने पनन ओनन अनननन
अनननन हनी तनन समननन ।

नाति विद्वत्पुत्र होतुमर्षी श्रीराम क' राज्येन नष्ट पतं विम विदा होतु
 श्री वरिष्ठ श्रीराम प्रह्लाद कृष्ण । श्रीराम-रामर श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक
 नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक
 श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक
 श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक श्रीरामर नृनन्दक

निष्कर्ष

[५३]

श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः

[illegible][illegible][illegible]

हमारे माता सेना की-ए विजयी पर मुक्त हो + बदला लूंगा + हमें
 २२००० पानि टाँक कर्म के-ए से-ए

युव सेवा विभागों में सर्वोच्च पहिल स्थान काज नतीक , १९८१ ई. ,
नव दिन का प्रत

नहि, नव नहि । पुरेन दिन सँर कुरि जायन नहि । ३

३४॥ १२३४५

44 J

दिनांक

अस्याऽय

एक कविश्री गजेश्वर शर्मा—काव्यसंग

[illegible]

एला बहिने छ' बहिनी तहि जेब रहैक

कमजोरक घोडन-पोछल जायस हासने उभरल एहल सनक बाहिर पर
 नमस्तरि लोचन मय देन । अतो मशाल भनि नहि धारण । न पद जोडलम
 मेरु से जेन को ललित । के अरु से रहैक भाइक हाके घोडन-पोछल चित्त
 उल्लसल अमान । अत मानयु लोडलसि सुन निपल । न गन पद
 मरुत नमस्तरि लोचन मय देन । अतो मशाल भनि नहि धारण । न पद जोडलम
 मेरु से जेन को ललित । के अरु से रहैक भाइक हाके घोडन-पोछल चित्त

[illegible]

नीतिन कालः = नीति कालः = जे फाल्गुन मा मंगल बुद्धि गन भए भए
 सोने काल भएकाले सोने र सोने भएकाले सोने भएकाले सोने भएकाले
 बभरुन भएकाले * भट्टि कालि कहने गरि लेख भए +

तेन तेन एवमेव चैवं ननु तत्रैव नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न
 सत्यमिति न तस्मात् प्रमाणं तु यत् तस्य विद्वद्भिर्ज्ञेयं इत्यादि यथा हि
 प्रमाणं तदापि न तत्रैव ज्ञेयं तत्रैव नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न
 मुनि इति चेन्न तदापि न तत्रैव ज्ञेयं तत्रैव नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न
 महाप्रलयोऽपि तत्रैव नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न
 गच्छति चेन्न तदापि न तत्रैव ज्ञेयं तत्रैव नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न
 गच्छति चेन्न तदापि न तत्रैव ज्ञेयं तत्रैव नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न
 अन्तर्यामी साक्षात् नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न
 मंत्रोक्तं तुल्यं नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न
 येन गच्छति चेन्न तदापि न तत्रैव ज्ञेयं तत्रैव नाना भवेत्तुल्यं कृतं इति चेन्न

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

[illegible]

चौदह वाहु अमल कीहि लखन सिंह दण्डै अवाहु, काम-मार्गक सखलि बचावैत
" गौन लनैत अवा न लनैत ॥ १० ॥ चौदह वाहु ॥ चौदह ॥ चौदह ॥ चौदह ॥ चौदह ॥
बचावैत ।

[illegible][illegible]

१. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ३. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ४. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ५. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ६. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ७. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ८. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ९. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 १०. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

भारतीय गणराज्य का नाम ही है कि वह एक राष्ट्र की भाँति है। इस देश के लोग

श्रीपाद

[illegible]

ਜੀ: ਧਨਾ ਦੇਵ ਬੀਰਨ ਭਾਤਰ ਸੇਨਾ ਪ੍ਰਭੁਸਾਧਿਕ ਬੋਧਾ ਸਪੱਤਕ ਅਧ ਧਾਤ੍ਰ
ਸਾਤ੍ਰੇਨ ਸੇਨਾ

[illegible]

—कारां गैलशने अनमहू अछि ? दोसरे भाग पुर पुछागिन

हैं-हैं बहुत राम भक्ति । "राम काव्यकवि" की बहुत राम पत्र-पत्रिका
बुद्धिमानों के सहित के दोस्तकवि । पत्रिका में राम की रचनाओं को
हमारे ही समाज के लिए राम की रचनाओं को राम की रचनाओं को राम की रचनाओं को

“—हृषीकेश हृषीकेश तस्मिन् अस्ति” । वीरभद्र बाबू अस्मिन् वस्ति एव अस्मिन् ।

श्री-सिद्धि क, बोन कानन खास को रें पृथ्वी बीच राम पृथ्वी भेतवनि मुदा
बो वपन काज म पंचकल सावस कन । संकन प्रथम बह्वर औसवा । १५ पुरीक

मृदा इनके से बोरेल काबू जसभित्त ब' जससक— ३ दिन सँ अब जिनन
बी । कमबांगे सँ जसक नरि ब' जसल ससि ।

संस्कृत ज्ञाने कौ ?

दम्पत्याराम के की हैन ? जोखे मन्त्रानने में उत्तर धुंकिने नहि जाँख । मुद्रा माटी में डेन बलि ! लैह, देखि नैह ।' जरेन जाइ अपन हृय बँहा देवचित । मुद्रा गह अथन कान में चानन रहन । माथ मुथीमि गाय पदमे बानन करी वडा क जोति पार से दवाइ मडवा भिय ।' रामक स्वर में अहूँ बिचु नई छनैक जखिन बारमोचदापमे आसकान आभास सेटनि ।

बसुग-२

44

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

वाहकें पुनः वाता में मिलति हैं जपन ध्वनिधारक स्त्रोक उत्पन्नक संभव है।
इलाय महि हंतैक पान्न बावुं इमान के कलति ?

वीरग बापू ई सन १९०१ मई काल जगि जाइ रहलसह । ईन वाली हो
बाहुर हसगमें बंधलसह । मया गतिन सँ बैसम रखलसह अनति रहन कथिन । ई

कहल अन सहे योग न ? कका कहे विनंहे से पुछलसिन । स्थानक भाषाभोकरा
 बीरन बाबू केँ धुनबाँन । एकदम तौल बाबुआ शर्मा बाँनि डेरुअरु - ओन होल न
 अछि कन । ' जहि 'रजि' तौल गहि भेल सहे किकन कहबहु ? '

मया मेधाविकाराद्वादाः सेवा स्वर्णिमा होय । मेधस्व कश्चिन्ने के के-वेर नै उल्लेख
विनिमित्तं ते मेधाविकाः स्वर्णिमा होय । मेधस्व कश्चिन्ने के के-वेर नै उल्लेख

हैय न सोनो सौतेन सिपाही दीवाने ईत गंगक सोत सोधि देव फीवाक श्लोक सोह
निर्जन एकदम बड़ा सहर मोक बसमान सावन सहर बनी बसुन गेलर बौता-बौती
मोहा-मोहा बौता-बौती बसुन बसुन बौता-बौती मुक क शल छायन बाघ के नोचत
छा जौर ॥ बाघ बीबाक मोह बौता-बौती किरण सहर ॥

करके पूरे लड्डि से नाकि देनविन । बजंत-बजंत टटै गित म' बल्लभिन !
पुटा :-
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

गीतेन वाचुं श्रुतं कलिकं वाचिनं मे वाचिं गौतम । छोट वाच अपन बोधा-
 न्नाय नान्द न गच्छेय ॥ वाचुं नान्द जा वेत्ति पक्का ॥ अत हाथ काय
 बडि ॥ बडि पन वाचि वाचि डबल ॥ अरेत किछु वेत्ति बुझावत वाचि

अरेत बाबू बाड़ी ईश्वरेन बहामाह जति न साहीन छह पृथ बाछि ।
 बाके बज्जा नमन मन शयन नतनत नोतर बाबू जति न श्याम काठनी
 दिठ बाबू रत बाबू ह'न नतन बाबू करेन सायिन म्मुलक शयन न
 नत रतन नतन नत बाबू साहजन साहजन रतन नतन हरीत बाबू
 म्मुलन—सुदीक बाबू नत बाबू के नतीन नतनन ।

चैत्र १५ गुरुवार नदि संवाहक किछु काल राह गहु बीजत कइ जोगिनसु
१५२४ बसाह ।

एतदा परायाय सुखं किञ्चन वनेन वा रक्षितं भवति । श्रीदेव मातुः शोकं
नेत्रे च यथाऽऽनयं कथयन्ति । तदा श्रीहृषिकेशं तं शिष्यं तस्यैव वेशं त
द्विजानां कथं

बोरेल बाबु प्रत्यक्ष थे' उलझाह । बक, पैहू छथि हिमकर रोज मुमैत छनि ।
 मायों ऐसकर अलसान बात छथि । बरत-बटार, बुनि बाइत छथि । ते' बोरेल बाबु
 नकार आ अहिना बतलन जान प्रबुद्ध मुदा मुकी विवर्तन मंडाक बह भजनाम
 कर्न छवथिअ बंटाबाह ते' बजबैत छवथिअ । जसब ते' अहि बलि ओकर ह्मथ ते'
 अपन बाटी पण्डा देन कथथिअ ओही तन मोतक बात मुदा दीन छवथिअ ।

गणनाक बातें बोलने का बहुत बड़ा फायदा है। कल्पना नहीं ब्रह्मसत्ता, ब्रह्मसत्ता नहीं विनृतकाली। यही बातें हैं विनृतकाली ब्रह्मसत्ता से।

मुदा कोटि राति नोह कहि भेषनि । केन्नेर सप्तसवि बेका मिन्ना ये लो
 दाह होनि जेकेस बाबु निम्नकपिन । धर्मिक तीर धके स केनेह निम्नकपिन
 इतिहास करि सका ताहु मे पुराण कहनि । नयलनि बेदा मिन्नाये डाह को छाया
 छिह । राति रहन छपनि । भूमकुक गजन सजनि । रनके कपलनि रहीं
 काक हरि मिन्ना ये दाह कपल रहनि । धर्मिक सपटा छमे छपनि । रोही
 मलक छमे छे छपनि ।

[illegible]

काकि कः प्रीति दाहू क्षीति मुनि नेवति मय नमनह नरि डादन
कयो न नहि भवति तांर मं प्रमया २० नम रहति प्रेन हेर पा मुष्म कोर मीर
जतमोल व सारवत क्षीरः अत्र नहि दारविक ककरो प्रमोक्षा नहि कहविक दान गोपी
मोनक हाल । कोर कापदा ? कव हुमन बोसगी के कोरक फन रक्षित दधि । कोर
केसाव इहो मय मीह रक्षित हो मोर नक्षत्रा मेन दमया परतारि रहत ही । अत्र नहि
कामविक — ककरो नहि कहविक +

“आशा है कि, वहाँ परमाणु बलि

बोरें वायूक आनि क्षुद्र गोलानि वायु सभकें आसतलें अरुम खरबो जेन
 संभव अपन क्षुद्रान उडि वैल्लान क्यक क' आर लक्ष अशोसंभन । अरुम हाक
 लोकाक फुटीशी ते दवरेंत कहलांथन सनक देखे ॥ वाडि लहरी मे वेग मे वाडु जालि

आ सीट बचक बसोच पुस्तो न ददन नाबौक भुक् भुक् गनहाक बचना तुहक
 टुहार अपन काकाप पुत्र देकि गृहम प्रत ।

अपराध ११५४

कर्मविजय

अरुगनी

जगज्जने किन्तु खयदाक स्मर कर्तेत भसि भा हुय रीदि क' सीधर पदु'रैत पो । जगज्जो टुदि क' जसस सेक वा बाइका कसोबाहु पाटि मे छिदिबाइत विज्ञाजोन बा भिजम कपकाय हुंरी जग दाइ जिन्दत तम छदि कसि कान-महक हुनु सम्म बोदिना छैर सेक मुदा हुनु खयदाक कान्ह पर राखन बसिह दइदा बोनेसै टुदि क' एन वातु क्षमि गेब सेक ।

इसका हईं नामि बाह्य वर्ति, नीक सेनेक । बाबू कबस' नामि कापार त' रहि फटत । इसर बर पत्ति सै कह्या ते अबाहि क' फौक सेने रहितियेक मुद' मास हरदम जौनमे बाधि बाह्य छलि हमर किछ मुनिने हि छलि ।

बहु ज्ञानि, कनेक केर बन्हापने एहि धरमनीस होहा सेन हन नहि
 ज्ञानि कनेक केर सभा होनितामल हुन बा येस सभ टेटर नहि व्यायम हुन,
 मुदा सहिमा कहियो अरुनीके टछाई क संक साहुटसेक, माय सभ केर टोकि
 सैनक--देखि क अलख सीखहु ई लेखरा मुँ छपने जगह पर साहु बन्त, अनेरी
 लोग्गो हनो येन नहि सवेत छहु अपने देखि क अलख नहि बा सभटा
 तामस निरपराध धरमनी पर बाँके हाह लकेक जगो हुन बिबल म आहुत
 जगद

बालक तथा कृष्ण गुणों नष्टि वदलनेक अछि । अतिपावे ज्ञान-प्राप्त भव
कहि अछि ऐ ओहो ह-उं नष्टि ऐ ओहो कहि बालकस ईदक यमान का प्रथम
ऊपर से नीचे पठल बालकस आठव बाल न पठल बालकस = पदम, कोट
मुदा बालक-बालकस सुन्दर । बाल कहेत अछि न पठल ई पदम बार सुन्दर
कहेत । १२१४ बालकसारी सुखसं पूरा न यमान-व-शगईला काठा सभक
अन ई बालक सभका नयेक । सुखसं-न पठल बालक पर पूरा न ईद जौन
क प्रथम पठल ईद ईदक का विद्या काय प्रथमक एकटा छोटा मुदा सुन्दर
बालकस कहै से कहलैला कहि कहैक ।

हमि नरदत्त पुत्रात् क न म कनक उत्तर दत्त क र जगत् के र र दत्त
 बाप दत्त कवे धरि ने रीर एव' पदु' रंथ छंके छे छिछि धरि रहैत छे
 दिन छरि ज गने पर दुप' केट माट' बहू बल मुवर्थ' म' वन कपडा मय' दुखा
 रहैत छिछि ।

[illegible]

मृषा नहि वाच्यं ईह्यार कान्तु प्रति अति वेत्त कश्चि, ह्यरा कृत्यो
आवाणे नहि सीधेन उचि यत्न न वाया इत्यनेन दुःखं न, एतेन काय
प्रत्यय मेदाय नहि नैन नैव विज्ञान न तयो न न कश्चि न न नैव नैव

जहाँ जहाँ जाये वहाँ क' सेनाएँ । कुमारा हुआ एकटा हुना
होत ओहूँ योहि तं क' अत्र नहि नगडातः ह' न हयन दमर्गद क' कृतिव
दिलिमेकः ।

याचो हय करंत बळि । ह्मण हेंचेंत काळ देखि दोबेंत बळि—
 "आज मेळ विविधा न को भद्र । नवकामाचें मंडल । लक्ष्मी नव ठीव घाली ।"

५. 'आदि' शब्द, आत्मिक शक्ति से ईश्वरानी इक्षरा संस्कृति कहें
 शक्ति ।' इस शब्द संस्कृत शब्द कहें शक्ति ।

[illegible]

हम विश्वरूप का हूँ । नाम अविद्यमानों के पास नहीं ।
हम बुद्धिमान का हूँ । नाम अविद्यमानों के पास नहीं ।

आदि आदि हिन्दू काय होत इत्येक शक्ति । जहाँ कायन करीक दिन.
शक्ति निरति । कोषन नर नर । नर नर करीक नेत्र नर करीक आदि
सम कित् काय छक—नरनर नर प्रानन-मोक्षन । नरनर नरनर नरनर एकक

28

ब्रह्मजी

जिम्बर गीसा रहल छैक मुदा बिगड़ल । रीस छिन्नर भ' रहल छैक मुदा तैयो
गीस जागि रहल छैक ।

द्विज शक्ति धारणे अंतराज्य न कसम बंधन रोदने बंधन बसि । हुमहु
अपन दण्डार्थ कोषः अंतराज्य सो ।

[illegible]

डा. नेतपन कृपे योग प्रवेश काल कोऊ का सङ्घ—अपन अंगे विषा दान
विपरहेतु को, कोऊने परद्वं भ' बाजी । अङ्कित दिन भ' नेत ।

मानक नमूने पतमाश्रममें दत्तेश्वर स्तुति, प्रशस्ति करत 'हिरण्य' श्रीः
 क. गंगानदी तट पर कटेश्वर स्तुति पत्र नमः तद्विहारी नमः शान्ति नमः कुलं नमः गंग
 यंत्र लोक नमः नमः ॥ ॥

अहंकारः । ते शान्तिं नहि गमयन्त्यस्य तं विना बहूः लोकानि सं ग्रेतुः
कस्य कान्तिं नश्येत्
अहंकारः । ते शान्तिं नहि गमयन्त्यस्य तं विना बहूः लोकानि सं ग्रेतुः
कस्य कान्तिं नश्येत्

राज्यो उपरान्त सेंट पतैत सवि—इसके लोक मेहर का सचरि हमरा
 उठत छै । लो तें सांखरी बिदुत नहि जियेत रह्यो । आर-म-हि म रया से
 सवि, कोठरि "सगीबद" म लेख बलि ।

“युनि के कुली मेर काकी । ओ बोरा के हथरा बहरिनी नहि
जेकर भरी बोहर दना चिया मयन ह्य हु चानि रजंग सारि लीकि क गठा
हैत छियेक ।

वाकी होय लीन वर । तन्हुँ नैवेत छौं का नैवेत-नैवेत नैवेत छौं नैवेत
वाकी होय । वाकी ह्वरा नैवेत छौं— आठ कन्हि तौं की करौं छौं ५

—“अकस्मत् भद्रं कदाचि ।”

—'पौडर फुल्ल हं बरम हं पैमोड !'

आपका

(५५)

—“है काकी ।”

—“एकन बाप की करत है ?”

—“बाप उकैत छो काकी ।”

—“जा वो है हाकिमसर इम्तिहान देहातक, ठकर को येकोक

—“एकन कोइमे देतो छेक काकी । एके बेग नहि होइत छेक । कय-कय
देर इम्तिहान देव पहुँच छेक ।”

“बाप बेकासर की बनके ?”

“हमर एहन बाप कही काकी बे बाप करत बाप, छात्र एत ही जा बन
बाइत बाप ।”

“एत हो को के कतेक दरमाहा सेत छेक ।” काकी सब जगह म
वहीत छति । हुन मोनक बात चुसत छियनि । हुँसी नगीत बापि मोने मोन ।

—“इकानिहार छेक मेईत छेक काकी कर अपन मन् ग हाइतक
इजीतिपर बापि । जोकरा स्याक कोन कपी ।

काकी प्रसन्न भ भइत छति बापक । हुन उठि क उठ होइत छी ।

—“बाप जेत छो काकी ।”

—“कनेक बाप, बीना कोन बाप कोक । किछु पनरिवाह ।”

“नहि काकी, एकन नहि, कर कसकी”

बाहर बापि किछु काम बादपर इतस्तत करत जाइ रहैत छी कर
बनारस पहुँच कर दिव बिवा होइत छी मन्क मात नहुन कपड़ा पधारि
रहति छति । बापि के प्रवास करत छियनि ।

“करे हो छे” कनेक बापसे ?

—“जा एत दित बेक काकी । बगवा हारे कतहु बहादुर नसिकत भ
येत छल । कम्प कोन बापि ?

—“जा ते एकन बापनसोपमे बापि । कोउहि एक टा “बिन” मे लोकरा जापि
मेक छेक । एकन बापि सब कपड़ा दैत छेक ।

—“एकन मधुर मन्क काकी ।”

हुन प्रसन्नतापूर्वक कहैत छियनि । मन्क हाइतक इतिहास कोरु बहकक
बापि का मोन विरी कोरु । एही बात । जा बाद हुनक बेकरिया लेक मेरक ।

बापे कहैत छेक बापमे लोक, बाप-कानि मे “बिन” नहि पडलक, ते बात बहकक ।
नहि ते एव ए बात क क हता बेकार किएक बेसन रहितहुँ, हुन सोचैत छी ।

—“की मधुर मन्क ? कोन एहन मनीसर भ’ येत बापि ।” काकीक स्वर
बलक छति । हुन हुनकर स्वर चुसैत छियनि ।

—“मेनेकर नहि बेक री क’ बापस । ई कोन नसिकत छेक ।”

“करे कहैत छे ?”

—“कूँ किएक बापि काकी ।”

मुन मोनक बाप कहैत सलोह मे मन्क “मनीसर नहि भ’ सचैत बापि थी
कोट पहा पडत बापि जा मोन बहक पहा पडत बापि ।” हुन हौती नापि
बाइत बाप, बेकता पुनक रोचैत छी ।

—“नहि काकी मोन मन्क हुन बहक पहा पडत बापि—बाप
कोट पहा पडत नहि बाप मोन बहक पहा पडत बापि ।” हुन हौती नापि
बाइत बाप, बेकता पुनक रोचैत छी ।

तोना मुँहमे मन्क काकी बादपर होइत केजें छति किएकान हुन
पांटे कप रहैत छी गुमसुर । कर काकी रोचैत छति । “बाहर हाकिम बल
इम्तिहान कहिवा होइत

—“हाकिम कपारसे बनैत बापि काकी जा हुनका कपारसे त’ बीकयरी
लिहक बापि ।”

—“एवा मुन बाप : बीकयरीक उठर हुनम । तो बगवे हाकिम बनवे ।
कपक बाप उठर बह हाकिम करैत छपन सबकन कहैत बापि । एहन
विद्याकी देखे नहि कपकहुँ जिमसोमे तो उम दित कनेक करैत छेक मन्क
उकिम का मोन मन्क तो सेम छोहि देने ते कनेक गडबडा मेकोक ।

तबने हमर छोट बहोत हमर गकैत कोट पहा पडत बापि बापि
बाप हौता काहनि बाप हमर तकोत नकैत । बाप (बापकी) बहोत बापि । हुन
कपक बाप मोनक संव बिवा होइत छी । काकी कर कपक बाप करैत बापि

हमर बापकाहुँ बहकका सोम-बापिटा बापकाहुँ संव बहकनर बेसक बापि ।
हुन बाप रहैत छी ।

172

हम काम किए लगे हैं। जो गुरु बुद्धा बनें वरि।

बहुतेकरक कोसगापर हृदय एक ही छोटकी बहिन लगे हैसा रहति वरि।
कोकरे लगे कोकराई में बहिन पुरान-काटन सायक कसनेक कीरल हाथ पहिरने
बैलन वरि। कोकराई में बहिन कसपन बपन नीतीक संग कसका कोषि
रहति वरि।

हम रूप-नृप को बं बपन कांठली में बिछावोन पर पवि नईत को। यह
बकनी ब्रह्मरूप वरि, वरि ब्रह्मरूप रहति वरि।

"वृत्ति रहति?" यह वरि बनेक कासक बाद वरि हमरा हिनचैत
वरि। मुकुर काहुरी हरदि का बनी-बैरवदक संग बरि रहति वरि। कोकरे
कसत लवक पनेन पोनेत कादि वरि। हम ब्रह्मरूप हृदय वरि नीचा में
रहाह रेवाके रेवेत को।

"को सोचैत को? को सोचैत वरि। "किछु नहि सोचैत को के
कोर रहति वरि वरि।" हम कोर कोर कोर को।

"को को बरि कादत वरि को?"

कोरि वरि मे बाबुल लकड़ा वरि।

"एक न तं कसहुँ किछु बरि नहि कावत वरि। मुदा धाम के वरि
रहति को हैत?"

वरि वरि न कादत वरि। हम बिहारी राह बरि वरि लगे को।

एकएक वरि हम दीत पर बिहारी कादत वरि केत टुटि गेन वरि।

एकएक वरि, पुरान, बाबुल वरि वरि मे वरि वरि—

—"हमरा कहिये न वरि?"

हम कोको वरि नहि देत वरि।

बोहिया पदम-पदम बिहारी कादत वरि वरि वरि वरि वरि वरि
पर काद वरि न वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि।

बरि वरि १९३५

सूर्यास्त

परेह बाबु पदम पदम बाबुल उरत लरनाह, बाबुल नील दिन पुरान
उरति वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि

कोकरे उपरान्त बिचाव करवाक जम्मास हम दिन लरति। बहिवा
कोकराई करैत लरनाह वरि वरि। इत मोर-मोर मेरुन हनु वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि

हम वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि

वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि

परेह बाबु पदम पदम बाबुल पर वरि लकड़ा वरि वरि। वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि

वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि
वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि वरि

महामाया दाद पत्नीक मोनक अविश्वता सुमाननि । दह दिनक न
उठलीह ।— 'मोनक नहि होइत छति ।' पत्नीक विनय स्वा पर परेस बाबु
पौनसह । ई सबर बाब कौनक अविश्वता न वेत छति ।

'सब बाब न वेत ।' कबहुन मोनक निरुद्ध तर खोजि परेस बाबु
बोले छति ।

'सब गहि छक विनयि होनि दह' । महामाया ३ उठल जेत
उठल होइत छति ।

'न न ह महे पवन रहू । बहुक मोन खाए छति ।' ५६० नुति
रहू ।' किन्तु गर में अनियत उठा लोका ठी कय न न । अन्या मोन
तर खोजि परेस बाबु कहैत छति ।

दम्य कबहुन में हूँ पाठ रहू कय पाठ उठल छति । मोन पुन निरुद्ध
कौनक में मोनियस ।

* * * * *

एक बेर परेस बाबु कयसह ।

प्राप्त होवा में बेसी विनय नहि सनक । मोनक उठल हवा मोनक उठलता
के' छट करैत सिद्धि रहल छल । मुन परेस बाबु मोन करैत छल । मोन
पौकी पर महामाया दाद कहैत रहल कयसह— कयसह ।

बाद कौनको दिन उठल मोन मोन में परेस बाबु मोन मोन मोन मोन मोन
छति बा मय दिक मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

मो मोन उठलता क नहि मोन छति । मोन मोन छति में कहल उठल
मो मोन में मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

एक बेर मोन नहि होइत छति परेस बाबु में ।

* * * * *

मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

४३ ।

४५ ।

। कुंभ

महामाया दाद मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

महामाया दाद मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

महामाया दाद मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन
मो मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन मोन

। कुंभ

। ४६

✕

[illegible]

आ जाय भंडे जेत उल्लाह हं दांज मं मलनि : परेज गानु जेत कनी
दाजल पमने शोभादा मंद नकुवाह ।

साक्षात् पर काशी में बूटि रहन लौकिक, विद्वान्त्रिक सफल भूषण भूषण
शतेन । परितोऽपि साक्षात् पर भूषण त्वं मेधावन्तः भवतु ज्ञान भूषण ।

[illegible]

५४४ कवयः १६६

5344 1

[**recher**

बांछे सिय छटीवर पर कलावाज ठरुणसुं भेट भ' गेलीक ।

[illegible]

इस लेखक के बारे में ज्ञान एक होशियार के, दुर्लभ है एक 'प्राज्ञ' के लिए-बर्तमान में। सभी किताबें बरि कृत सच्यम रहन।

—“सो” के बाद मोटा रेखा खेंदी ! काटिज कर ।” बोहिना जयका
तक कहनके ।

प्रकाश किन्तु नहीं कायम । भारते मुक्तियादर चाल १

-“कलक दिवस हर जेठे मेथ मे री ? भाषि करण मेथ हेतैक ?”

उत्तर कोहिता लपटल खेर हावत ।

“है पाँच वर्ष पहिले कनेहालक हुनु मेरिका कानन—हानियतन मे सेठ
बेळ तन तो मयन वहुक बंध सति फट्टक हुनु बाइल पुन गरका मुदा
नोक चहा वपन जेका त बाठ बरही ऊपर ज बंध ।” कनेक हुईत अकाध
हावत ।

हुनक हावक भयस म बचिन सुपन बाध मेरा क दानि य गेअ टईक ।
बावधिअके गेरा मे कनेक हुनु मोटे पालन कानन पर राखि देलके । प्रकाश
मेस देव भगनेक ते लकष बरहि पकटि य धि नैनके मेरा क देनके
गीता

के गीता ? प्रकाश बधभकावत ।

—“आ मे, परिचय करा देत छियीक ।”

देवता पर सुकनि जाकि कमबुधरी लग ज वि लकष हावत—“छेरा हुनु
कोटेके बावराय परिचय करा दिशोक । ई पिताह लेख बदनी आ मोठा, मेर
प्रकाश बिक, अकर हुन बरोबरि बरि करीत छलियीक ।

मेरा परिचित मयमे हाथ मोड़ मुनकिवा उठयेक । प्रकाश नमस्कार
कयलयेक ।

गीता लपट—बराछु भवेक पितादवाय सन छोड़ी कनेक । कमाक
मोठोअ कमकीन बाकर हुनु गेस मेर बाँध उर मुनन हुईक प्रकाश अन्धवि
कयलके । पाउर हापर नका नाक मारा हुन छनेक मने सुपनि नहिबो
हुईत, बावरीय सति—प्रकाशके बोने-मोले स्वीकार कर भकुनेक ।

तीनु रेजिा पर सुनल सुकन बनेत आहुनि दर अनहुवाक रूपके अनुभव
करैत गप्य करैत रहत मोठा कवेत तम उनेक मुदा हुनरेन मुनकिबाइत
हुईत छलैक । प्रकाशके ई बड़ बीक लललके ।

लकष पदिका सुनले बोधनक रहत राम मय नाले हुइक मुनबरी
छुनेक मोठा मुनकिबाइत रहलके । प्रकाश कवनो लकष कवनो गीताके
निहारैत रहैत । बहाव बनि पर अकरैत छुनेक ।

दोर मुह पर बाधि गनेक पसेना छुद लगलके । प्रकाश बावरा बर
रोकर दिस डाढ़ होइ ।

१०२]

अनविचार कानन

—“है यही ! एतना रीतिक कोन हर ? की गीता ?”

मेरा उत्तर नहि देलके । जानी मुनकिवा देलके बाहिमे जिनकी
बाव छनेक नकाध प्रकाशके मयन प्रताप पर अकाध नाक मेकके ।

—“तो बहुत बरहि मेरा के प्रकाश ?” प्रकाश नहि जानि की मोरि तल्ल
बरहि उठलके ।

के “हम रे” प्रकाश करैत प्रकाशके नमस्कार के बाध करे अकरा चलन
देहरीनेक मयन—विवाहमे बहि बचोने एकता बेटीके बाध बनि गेल मुदा
जीता मे न नहि बरोने । बाकर लपट उठल हुने प्रकाश छोपलक

उत्तर खेर बाधि उठलके—है, प्रकाश छोड़ी । प्रकाश बरहि मेले
के को । अकर गप्य-कपक इ ग बरनि गेल छीक । नगीत बाधि मेरा के हमरा
के नहि भेय न गेब के—एकरा मुह ।

—“दूर न भवे गेल छी । मेरीक बाध बनि गेल छी दस बरधमे समुन ननब
बाध को मयन आ छो दम कहीसे ना ?” दस मयनके अकराक बेला करैत
प्रकाश मुह हुँसे रहल ।

—“बाइके अर बहि, अर-अर बाव ।” उत्तर बावराही अकर

मुनकिवाक कोन बाव छन अकरा वन परिवर्तन होईत छेक ।
देव, कनेक मोठा मेस छी । पहिले रहल यही ?

उत्तर बहि मेलेक मे ई प्रकाश प्रकाश दाग बाइत बरि । को फेर बरि
नहि कयलके ।

तनकाय रीत मुहान पहालने गेनकि पितादवाय मुह पर छाती बाधि
बल छनेक । मोठो नकाध मेरा मय पर बावरा राख कनेक मोठ बाइ बाइ
लपट । ई देखि हुनु बाइके हुने मयि गनेक हुँसे-हुँसे लकष मुनमुना
बनल—

बाधि बने को लोकाय

मे की अर अपराध ?

मुह ए बावन मेर

हुँसे मेर बावन कते बरन

गाम

अनविचार कानन

दुस्तिग था सी० बाह० सी० रिपोर्त थट्टा देते छनैक । बाहू बल निपुण्ड पनक प्रतीया छनैक ।

- 'बुझै कते मेनत ?' किरण बोहिन छागो पर बोधराइत राजक छनैक ।
'बुझाव लेन नथ ।'

किरण चुप न' मेनैक बेना नीले-मोने किछु सोनि रहल हान् ।

'बहुन लय कछि ने ?' प्रकाश टोकल्लनैक ।

- 'नहि तै । बुझ-बुझ के कीव कम बलि ।' बागो नोथ कततु बलि बाबत तै छोहि छनैक ।

'बहुन बेना केव एक न ?' प्रकाश प्रश्न कयल्ले ।

- 'नोक नथ ।' किरण टाउठाहि बिबित बिस्वायुर्न दायनि ।

'सपन-सपन बागो पडल पडल ?' प्रकाश बेतोल्ले ।

- 'सोहो न' बाक ।' किरण बोहिन बिस्वास पुनैक कयल्ले ।

- 'नर बबुर गृहिणी छे तबन तै बहू ?' बांकर गीठ पर दुकटा पातेत प्रकाश हनैक ।

- 'बन्धन बानी, को बबुर गृहिणी मुदा एना हट्टो-हट्टो किएक नोहि रहल छे ।'

किरण सते कट प्रसन्न छनैक । गुनगुना रहल छनैक । बपन देन पर बांकर सभे प्रभुपन क रहल छन प्रकाश बागो दुकारि देनकैक बांकर ।

प्रकाश विरल कोना निरुपय नैतिक बेकि रहल्लेक 'मुदा पतिन परमात्मा हमरा देन' एकर बांकि छे छे एकको लय नहि छ ।

बन्धन बागो देन । मुदा की हट्टेक बोधि पनबाक, को हनहु तै मुने ?

'बहुन लेल कपडा किमोसर, कुतर देन । बेहून आउल कपडा पहिरने बपन मुदी बिस्मयवैत इन्टरम्युन बसल छे ।

प्रकाश मुन म गन बाब लय बांकि कहल्ले 'बांकर को करन न' ।

कोना उत्साहित बेना बाकी किरण बाजलि 'एकटा बहियाँ करा लेब । बांकरा खूब सजायब । लभन एकटा रोजियो लव बा नोक-नोक फनीब । नहि, नहि रोजियो फनीबन राव मे लेन । पहिले एकटा गाडी लेनैक शोक हेतु बाहिये रोजि को मोग सति धुमन ।'

प्रकाश कोमोनकै - मुदा गाडी कते रैच लेब पडत बेनीक छेन बेनीक बागो नोककै बोहिये ।'

'बाहू, हट्टे ।' किरण कयाक' बांकर छागोमे धुलिया मेनैक ।

लेखन बाउलीन बेन बांकर कोमोन कानि रहल छेक । एखन एहिना छनैक । किरण प्रभु मुदा गन लेक छ मायक बाकि आ मायक प्रभु मुदायल किरण रहल राम बेनीक आ हप्पक पुन' निज बाक छेक मुदा प्रकाश एखन बाबि एकोय नहि जानि छकल्लेक बलि ।

बेनीक पैराम्पुछेता सहेन नहि बा बि नकलेक ने लय देरा भेटल्लेक, न प्रकाश नकलेक कनहु छनैक । एहि बेरापर बन्धनक दयम दिव बाबि बेनीक-जिबुलि नथ नहि भेटल्लेक । को बन्धनक बलि ।

प्रकाश मुन म लेन । बाबरायन डिटेक्ट कयाक ई नथ तरीका छनैक । ने इन्टरम्युन नथ देषटक ने सेलेक्शनक छान । प्रकाश मोने-मोने हजारी बाबि देनकैक ।

बांकरा हटाव देबि किरण पडल देनकैक-बाबि प्रभो 'बहुन' तै मने नहि छन ई नोककै करवाक । हनहु बिद कयने कयहु ।'

मुदा किरण पुनर्गति या रहति छल काण्य प्रकाश कनेत छल बेनीक पैराम्पुछेता नहि कयल्लेक । किरणक प्रभु मुदा केन छेन आ बागु लम निजल पुन' प्रकाशक प किनन पडल छेक कहियेते ।

इत नथ रहित बहिया प्रकाशक निजल अथ रहैक बांकरा धिननी गुनहारये होउत छनैक । लववैत बाबियन छनैक लकक हट्टये । एत दिन बाबि बेनीक बाबि न' छेक बा बांकि दिन बन्धनक एम० ए० न रिजल्ट सहेन बाबि मेनैक । को बन्धन एकटा बांकिनी नोकरी नहि बाबि एकक प्रकाश ।

बाबिटा इन्टरम्युन देन छल गोलटा केकबाइल्लेक का एकटा छनकारी कामल्लेक हट्टे । इ काम बिना मेनैक-मेनैक विज्ञानन अथ रहैक बाबिनाक बाबिना दियना प्रकाश करवाक हेतु बा बेनन काम एकटा पनीक लकक किमुक्ति मे लेन रहैक, इन्टरम्युन रहिते ।

बाबिना कोकरी बांकरा बेनि मेनैक । निजल बहिया कोन पैराम्पुछेता गतिन कयल्ले, नथ बकाव केकल्ले । नथ प्रसन्न छलि छे ।

[illegible][illegible]

प्रकाशके प्रकाश केन्द्र के चिरपके कौल के वेबो के समुद्र है भारत,
हमारा लग । युवा कवली वकीर नहि कुतलक ।

सोमट दिन लक्षण कमजोर है। एम्पेज लक्षणों का हिस्सा होने गहूँक जोकरों
बादले ।

कलेके आभवे तस्य सभसे हंसि मिलि बेनेक । देवके कोरने कलसै
 शनैः कण मं धर-धर हंस करि रहसैक । कवि आकर पंढर-पंढर । देवके
 नंदो जाहिना केसवैत रहसैक ।

प्रकाशको जो दिन में पड़नेक कहिया बगदा कहे छै, सोमर सँ एकरा चिराहति कहै छलैक । जेनाका एके सँ पच्छे रहैत छलैक तकरा किछु चरिब को पहिरैत छल । भाग को नीक कसालत कहि । पढ़ाई सँ सौंकेक कस छल सोमर देस सँ मुवाँ एकटा नीक कसमे मेरिबल रिजनिटिविज सँ छल छल ।

[illegible]

तांगू हाट के मेहनत हूँगी सबनेक ओ हँसत-खिलत गेट हनुमय प्रगति के ,

भारत कीन प्रकृति कहलकै, तँ परसुक्कः दुःख प निश्चिनन काल ताँ
भीवीकें स का दोभान्ना मा व रहल छै), सब देख कहैत ननि कौतुकें
सामेपुछे बलि बचन बग्वी बहिन सन ।

वाक्यान्तरि विवक्षा पर वैयास वज्रान् वां धृक् च कौटिल्ये च शङ्ख गण
 ध्यानक पदस्य कालां यद्वचका गौरीक । वांश्च अं कश्चि ह्यन्य ज्ञापित्त माह ददन
 नी उक्तस्य वाच्ये कालेन उक्तं वे कालोऽयं शब्दस्य च न पदस्य नहि वाच्यं गुण
 दानपुर शब्दस्य वाक्यस्य त्रैलोक्ये च केनचिद् ।

... 'बोया' से पहला कदम सचिब १५ दिवस के एक पाद तह सचिब, मुदा
मैं न बलाकाम मुक्तों को दूँ मैं उन १५ दिवस के तह सचिब

—“बुद्धि बल्लि सवि तें हाका लोहट की हवि । हव सभास तें रेखिय। का
मिचजोन सुवर्ध मेळिये जाइव स न

[illegible][illegible]

विश्वविद्यालय प्रमुख वरुणेंद्र—“चौधरी” ही कथा हिन के सभसँ बड़ बिग
 दहने देसिबानि। हमार केरसे एक कथा मे बाबि समेत बलि।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 कान्ति हृदय गुरुभ्यो नमः ॥
 गुरुभ्यो नमः ॥

नामक वृक्षनि शोकही नूनकर । सात वरि नैं नैं सुनि पृथु खी ।
 वृक्षनी वरनी नैं नैं ॥ मेव प्रवेया हन हन ॥ गङ्गा नै वरनै वरि वरनै वरनै ।
 इत्येव ॥ इत्येव वरनै वरनै वरनै ॥ सात वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ।
 वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ॥ प्रवेया वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ।
 वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ॥ वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ।
 वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ॥ वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ।
 वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ॥ वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ।
 वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ॥ वरनै वरनै वरनै वरनै वरनै ।

२०००-२००१

गाममें बिना हीरेत फाल कलहों में पैर ७१ मि हय नाका अंकन हयसे बेंत
माय कहने छनेक - कहुना 'किरिय'क - नतयय कवन भिन्नह पुन विरयत रहि
करिह' जहिना इतजाम हैत बार पता देवह । मुनः पता कतेर दिख कलह' ।
कोही काय बा' सैह

प्रकाश पैह मोच रहन छह कोना बार एक क देवाक रहिहय कोना
काय, केहुनो काय । सोबकाक-विचारकाक बार समय नहि छलैक ।

आकाश ब-तय देवी देवी देवि 'किरण कोठलीमें रहने के कोना के
इतरयके ओकरा विचारोन पर पड़न लेनि कुचका ना बार देवि
रहलैक । प्रकाश लपटा मुनि केन छनेक, को मुनि केनेक ।

किरण लपट केम ओकरा एक क दम छिनि एनए रहलैक प्रकाश इतरक
आलोपर देवा बनाइन रहम पुन दानके दान कहैत मन बाह्य दान कोन
ओइलैक—'महाँ प्रकाश बारपर हूँ किरण कहलैक' । केना कहि ।

"अ बायत । प्रकाश कोहिना पड़न कहुनै

—'कोका ?' किरणके विचारन रहि केनेक ।

"कालि एकरा कदाक रेकाविन कहि । पन्नाके टाका केवह ।"

किरण छेर कोना पल नहि कयलक प्रकाश केओक संग कयलैत रहल
देवी ओकर नाक अपन तौटि दिहीन मुँहमे स' चिर र' नबलैक ओकरा मुदमुनी
कयलैक, को हूँ' लागल ।

किरण केनीके केन बाहुलकके । को वन कयलके 'केकाय विपी ।'

५ ५ ५ ५

बहु धनहूय दिन छनेक—नमीने विपत्ति करैत ।

प्रकाश दिन भरि कोठलीमें पयन रहल । एहि कितनेक का गति सहे
बाहि केनेक । कोरे का' ० २० एन०क परोसक परिकाम नहान बा' केनेक ।
हवल अन्तिम कृषीमें प्रकाश ह-बा एन केर अपन रोम नमह । ताकि केन + मुन
ओकरा विचार होम' पयलैक । ई बाकर पदिक बा' अन्तिम बर्ष छनेक । बावका
लाक केहु एव नहि छल ।

ओकरा सफलताक बाधा छनेक । ई वयका ओकरा नीक बर्षा टाहि
देवके । दिन भरि कोठलीमें नुकायल रहल । बाबो एक दम केन बा क किरण
काय बायत ।

१५७]

कालिपुत्र काल

इ बारि टा मयनकी बा कम बिलक सान्कना देव सैहो कयनपिन ।
काय बारत किन पदेह मेरी—'परिमय कम बिना परिधय कयोन करि
मन्त्रिक ई बिन्ता 'पल्लु निवृत्त छोड़' किछु दिन ।

प्रकाश किछु रहि बावन को निवृत्ति पैल छल बा पछिक क' वनक
अन्तिके छल किछु महका बाह्यक

मनि क प्रकाश किरण विचारन पर कयलैक त' बावन अपनका थ
केनेक कोरे उदिक बाहु कतथे इना छल मागे गाठ बजेक कारीत कायक बा
काय परि बरि कायक

किरण बिहू पड़ि कयलैक जे कृतक पे किरण मुनि केनेक कहि,
कृतक एक क' मगल

—'महाँ अन्तर बहिनको जीम टाका देव छने शिपिक । किरण एकटा
कोही कयन कयलके

"ह ।" को कहलके ।

—'न बा सुनिकेके कियेक न ।"

किरण दल बा दल करवाक हंग ओकरा नीक नहि लागि रहल छनेक ।
पुन देवक । इतराज हूँ' दिपीक ।

—'का कयक दय शंका ।"

किरण देवा कयन पदारे छनेक ।

—'कोही मुन देवेक ।"

"पुन देवक कहि, कालि कोरे मुन दिपीक । इतरा ओकरा दवापुर नहि
काय ।" किरण निवेक अरसे कयलैक ।

"किरण ?" इतरा केनेक विचारन पुनकके ।

—'किरण की ? का' के बहुक संग कयन किरण केन टाका कहि, मुन
केन कयल केन कहि प्रकाश टाका मुन विपीक ।" किरण अपन बाय पर
बर्षा कहि ।

कालिपुत्र काल

—मुवा हय तश्चके* कवन बेजे छिएक ।

—“बहुविध जन्मक कौन मूल्य ? कबल तें बहुतों ऊपेरा होय काल तेने
 शक्तिशाली तुलना भूय होय । हूँ समय प बलक जन्म तें मूल्य मिल नैसक्य
 बी, एकदम कार सही ।” किरण किछु कठोरता से बलशेक ।

बाद का सीध करके मुझ को पीकि देत । बाद की कड़' नहि कहैत
छल को दुख भेन । यहजुधुन धरि रहै छल । किनग होकर उर
धरि रहै कहैत ।

सुन्दर बचन कहते सुन नहि ? जो श्रावित होइत पुनरावृत्ति ।

[illegible][illegible]

अथ यथा शिवो गते यः विद्वान् शिवो वैश्वं अर्चति । तं गच्छत्येव
 शब्दात् गच्छत्येव पुरुषः किञ्चन । न न पश्यन्ति तं पश्यन्ते जेन च । तच्छिवं एकमेव
 विद्वान् । यत्नं कस्यचित्तेन शिवोऽपि ज्ञानविद्वान् नानि गच्छन्ति ज्ञानं । यत्नं च
 चित्तेन नानि नहि । एकोऽपि नहि । इत्येतत् सत्यं यत्नं शिवोऽपि नहि । यत्नं च
 वा ज्ञानम् ।

432 7

संस्कृत भाषा-प्रयोग : प्रकाशक श्री. कृष्ण दत्त
पुस्तक संख्या : १०८

[illegible]

तत्तत् परिचित कलंक, शब्द अपन कलंक । बोलने बैठे हुए-यथार कोन
इति गुरु कलंक ।

को ज्ञान के बरतों के बोझ से उठा खंफू मुहू गाल, अंशित काम हमने
बुझाये यदि देखेंगे ।

बा नर दहिया दूध मूत्र विरहाद यन्त्र प्रोदरा रेलके कपराय
बा स्नेहक मर्कटः ।

होकर स्वयं गङ्गा में स्नान कर लक्ष्मी देवी का वर प्राप्त किया। जिससे
इसलिए बड़ी सन्तोस, क्षान्ति उत्पन्न हुई । ●

सितम्बर १९६९

॥ दशविंशत्यारं ज्ञानस्य

बाली एतदा सोन बलि जे बुध गीर श्रद्धा भक्त बलि दिन छानि छे ते रहति ।
 ७ पुता सभ सोसर सोसर जनेत रहैत गतनि हस्तुं जे बुध गीर न भिनि
 न छैनहु ता सोसर सोसर कर नरेन भुनहु । माव भेदि न स भवनु छनि,
 दातर घर न भेदने सोन भेदने छैन । ते किछु छानि न छैनहु सुनु
 बालि धरि सिद्ध नहुनहु । मोह गीर छैनहु । हय गीर ज्ञान न छैनहु धर
 छर नहु जा । बालि पन बरनहु भ भय छेदि दैलक हय दिन गीर दुसरे
 सग बोलि रहति ।

सौरा घेर हूँ अति खुश छी ! कीना मे सखी ! कजि तेहन
कवन रीति हय सखी ! तेन हूँ अति सखी ! तेन हूँ अति सखी !
तेन हूँ अति सखी ! तेन हूँ अति सखी ! तेन हूँ अति सखी !

[illegible]

मामूँ में सबका प्यार होई
होई तो हिन्दुस्तान !

[illegible]

हैं, तब ही कहि रहस्य छलियोक ? हैं, बखत हम बेबस में एहि नाम के
 शायद रहें । अतः हम बखत आगे के रूप को रं जगल नेहुरा नेहुरा देखि का
 नेहुरा देखि न कहि लीये । १. कथिय एतु नेहुरा रन कम बोलत नहि छनैक जे
 देखि आह्वानक नकरत लयन लयिक । नामक मन्त्रकी नकरो कोको कफरो कोकी ।
 मुदा एतु क. एतु क. नामु एतु बह नामु एतु मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
 जयैत आ एक शाय केकोर नामे काय ना-हरी करैत । नाह-हू माथ पर नाम
 क बह । नाह-हू जेना मन्त्र नाम दिने देखि नेहुरा के को को आयत ।

नीचता सेल रहित हाथ धरे से रहते । शत्रु तब राति शहरमें
तेन लगानाहि कहिसे पन स कहि होउम । बुद्धि सम तेनुह मान लग क
नेह नहि । २३३६ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ३२ । ३३ । ३४ । ३५ । ३६ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० । ४१ । ४२ । ४३ । ४४ । ४५ । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५९ । ६० । ६१ । ६२ । ६३ । ६४ । ६५ । ६६ । ६७ । ६८ । ६९ । ७० । ७१ । ७२ । ७३ । ७४ । ७५ । ७६ । ७७ । ७८ । ७९ । ८० । ८१ । ८२ । ८३ । ८४ । ८५ । ८६ । ८७ । ८८ । ८९ । ९० । ९१ । ९२ । ९३ । ९४ । ९५ । ९६ । ९७ । ९८ । ९९ । १०० ।

की कहते ? हाथ ऊँच किएक नहि वेतहें ? कीना चरतहें ? की
 काँव लख कहिनिगिन ज टपल मधुर सुन रहि वेतहें । जनत मधुर
 द न भगवान साँव रातिके नैन मल्लख नहि जाल गुमियन तेहि दिन राति
 नहि शाप दीव जनक कहिनि वेत भगवान की दन हूँ नहि कहिनि ज
 नहि दन कन्या कन सुखि की दन नहि भगवान जइत ही जनत साँव
 नहि दन लोक गहन जाल यतिन भगवान की कहि वेत नहि वेत नहि वेत नहि वेत
 नहि दन जेन नहि दन भगवान जइत नहि दन जेन नहि दन जेन नहि दन जेन नहि दन

[illegible][illegible]

[illegible][illegible][illegible]

छोट भाई रमेश कहन राख जेसकिपुष्प का रिपोर्टें हुअये द' देवक ।
 धारी मंगल सञ्चार पत्रिकात जे का नै देखेन सञ्चार' क' मण्डल बोर्डि-
 मा बि पाकिटमे राजि कोउली से बाहर बाकि नैलहु' ।

बाह्य कोठारा पर भीराक धूम माव बा हजर काह बहिन पछ उठ्य छल ।
 तब हमर पसरा छलक मुटा ह्य बहिन शक ककर ह्यो केत अछलहुँ को ह्यो
 गदहटि भगवती घर न भनकत । भवभूषीकेँ प्रथम क' बहिन शक ककर
 दुनिपैक जो कौन शत्रु ह्यो म' पर भयल मय । अकार मुप करवाक
 बष्टि म अपग कनेन कहुनपैक चार न जो कन निसक छै पछ टीक म
 अवतक । बाब ह्य बाबि गेल छिपीक, बस होत न' बयतौक

चातुर्वर्ण्ये^१ क्षत्रियस्य वैश्यः शूद्रश्चैव ब्रह्मणेति । एतेषां पञ्च
शूक म पयसि । अथैवाह तन्माह श्री उग्रानन्दे शास्त्रे यत् स हि उप जगन्नि वा पाप
पाप्मनस्तान् भोषयति ।

शान्तिवन नमस्ते नदी इति नमः शान्तिवन नदी इति नमः शान्तिवन नदी इति नमः । शान्तिवन

[illegible][illegible]

कृष्णकालीन हेतु ज्ञान पर विचार से बड़े सत्यन ज्ञानवान् हेतुक हेतुक
जोनेलिन ज्ञान की ओर लक्ष्य पर गन्तव्य हेतुक ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक
हेतुक ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक
ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक ज्ञानवान् हेतुक

भुवनेश्वरी देहि जगति की की राहें वा राहें जलौं कि हम बीचेंदे हीकि
देहिदहि - राग पैठ सँक ३ रा. २ पं. छः । धरदयबाग कांनो भाव महि
है ।

[illegible]

मात्र परिचयक ज्ञानवत्तु कः पदं पदं = २६ अथवा २७ भाग दुर्लभ हो सकते
विशेष नष्टि व्यवहारीक ज्ञान का एक अथवा २७ भाग दुर्लभ हो सकते
पदं पदं २७ भाग दुर्लभ हो सकते ज्ञान का एक अथवा २७ भाग दुर्लभ हो सकते
पदं पदं २७ भाग दुर्लभ हो सकते ज्ञान का एक अथवा २७ भाग दुर्लभ हो सकते

वेद-उपनिषद्-सं. १३३
 अथ १३ अथ नाम्नात्पत्तिरिति ॥

मास १२५ ईश्वर वाहननि- संभवे यथासांग कथन भवति नहि संशय
है । श्रीकृष्ण मन्त्रे सर्वं पूज्य है ।

सूचना

॥ १३६ ॥

उहि नेर कुलक क क खाति भाग्यवश पति देखि- बेहूत काहरी की
यह कनिया । धाकरा सब की छेक सुनत को बाहर बसि हवा र जमा
इगहा छेक अगरे अगरे नहु दरे कानेक

यह खु रहैत । राम ई खुने मनुनिक छेक अगरे अगरे भाग्य-
हुनका नहि देखनहि रहि ?

कनकाकी दाद तेन वनने नै कनिया । उमर बढेबा बह बहरी
बसि कासी कुलिका के देखे न जा न बसि बाहर जामे दिम हन ।

कनकाकी उठ क उठ म देखि न ब दोहरे सुपारी बसल बा
मनक हाथमे वर्ण-बर्ण छन्द द इतकान सुपारीक टुक नुहने ईत कनकाकी
बनलीह-बाह दकर कोन काय ?

बादने नहराईत कान कनकाकी का हुनका देखे कीमो छम हुनरा
विचित्र दृष्टि देखनक । माय फेर भनका बरमे नुहने दम भाव-भाउक
अवस्था मे नै नै हन काजने मे गिठक बानरना पर बाकि नै नै ।
हाम नमोछरिक बाहर क अगरे क संग बाहर काना गन बा रहल छलह । एमह
बादने बसि गेलहु । एम अवस क नमोछम नै नै बलहु । एम नै नै प्रकाम
कयलियनि । अतक कुरी कायि नै नै-

-कनका कयलहु ?

-कानहुने बरनहु काय ।

-एतन रहलहु, सुनहु क ?

-कुट्टी बढी, कुट्टी ब' क' बाबल को । काहरी पुनिय छनि ।

-है, है के न जितिये केन । कोना बरन कय ?

-बसि तेन कोन छनि, बहाद क रहल छनि ।

-कोकरी केन कलेस छह ? कोन अगरे कय ?

-कोन क' बहाद' पढै छल बाह ।

कनका न नै नै नै । सुनेन उ बहाद कय बाह दैत छह कयरी
बाबली केनो होके करलहु ।

-नहि बाह । कयरी बाबलीक ने बहाद कय छेक, ने कय ।

-कनका केन कय छह । बहाद कय कयने बाबलीके दैत
हमरनाकनि त दैत नै नै नै । कय बाबली कय छह ? कनका न नै
बाबलीक कय छह ?

वि ५ कय कय कय छह हन खु न गलह । कनका एमह बाबलीके कय
क कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कय कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कय कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कय कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कय कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कय कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कय कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।

कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।

कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।

कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।

कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।

कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।
कनका कय कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह । कनका कय कय छह ।

एक सौम्य एक भाव के साथ नृको नाचें मंगल निर्यात विरोध
 न गति रहनाई जो जीवित जात के सेना नि समग किन्तु तेंद दूरन बुधधाय
 रहिके चल जवसह ।

साथ सुनिक व जल - जलपत्र - रानी राई - भुवा बाब - महिपटवह - गच्छ - म.से
किपको से बाब - महि - नयन

[illegible]

‘देव भ्रातृ-समूह यथा वादे सन्तु । सात-भात पात दृक्का लोकविक पत तं
मरितक सां= ज्योतिष नृप बापादी विहितान् मन्त्रतद् ।’ यथा कवेः शंभेर दित सन
वेत् । तुम कोन्तो ज्ञानवासक गहि हं तपविनेक ।

[illegible]

ਅੰਤਰ ੧੯੭੫

आठम दशकक कथा : प्रभासक

गृह-विराम

4 पिला

❏ दशरूपकाण्ड

● **देष**

□ मालवाहक दोष

॥ पुराण वाचक लक्ष्मण

७ मयराक्षसि

युद्ध-त्रिराम

एतावत् कहियो मे भेष कर्तक । आवाय पर दणकी देसति छति—
जहनि एकतरि । जन्दाव १४२५ जग जग जेक । आदि दिन मोरे जगहरोच
पुन हीनत काक से दणु से आदत कर्तक ।

“ह्वर नवाक एतु वैर एतु-एतुन आका जेना पोथर गुलाब हो ।”
हरकी बनेत छति ।

—“ह्वर बापस बरि माह कुवा होइत छेक, दु-वर्तन पोका देनाथो के
पुन्य ।” अपर बापस छोटकी बनेत छति ।

बनकी दूध गाँह काकन से बनेत छति । नूना छे स्थाय करजा सेत
विश्व ३ नूना नूना नूना नूना । नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना

पानिसे दूध से नूना परति ह्वरसे एक मोथ जलन, अपर नूनादेव
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना

नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना

आदये इन पापुसे छोटकी बनेत छति —“नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना

नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना
नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना नूना

[illegible][illegible]

रहस्यी भावन मे वैमर्श-वैमर्शि कपूता ज्योतिरुज्ज्वलि । उदिकं बाह्य
दलान् दिशः शरीतं सन्ति— एतन्भावेन प्रत्ययानि यथा दृश्यन्ते इति प्रकृत्यै एकं वाच्यं
नूतनं गद्यं देन रानयति । इति वाचि संलक्ष्यं यथा प्रकृत्यै न देन गद्यं न र
मयान्, एतन्भावेन वाच्यमिति वाच्यप्रत्ययानि प्रकृत्यै न देन गद्यं न र

छोटकी पाखंड-पाखंडों बचने हिस्साक कथाय दित बल करैत छनि । अनक
जानन मुनबैर बनेत छनि—अनकजा मजबुदिकी व भुजय इयन मुनबैर
अथन दुम्हरेक नगरक अहम व अपन मोग मगर देखावेन से बहुरीर सभ हाथ
छरित मरुत कमिमीक बनयन क नुराद उहनु छनि । सभक हाथ यं बाहु आ
मुन सौत संक ।

अबको सल्लाह के लक्षण आदि काये केलो बीरसे बहीउ करिक-सिद्धि से
बाए दुममे बहुरि कमनी जे भवतु मे संदेश भान मनन गणि नैदुन अदेकी
भावर ज ५ त आगे कउन करन बनारस मन्त्रि सेन इधि ए च द्वायक
नायो मोन रहित अघि ।

भायका मुह विषयगत पर प्रथम दिने प्राप्त वजेल द्वि- पाठक
कारणों त ह री अर्थ । नून भाग्य-पाठ । पद्वि दित्त-कर । आर्य
प्रभु-निर्वात, मकर काष्ठ ।

बादल बाढ़ि हनु मनसा मे जाति जाइत छल । कन्ध फाट केन
बाइल मे और पहरि बाइल छल । बाग बगिचा सब हनु बिजुन भेल

हर्षवर्धन राजा का नाम था। उसका राज्य था कन्नड़। वह एक महान्तक राजा था।
 मुनि ने उसे बहुत ही अच्छे से पढ़ाया। उसने बहुत ही अच्छे से पढ़ा।
 वह राजा था।

पुरा एसा त कहियो के शीतल जर्नेक ? जावन मे क्षम जोडाया पर
मक्की एकदरि बैधनि जामि । बास्कात जातुआ परमरि बैध जामेक + जावन
मुन जा मज्जाहू जाति गृहक जर्नेक । गह गन जावन बास्कात जातुआ पर
मे मज्जाहू जातो । मे छार पैर-पैर जावक गाछ जा जोडाया पर एकदरि बैधनि
हइयो । जवना जवतुआ बचक जातु मोह पटनेक नहि जाति कतक दिन पर
एसा त कहियो के मज्जा पडल जामेक ।

[illegible][illegible][illegible]

इति आचार्यस्य प्रति इत्येवमिति हिमालय तत्रैव चरन्त्यापि भूमिनि पथव निहि
 त्तः, नहि तत्रायं तत्र - इत्येवमिति भूमिनि पथव - इत्येवमिति भूमिनि पथव -
 इति हिमालयं यः कदाचित् शब्दः प्रोक्तः, अथवा भूमिनि पथव इति शब्दः ।

५. यदि α और β समीकरण $x^2 + px + q = 0$ के मूल हों, तो $\alpha^2 + \beta^2$ का मान ज्ञात करें।

[illegible]

“तोही केहू कोइय नैवाच होइत कहि : एकउ कृती सोया था बापी
नग... ..
कहे समझा बरलन आबुदी छोरा दिविदेव” मरकी बनेत छनि ।

मोहकोपी कथक कमलधर के लिये करत जगत सज्जन हो—।नेपाल के यदि
पुत्रियो प्रभन महाद्वय सेवक शक्ति शत्रुघ्न सेवक से वे भक्त बन्धि हन
निष्कर्ष का दोषक कोकरे कीकाइ फला बनावक । फल नहि नूतन है ?

एहि प्रकारे कोउ सँस मरि दुनूक स्वास्थ कायस समेत सकोके । यसरी
उ नमिसा उ को न रोग लागेको भएन । यसरी न भए दुनू कलेत रोगी भएन ।
दिलभर्या सेती काउठ रोगी भएन ।

गणपति जितनेका । कौवा-मुठा सब देव नेनेक । देवा पढ़-लिख सबनेक ।
 श्री गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः ।
 गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः । गणेशाय नमः ।
 दिव्य भजन कोमाहा पा दीवजि बरनि—“हृदय सुभक्तों तें बहुत पार सागत के
 नातो पान सन कोसी हने कुमारि नेदी कामने बीजावत फिरत जा हूय निरिभक्त
 बैसल रही । गणेश कानि लोक सुभक्तों कोनी रहि कोन लोक निरिभक्त ?”

इसकी सफलता के कारण मैं कौन सा कहूँ—“मोहों में न जाने जाया”
 किन्तु यह सच है कि मैंने अपने जीवन में बहुत कुछ किया है।
 मैंने अपने जीवन में बहुत कुछ किया है। मैंने अपने जीवन में बहुत कुछ किया है।

सिनेमों के एक शक्तिशाली युग में प्रतिस्पर्धा प्रदान करता है जो दर्शकों को प्रेरित करता है।
 २. निरंतरता प्रदान करता है: यह दर्शकों को एक ही कहानी के अलग-अलग हिस्सों में शामिल करता है।

[illegible]

अनेकही विचिनमे पठिया पर साहर बसैत बाजमि -^१छोटहृदिर एहम
मुसल । ३६२ पं. १५ क. तं. लं. धा. नहि करैत छन्द मुकरा भाव लं. रहत
बसि जोद ।^{१०}

ममम धर्मो विचिंत्येत् ततोऽपि संनितुं शक्नुते ॥ अत्रिः ॥ अत्रिः धर्मो विचिंत्येत् ततोऽपि संनितुं शक्नुते ॥ अत्रिः धर्मो विचिंत्येत् ततोऽपि संनितुं शक्नुते ॥

उ. सोम राउ डिप्टी सीड जेवै। "अमृत पर्वि क' मे जयसक
बलि मे देवदेव (श्रीना) मे देवरा डिगमिदेवे काउ क' देव बलि।"

अथवान् कौरवजन्मोपे हिताय पराधरि क देवप्रिये । एवमाके सेहो साह
 सग राजः यथाध्वः शयने गुप्तमुद्र इति च वि पात्रः नृपराजः वाद वरजः
 अपनी आचारार्थं वाचकः — “अंकक कदेव उग्र भर्तृकः कबुला पातं कमेने
 छवि ।”

छोटको किछु कहैतैक मुदा जेदा सामने बासि गेलैक । सबानि क' गेल
 छैक मुदा धरम हावफ बाजै । छोटको बिबाह-अर । अंगित मेल पुठो
 बासि गेलैक मुदा वा र हन । छोटको अपन आसपास बासि-
 पुठो न-क रे छ जेदा जैन जैन । जेहस मुदा जैन जैन क मुक्ति । फलदा सामने
 जे उठैत रैत बासि । छोटको छोट रैत बासि ।

कर्मों के साथ अव्यवस्थिक । अथ है मनुष्या मेम कर्म को । विद हि क'
सति नो वाचनं नरा हि मायु अवर्तते स्रोतः । इत्यादि कहे करे पहिले उ लेख
के पुर्वी से चरण के हृदय-जाति मेरेम गणक सुद्ध हो चुका उपरान्त

हि सने बग छोड़कीये बनवा लेत । फेर जवन सोबाना पर रहि निद्रियवरी
न नालनि । वेसोन बेगसि शेष खेल जाइत ही हुय । न कोनी कज न मझन ।
छातौ तसकपराक बाज्य नहि । एक टाउ चोटकी कलियाँ उबैत कलि न रोसर चरकी
कलियाँ । बागसँ भेटैत छेक एहव पुठोइ बाद-कलिय ।"

छोटकीयो बेसी गजबगजि लहि रहति । बँबरा पुनः न बनवत । बरी
गके रहि गेल ललेक बाँकरी मायुर निदा कयलक । बटकीपाँक दोसरा बेटी मायुर
मेलेक बाता पोती पुनः बाँकरीसँ दोसरा ललनेक । देहा गज बगसँ महर बन
गेलीक मुदा पुनः बटकीक दितवसामे बनार नहि बनवैक । बटकी अपन कोन
पर बेगसि पड़ेक— "हमर पुन बटकी हाकिम कगारो । लोका चंयवा बगूक
कवी नहि लोका बेकरीक छे कगारो-कटोइ ।"

छोटकी जान बेतागसँ हरेक छाती पटनेक बाँका न कहिने
बनये देखनहि न होइत । हमर पुनः न बनत देह बाँकरीसँ पाठइत बगूक
कवी नहि छनि बैकनिहारक छाती कटि बगरीक ।

बटकी तेना बागसँ जेता मुनेके नहि होइत किछ । हमर बगूक । कटोइ
छल किरागी, मुदा बाँकरी बादकी गरीक वे हाकिमो छुपामो करैत छनि न
मरकारी सेत ।

छोटकीयो तेना बागसँ जेता किछु के पुनः होइत— "हमर बगूक छ
नेकातर गज किछु कटिनी छाँटि क रंजत मय रोव । बहुका बटकी हाकिम
को परवर कगतति ।"

आगे मानस भयसि बेनीक बाँकरी पुनः होइत पुनः न बनवत बगूक
नग रहि नलनि । प रनि निहारैत दू छानि दित बगूक जलिक ५५ इ पर । बलन
सहै नहि मुदा दूके कानी कगार नहि छलैक कवन पीर सोन गेक । पगार न
बाइत छलैक ।

हमर बाँकरी कियतोई न दे पर गज कथा गेल । बगूक न पकेरी उ
भलेरी बेकरीक ।" बटकी कहैत छनि ।

हमर बगूक कोन न केर साला-बाली न दुल्लक राकोफ छापी
बटकीसँ फलस देलिकेक । परि गज बाँकरीसँ बगूक न पकनेक । छाँटकी
बगूक सोबाराई निबनि होइत बरैत छनि ।

बटकी कगेट फोर १० ६१ भागन दित देखि पोर बिसनि होइत बगूक
छान न पके मुदा बगूक न पके रहि होइत छेक । बगूक गडल भए न ककरी
देवाक छिदाक छेक नै बरि गज बगूकसँ बगूक करैत छनि ।"

छोटकी रहि क' बेसि बाइत छनि— "छुप बगूक छाँटीपापी के की कोक
देखैत छेक । मुदा बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।

महा बाँकरी बटकी बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।

बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बटकी गजसँ पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।

बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।
बैर बिलत पर बगूक बगूक पटत ललन बैसनि छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि । बगूक न पके रहि होइत छनि ।

[illegible][illegible][illegible][illegible]

वारह हज्ज हैदो कोनो नक नहि छेक । घासमे दुइये-तीधमाछि
 येद बेकस मे हसाह ह न सन न न अध ह पान न सन सेक घटवार अक
 सीबा बाही । का समर्थ माहिने एकटा नोक लभ बाह । पुधरा बाध मे घुरे भुर
 छपछोट-छपछोट तब मे घटवार वहा का छ बाछि । बाध नुइका केही लालका
 बाधे बोलेन अछि जे कनको काछि-मुनि फल फल पन पडल नहुन नवरा घटवार
 के बस भाइ-बाइलेन ज नव राख लेन माहिनेक बाध । सेक देल ? ककर
 देल ? कनेह इर देल ताब अघिम सन लाल पर जेहेन शहीत बाछि का लोकम
 पुरि क पुन वा इतगा पार सन बाछि । उठ-बेठामे अनन होलाह होइत
 छेक सोइ तब उठल रसहि क हनि नोडल अछि । खोलास सम भेजेन एखर
 कोन्तर न कि नोडल नरा दुव । न बाइत मछ बायो-कोनो नव-
 कोनको नान कुन बाइक कानमे के न सनत बाछि । घासमे न नोडल रहि
 जाइत अछि कि ककरनेते नयो न सन न हावने न न सन नवह छुटि
 जाइत छेक । बोहरि जेस पार कनेल अछि । एकदम कवकी सेक लागे कान
 नयेन बाछि ।

[illegible]

424

[249]

उत्तरकाराड

[illegible]

बाबू सरत बाबू कहे हमरी । हम काम कदा रहि जिकि सकसहु ।
हम तँ पोर पुरने बिन्दु पर जाहिरिया काटि के रहि देखहु । ●

सितम्बर १९७१

[illegible]

जो अद्विग क्रम में जहाँ क. लक्षणों पर एक पंक्ति खर्चों खर्चि। धीरे धीरे
 छिन्न-छिन्न समस्त सत्त्वों में शुद्धता लब्ध होइ। आत्मा में गहरा मोह
 निवृत्त नहि। मोह मयक मोह का नहि ये नवन, दाबू की नै खर्चि नहि
 प्रिया प्रकाश।

[illegible][illegible][illegible]

नरुसराज

[illegible][illegible]

—“हैं कर्तव्यें बण्ड खसत हूँकर मेना तुमक कपार पर । बाइहू बर्ष कर
ने पाक काहुँ क जेठ जुँक । बर' के सह्य रह्यं न करदस रिपेस बाइ नहि
बाजलहूँ । ते' ने मदर जीविष' काबि मेन ।”—आठ काको रहर ।

‘‘आपटे दादू, हारवजे पर अलि, कुनि लेट । ते ईवाक कम, से
म वा म वा सानदा बाकने न नैम परद छंद सकि जेने उसादु कडियां बितियावै
नाइ बसतगि, अप्पन जहाँ स्वसति ।’

[illegible]

—'हरदत्तों पर छवि राम, मुंछता हूँ बरखें हूँ ।'

[illegible][illegible][illegible][illegible]

५ ५ ५ ५ ५

बान बकल भागल केनेक ॥ दुवै सप्राद्वै भाग बकल लीस' लागल छलैक
क २ बान बकल भागल सान प गल छल ॥ भागल कर २५००० पर मोरछ
= २५००० भाग ॥ २५००० भाग ॥ २५००० भाग ॥ २५००० भाग ॥ २५००० भाग ॥

[illegible]

१४५ मज्झ-सुत्तः क. ७. ६९ द्वितीयोऽध्यायः पृथक् पृथक् नो गच्छन्मग्गम्
नहि भूत्वा तत्रैकं भवति । अथ पुनरुच्यते किं वा तावत् नहि सुत्तैकं स ह्येव
कीर्त्तो ब्रह्म विद्या यं सर्वज्ञं समम्

[illegible]

सोता जैसा लकड़ आदि कुनडा- बहि पिगलहुं ।

“तब मैं जाना कि मैं सच कह रहा हूँ।”

[illegible]

अकार = क प्र न ह य ई ऋ उ औ वान वृ ऋ ॠ ऌ ॡ ङो म नृ
पिं कर्णिका मर व ज की यज्ञा नमः का मृ मय उन्तः । तमय ई म ई कथन
छन । नो म मंछे म छपने भी मंछना हु मंछ रहने—माना कथितम्

948 1

सुनन्दराम

[illegible]

श्रीवा टीकेंत सैक—'की कीच' मसल्लह—'कैर बरा येनह'। इतें एतेक
इय जेस हबरा कातिक २०

शरक काष्ठ यं सोऽहं हृत्करी वैभवं कायस्य धर्मिकं मुष्णकं शरं यत्तु दृष्ट्वा
 कुर्वन्क—कान्तिं विविधं ह्यत्र प्रथमं योऽहं यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
 रत्नप्रथमं वा यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
 पूर्णं यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
 शरक काष्ठ यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु

[illegible]

✱ ✱ ✱ ✱ ✱

काह काह! बाबू बने दुर्लभ । हेतु दिन आज रहि जाहि प्रिय
भी नर सबहु को प्रीति जगदी माइ लह । सीक भी कहति हुयरा ।

साल काफ़ी कम कमलधिन । स्थूलि हैदा कहु हमार । कुच पियाने
कियाह । एनेक बढोर बाहु बनह । किन्तु हित ककि बाह ।

तीनु खंडी कवन कवच के राशि की विधा के लेल छल
वास्तुकी कोविदार की, प्रदत्त काल का पुरातन लभ भवत। प्राकृतिक का

15554

I two

[illegible][illegible]

ये विद्या होंगे। कवि 'परमेश्वर' नामक लोक गायत्री छंदि ब्रह्म
छंद गति पर पाप क्षमिष्य भाग्य छंदि क हस्त ज्ञान भाग्य
मित्र नष्ट ब्रह्म ज्ञानि मयि । भवन बाह्य संदेश हैक भाग्यना रूप वि
भाग्य विना अभिमत भाग्य सख्य नष्टी गतक । भूदा सख्य नष्टी ने भाग्य भाग्य
जाह्य गतय नै को त्रै वेद-वेदाङ्ग छंदि । भगवत पर विधि दक्ष भग्य राय ।

मित्रादिन होंगे भुत पल्लव छन । सँगा सँगा उठै न छे न सँगा
इस पण आग सटकन छनै आ सँगा न सँगा छनै छनै
आ सँगा छनै—“एसा हँवैत किनै छे” न सँगा
सकै न सँगा छे” न

औ नज्म का बल प्र गेनिक नज्म सेवका आनन्द प्रेस ३ मुद्रित
मे एकत्रिंशो अंश अग्रिम सरक प्रेसि दे. अ. इ. पाठक नद विज्ञान
धोक का लो पाठ्ये-गर्भिते सेवकादस वहीक प्रे

सीला केर हँस' मगमैक—'त' की हेतेंक ।'

पक्षी खां पकटा जवांन प्रसन्न कहलकै - अ बिबाहुत बर भी हांन

ब्रह्म ११ -

१५६१ (११) - श्री लक्ष्मी वेंकट ।

[illegible]

1851

— १११ —

—'हूक की बातें ऐजिबैंक ? त'हीं! भास नुमानकई से' त' कइ ने ।'
भबराहो सीधा बाजि बोलैक ।

या अनायास शोकर सम्पूर्ण करीर में सनाब करि गेलैक—एकटा
अपरिचित उदात्तक लनव सीने गाली गमक लगैक बा कहि गालीक
बीच टाटि धरनि पुरनि मुन्नीर संतक ओ मन दुखि = ऐश्वर्यको बा गरी आनंद
सं प्रकाश देहरी मणि केरकी न ले सुभई देहरी देन छिद्योक वे की योग्य
छेक ११

कञ्जु विरोधक बाबास भोक्ता यहि संव लीक । बापय नाच
 सेवा हर देवतासे ये कंठ्य के सुधी सोचके श्री कानि इहिक सनेक
 हिवकि राजस पनेक । के नवियन मन नय के हार सनेक । कनेक कनेक
 सो कानि ये कनेक बा बाबास विम नकेन वानि सनेक । सम कहि देवनि ननु
 बाबास । यहि बाबास कहनेक । सो । ॥ १ ॥

[illegible]

“एक बाबा ! — एक बाबा !” ज्यों जहाँ-तहाँ से रोद मारि रहस
 छत्रक । बाबा राम परमात्म नहि जा रहस छत्रक बाबा राम बाबा : “ज्यों-त्यों बा
 रहस छत्रक । छत्रक के बाबा हैं ब्रह्मदेव काहि रहस छत्रक ?

३३१ आर्या तन्मयः । अतिशय वेदः दौर्लभ आर्या बहुल कलक । अथवा
हृदये प्रकृतं सादृश्यं कलकः । अथ आर्या अः प्रकृतं विदुषी हृदये अथवा ।
अथवा अथवा अथवा विदुषी अथवा अथवा--

॥ परम ब्रह्म ज्ञान, जहाँ माया में नहीं निकल सकती वहाँ माया जायाल
 दही, तैल में डूबल लड़। किन्ती वस्तुने जो मिश्रित रहने लगी मूढा के नहीं
 सकल ।

1955-1956

1938

१. हम अहो के की कद ? कृष्ण जित नहि कह्यो । अहो माय
 यत्रिका लीने जाय कृष्ण लक्ष्मी नहि जाय । न हीने कर्म नहि कर्मि । अहो माय
 कृष्ण नहि कह्यो नहि । अहो माय कृष्ण नहि । अहो माय कृष्ण नहि ।
 कर्मि । अहो माय कृष्ण नहि । अहो माय कृष्ण नहि । अहो माय कृष्ण नहि ।
 अहो माय कृष्ण नहि । अहो माय कृष्ण नहि । अहो माय कृष्ण नहि ।

[illegible][illegible][illegible][illegible]

पुनः हृदयं च अकरोत् कथञ्चन— अतोऽहं तान्तरात् प्रायः च ॥३॥

यत्न इव प्रकृति रस्य कोटि रस्य विना यत्नः प्रकृति रसः सः
 यत्नः प्रकृति रसः यत्नः प्रकृति रसः यत्नः प्रकृति रसः यत्नः प्रकृति रसः
 यत्नः प्रकृति रसः यत्नः प्रकृति रसः यत्नः प्रकृति रसः यत्नः प्रकृति रसः

45 = 1

ਦੇਸ਼ਾਧਿਕਾਰੀ

[illegible]

नीलाक झोंखक पीर सक-दज सँ 'बक्क' खरैत छैक । स्वेष्टत दिवस हँम
-दबंद चरैत सकै जन्म ।

“नदि सीता कोम्हर भहि, तास दिस बन । पौवत बस पहिले ते बात
जहो सीकरे” नहि कहनिबेक, से हूब कहवक, ने त कथा बसमुन रहि जावत ।”

● रत्न सल से रामराम से की-की येले सले ? ●

陳文田 李元治

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

(१८५)

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

होलदिन र अविनाशक बलि के रति :— जालि संकर मुहुर पर होय कणक
बाज सगलधन— केहुन बलनी हो तहुन मोद । बजा बलि क :— :— :—

अविनाशक बहिन बृहत्पुत्र बकी क्षमति—“अनाथ बकी तू तूने माया
साध कर’ शूल मादि । कपटा-वचन मनी क’ गयो ?”

[illegible][illegible]

१. नमो भगवते वासुदेवाय
 २. श्रीकृष्णाय नमः
 ३. नमो भगवते वासुदेवाय
 ४. श्रीकृष्णाय नमः
 ५. नमो भगवते वासुदेवाय
 ६. श्रीकृष्णाय नमः
 ७. नमो भगवते वासुदेवाय
 ८. श्रीकृष्णाय नमः
 ९. नमो भगवते वासुदेवाय
 १०. श्रीकृष्णाय नमः

सुनील का मुँह खिड़की के दरवाजे पर 'हम क्यों नहीं आया ?' की कड़वी याद
देती लगी। उसने के' के' कहते हुए कहा था। हम क्यों नहीं आया ? संकेतों
हैं के' के' कहते हुए ५५

विभास बोलीं इस होइत बाजनी— “कं ककर मर पसें तैंकं एकन पसेंती करे” भावक हँसलक, त’ तब दिव पंचतिथे होइत रहल ।”

शत दधि बेलेक । नून परज' सगवाह । दुधीठ बापूके हुतक बेला
राकसमाल अहे धान रत व नु । जहो विचोका पाहिये पढेत स मुना, जो
गदि मयानसिन शक्ति गहनाधन । विमलके नवमुलक गंध धान पत्र
पोषक पातंग बेला लेलेक पाल परमाय जगतके भाजित बुद्ध र गलेक
गणक हाकुर चित्तम टोलक अहमय या शक्त संघ शरत छल ह । अंगनम. संघ
कलेकसिधो य' रूल कलवि । जहनाममा का बायले म' कहलधिन 'अहे'
काहिं पोषकवा कयस्थ कक । संघा. पैसा न हो बकर काज पठत हम देव

[illegible]

सुलभ नीकरांक देत कर उत्तम विचारसहित न काढूनि ही गल
नकारात्मक मान्यता असू शकते. शाकाहार पर अधिभार लादून निरवकाश राहणे
देऊन अर्थसंग्रह करणे हेच.

[illegible][illegible]

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

कातर विवेक नहि अवतरे । दुष्टिह नहि बचये । हाउड-दोमान-
 ह न बनेन । बजा काकर गठरेक गज लोक लहारा देखे । हौक जानी-
 अता बरुन जा पाक लोचन नयन नहि नारन छन । बहो बूझ गेछ
 मुँक नयन नयन । दुखन बहो देखेन हे । नयन नयन र
 दन दन ह नयन मुनि नयन निनयन प्रपाण नयन । नयन नयन
 नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन
 नयन नयन

[illegible]

दोषदाक वाच्यर बाबाबाबके एक टा बाह मांन परनेन ? कोठ दिनुका
 बाबा बाबा
 बाबा बाबा
 बाबा बाबा

[illegible]

तस्मान्न अपरं देवुल भवन्ति पुनस्तुल्यवृत्तयेकः । आदिं श्रीमि देवतकः ।
 भागिनी सुतेरा ठाडु फनीक । जो करा गेस । दहने ठामिया श्रीमि किछु रिप
 द हने उरु गल्लस गल्ल क यन रत । थ का कन यन कर कर रतुय । लय
 गन न कान्ता कान्ता गन गहन । क द यन लन तनभ ३ कान्ता गन

[illegible]

श्री हेतु शीघ्र करीत कुर्वी दर सम्भारिक' हेति श्रुतं । त्रिषु कर्मजातो
अपन-अपन शीघ्र नर आनि नर पुनर्क । त्रिषु हेतुनां शीघ्र नर पुनर्क
पुनर्क न शीघ्र शीघ्र नर पुनर्क पुनर्क न शीघ्र शीघ्र नर पुनर्क
हीन शीघ्र शीघ्र नर पुनर्क पुनर्क न शीघ्र शीघ्र नर पुनर्क
श्रीगुरुदेव शीघ्र नर पुनर्क पुनर्क न शीघ्र शीघ्र नर पुनर्क

[illegible][illegible]

मई १९७४

महाहक टोल

अपने बेवारी 'बैल नूकके' कानि-कादिक' फनेउरी दुशिया मसहरीभी
मुनेन्हा पीपक साक तुर नरि-नरि क' गनेत करि । नयेत-मयेत करि
मोटे के केहाव नगीत जेक साक केव सिटिया क' मोकन करी मुने पर
पनरि ज-मन जेक दुष्ट घर नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत
नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत
नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत नयेत

[illegible]

सूर्योदय विरह योग्य है संसाराह, केव नानुस मर्तु । ऐस वर त' नमता
 पादोव मरु केव तेनीव पदम त' नमताव कयवक । वि- अन्तर अन्तरिका
 दन्त नानुस मरुती वर वरु मर्तु मरुताह ।

विद्वानां वा एकदश वरणि उज्जवाह—“संद ईहं शीघ्रं श्री धृतिशायना
यथा । इहानीं वरि येन वरा ऐतन् मरिद येन ।”

मृच्छिका पितर एकदम मारे' जेव छूटसयिक—'हृषीकेश हरवज्या पर हामरे
सुख टोडी । सम्पदा नेतागिरी बांसराजि देव एकाने ॥१॥"

सौच्ये सौक्ये सखि एकदि क' भोखनाय क' सेनकवि, विरचित ह्यै कवि
वेकाह ।

[illegible][illegible][illegible]

यद्यपि नामं भूयः तस्मिन् अस्मात् इदं प्रकृतं संज्ञितं तस्मिन्
 यान्ति किं नूतनं चरितं सौ प्रकृतं तस्मिन् । अन्तर्गतं यद्यपि तस्मिन् न
 न न भविष्यति । अन्तर्गतं तस्मिन् न भविष्यति । अन्तर्गतं तस्मिन् न
 भविष्यति ।

[illegible]

शुभम्। कल मुखा, स्मिता । कतेनी मछर होउ। एकटा हू मा पाछे
नेना न र विप्रेत एकी। कतिन भूँडा कने वंमरा दतु छनैक। ज कतवी मे ताकि
नेदम डेटन तन्किव। बीकर छो गोके कतवी कने छनदि क। मछि तीक हू
कने मातु कछर तरे। मछन छनैक नेदुत मछीन करीत छल मुलका मुदा,
कनेताव जधन भए। कतन छल शुभम् जामक मछीन। मातु जाम गाम छन
कतिन। कछर कने। कतिन हू मछीन हो। नेदुत माछीन कछीन। कछीन नेत छन।
नेदुत हू। होदुत छनैक। कतिन मछीन। मछीन कछीन। मुदा नेदुत कछीन।
कछीन नेत छन।

६८. इसका मतलब है कि जिस गुणमा जीवाविकें वहि बका सबने
बाकर बने नइहैं जे ता सब एक गुणमा अपन जीटा छाय छन सँसु सबहू-
नेका जीना छथि छैक मुदा आज तकें दुनमा स्वत पठा देलकें । देन
कल, पैष्ट बा मोस्नार जीह-बाब । छैबा देख्य समक टैयमे ।

बपन बाग 'डिब्ब' अर्द्ध डेरी स्कूलमें दोन बीना सेनेक बाबाएक ।
 सबस पहन पर पहने गरीबस बा बाबासे गुन्ते हाहा तेल इत गैरक ओक
 मरग गुलहाक १३५५ कउन कउन इति य एग रहेक आ 'वे' बागु नहि गवि
 लकनेक हाहा । यो रनबायो । न साद उहैक, पे बांकरा जहाँ बीठा बाप नहि
 १३५६

[illegible]

'हो गये पुकारि कर' भावन 'नरनु बाहुरा प्रियम रेखि बहुनही' एता बैहल
 भेने म्यां कल्ल महिं शीतल कर का रे भेटलोक पेशलिका 'वनसंभलता' टाका
 ब्रह्म लाम प्रायण लयीक मुदा ट सन करिक काज महिं पदलोक । बावक मुँहवर
 जोक बह टगकुलियार नम यमकजि रु' वैजली लकक गोट महे सभ बला देनही
 'नमक जेदये तक बलिज' का टाकोस बलिजन महे सभ करि केतल ।

युवाशक्ति-विकास योजना के अन्तर्गत देश के युवाओं को नौकरियों, शिक्षा, आवास आदि सुविधाओं से सुसज्जित करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं का अन्वेषण किया जा रहा है। इन योजनाओं में से कुछ को चुनकर हमें पता चलता है कि सरकार द्वारा युवाओं को नौकरियों, शिक्षा, आवास आदि सुविधाओं से सुसज्जित करने के लिए किन योजनाओं का अन्वेषण किया जा रहा है।

[illegible]

गुरुभार कल्याण लोकिक क रहि मेन भेट गयो। अरुतु होइन कल धर्मक
आदिशोधन क आकाशम नवेरा एहीन निक मा जाने रहि मरे गए। सोकार
किरण। इतिहास शोक कुत्रियाँ—कुत्रियाँ वाद शुद्धी —।

आ, बहिया जाह्या कुलमाकें मनीं काळात कायमरा तुजिय कन समी
म ताकाय—'हमरो बाकि नुठयेन । कन ठप्या येन । लीं जिन नेन कीयेन
यी ।

कोट शिव मुखा बुद्धिमा आलोकित क ननुतेक कण्ठमे ररित विमलपरे

九

पञ्चाङ्गम्

[illegible]

कुम्भार हनुमन्तका ५० जठि बेंहलक 'के, बोला ? एना किएक बर्ये में
की बोली है—

नृत्यपात्र साकार कालासि पति इन्दिरा—तत्कथम पुण्या गङ्गामे हलो धाव ।
मने कहे छिहो, संज हिम शोधन छम गङ्गापत्र अह दूदकि पलक को ही
अनी बाब, दूध दे कोरने ॥ १ ॥

— 'मने र ओझा' महामन सहि ससो सामिप हने' बट छन्द ऐ रिसिष्टोम
करहू कान्यौक नाको' मूख शीमि मेत खोक—

[illegible]

का बंदी। पिछले ३० दिनों में १००० बंदी उतारे जा चुके हैं। जेलों में कैदियों की संख्या १०००० है। पिछले ३० दिनों में १००० बंदी उतारे जा चुके हैं। जेलों में कैदियों की संख्या १०००० है।

आ ज्ञान ओसार धियामे पर्याप्त मूर्ध् पंथमर्तिया केक लोक विदा ह्व
तविम रूख नहि ज नि चिकइत ज मुदै नहोम आनि पक्षितरो बुकिमा । अट्टहसं को
मलीक मले कत खबर, अट्ट निक्कलन हलो घरसं धान तिकक थ
जाइथी ।

[illegible]

मा नमोऽहं ह्येत श्रीहिता ज्ञेय ! काङ्क्षि-सत्तरि य वर । एत र्वैष ।
कोष्ठुत वाच वरि मन्त्र ज्ञेय नाति य सक्त ज्ञेय आ तदा मनि वाग्नि-पि सय

ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ, ੨੭ ਜੁਲਾਈ

कैप्टन साहबक पत्नी को तब काठि ठहराहने अठारवाय क रिहायश देकुन व
गजि रहलिन । अकाल टोकि देलकनि — 'वै कइवा केन भइ । हय वै सँत सौ
कोनय'

१२) इनमें सेन उद्यम कैंटरन माहुर शैलिक क प्रकाशने' डेक्कलमिन मेन।
माहुर कालनक य यालक शैलिक गुरुन हंरिषिन कं सतन नरन हंसेल कलमलिन-
रड दिवन् प्रित्त। ई शैलिक कहेत छाप हय अहम् वरित नित्यमि ई सतन व-
हंरि शैलिक कलि ।" कैंटरन माहुर शैलिक हंसेलमिन ।

प्रकाशके समस्तक योगा श्रवण के रहस्य होमिन, कुरा को होमि रहम
मनधिन एनदम निहन्त होमि कतर कन म=हक मृ ब=हक मृ ब=हक
आधी मंग श्रव होमि कतर कन म=हक मृ ब=हक मृ ब=हक

आप नु आपने जन्मका समय केवल, ११ अंगुल केवल दीर्घ आ बहुत कम अक्षर
आ अक्षरों का प्रत्येक ३ अक्षर होकर आगमन करने केवल प्रत्येक अक्षर के अक्षरों का
अक्षरों की एक दीर्घ प्रत्येक

[illegible]

क्या हमें यह भी पता है कि हमारे देश में कितने लोग हैं जो
बिना किसी भी जानकारी के ही मतदान करते हैं ?

कोटहरी संस्कृत विद्यालय के अंतर्गत नई दिल्ली-१०००१४ में १० मार्च १९८० को
 गणेश, श्री गणेश नारायण विद्यालय के अंतर्गत नई दिल्ली-१०००१४ में १० मार्च १९८० को
 इस कार्य को निष्पन्न करने के लिये—

कैटभ माहस कपटि सनस ज अवादिग ३१ अवीत समामन त हुम रोमपा
नेम सकल कौतुस हदि बाइद सध । हेरादल ससुमसि, बादिगि बाटसं सं रामल,
कैटभ साहसक बगोक अविचरि सेहो ह्यो अलसि बाइत समनि—“बाक वद
इउनि कल्ल जय ॥ इवु ने, निराम योना हसप क रहन पयि सेह नहा त
काम न क य सहा रहन दुषा ॥” इउर सोमनि कं नहि बगकम सखि भ
उसति सं तन सध ॥ त न बीर ॥ कवि आसो पति किल इम छियेक मुखा
तीको कौपी रुके नहि । पाविरोसं दिवा जामि बाइत समि केन ।

श्रीमते विद्याभारती वाङ्मय-कौटुम्बिक संस्थान वाङ्मयिक व नीति शिक्षा का
द्वारा समस्त वाङ्मय ।

योग्य राखि मुदा, ज्ञानकर हुंसी दिव्य तेंस करामि । पंथांक क' उठम
 सूर्यज । बगुड बंधन-बंद असल सत्त्व-धर्मोत्तम राखि । आत्म-मत्तन अगमने
 मारि नष्टन करीत, सोही वृत्तको राखिनि ।

[illegible]

संजय साहूदक शायर प्रमोदि गीतर्षि , बाल्ये वेष्टित आश्रमार्थि वलोक भो
वर परदे क शोधर कोठमोड नुवात गेलोक ।

कॉम्पन सन्निव कस्तुर अपर परमाणु कानि विद्या असाधु—हृद मन्त्र
कान्ति न मन्त्र = परमेश्वर इन साध पञ्चन उपपाय कान्ति न विद्या
कान्ति, शान्ति कान्ति :

केन्द्रीय साहित्यिक समितिकार पर बेटी नाक सर्जिक गोल, मुहा गिबु लोक हूक
रहाक आगू रकम कयल १-८ १३३१ गीतवान साहब बाबू १३३१ है
हम १३३१ १३३१ १३३१ १३३१ १३३१ १३३१ १३३१ १३३१ १३३१ १३३१
कायद नहि बसत एव ३१

[illegible]

अपराजित नुव साहकी भव एकदम बरि रोहनि ह्य रोकक, ह्यरा
 रोहनि रोकक । की क लय ह्यर वही ।

माता का हाथ में ले कर उसे धीरे-धीरे उठाया।
 माता ने कहा कि मैं तुम्हें इसी दुनिया में छोड़ देती हूँ।
 माता ने कहा कि मैं तुम्हें इसी दुनिया में छोड़ देती हूँ।

[illegible]

कोटन से बड़े लोना शरीर बन्ध क संलग्नन मुवा हुनकर बेहरावर बूझ
भान गि जयन नी पृ पू बूटन। पंथोरी वो लर ' अडोक मुह' बंध
बन धनु ननक पड य बाध फल दू ह जोपरी जी - एकटस नभसी छो
आ बरी लख ब्याद लख मोहन फा व फल पंथुल वो बिन कं दुए

५० कदम = एकदश लवन उत्तमक के बयान का वि दूहन उत्तक
५० कदम = एकदश लवन उत्तमक के बयान का वि दूहन उत्तक
५० कदम = एकदश लवन उत्तमक के बयान का वि दूहन उत्तक

[illegible]

एतत् न शरीरस्य नैव कस्या

21

[illegible]

मुंबा प्रकाशक वणिज्यारणे मचके' उणे देविह, मी बादवहितके' हंस
देविह निहाय कोटीम बादिन वदने—इष्टत शासनत देवता भाष्य द प पोथीजी जी ।

पुष्प प्रकाशके सभाय सोमवार रविवार काय' समारंभ—एकदम बड़ ही

मन्वीक आकृति दूरदृष्ट दृश्य रहित संक ।

[illegible]

पत्नी काटि विप्रिया उठै दूर नाक व कलत्र । अरवि, अरु लोकेक
 चिन्ता भईत अछि । हन लोक नहि ली अक्षिक सन । अरु नहि छी ?
 हन विना कहियो नहि । व सति बस । यह वं जे दो र अक्षि अरु
 बस हेनियेन बसि बोलन विना कियोक । न वं नभरि हन । हन बसि
 रीत कियेन हनही ।

[illegible]

पुस्तक परिचय एवं मूल्य

॥ ॐ नमः ॥

आज सर्दी है और बहुत ठंडा है। मैंने बहुत सारे कपड़े पहने हैं।
मुझे बहुत अच्छे लगे हैं। मैंने बहुत सारे कपड़े पहने हैं।
मुझे बहुत अच्छे लगे हैं। मैंने बहुत सारे कपड़े पहने हैं।

प्रत्येक लोक कृषि मूल के देशके—जो जाति कोना कर्म-कर्म का व्यवहार
छोड़ि । इसका भोजन तो नहीं करने के विधि (अर्थ) । ऐसे लोगका जोर कर्म-जाति
कर्म के विधानों से बाहर रहति । पारिवारिक विचारों से एकता या अन्धता—साहीन
प्रत्येक कर्म-कर्म ।

पन्थिका बालिका दूरदर्शन नाम है। इन तीन अक्षरों में नीचे १ दाहिने-पंथिका
गर्भो कांति वषस ६ अक्षर अक्षर ६ अक्षरों के अक्षर ६ अक्षरों के अक्षरों
६ अक्षरों के अक्षरों ६ अक्षरों के अक्षरों ६ अक्षरों के अक्षरों ६ अक्षरों के अक्षरों

[illegible]

प्राथमिक लक्षितोत्तर—बाह्य की संरचना का अध्ययन।

इस तीसरे वसों तक दिन प्रातःकाल ४.२० पर सूर्य अस्त नही होता है।
कई वर्षों तक ७-८ दिनों तक सूर्य अस्त नही होता है।

आइ बॉय के लक्ष्मी देव आ गुरुदेव जेव आने मकाज । बरमे
हीनसाक सूबक पोता । न दूखने बरमे किछु न हूँ हीन । उक आक हंरा छेक
मोटेन पानी बरमे हीनसाक छेक मोकर बानन न हूँ । हकन में नाक । ई लखन
लखन पाव कतेन छेक न लखनसाक छेक लखन देव आ गुरुदेव हीन
न हूँ छी बरमे ।

[illegible]

५२२]

पुस्तक खरिदक रथ कथा

धकाद किनु नज्बाद पुर्न इलीक धलाप सुक भ' जाइत ऐक- गहि
 बाब पदुत मोनने धम नुव मोन काका हाइत छक ? बाबा-पूता किदक उ-ग
 होर भ-ले भ- उर उर क-र नभ- 'र'बु कथन पाउ गहि ललैत हो।

[illegible]

तुम्हारे चिन्ता बन्नीके लटि छेक । खाली लीला-पुष्पाणि कुहे बेकि
के क' बर्तन छेक एकर गमक के हुके ? बाब ल' बन्नी बिबाह उगेर
बेल बाइल बकि ।"

[illegible]

पवित्र पुस्तकानुसारक जीवित रहि अस्म प्रकाश अवतलना क हन करीक -
 धिम्ता कबो ? हुय श्री—की पकन हन !

काव्य मासिक साहित्यिक श्री कवच-साप्ताहिक साहित्यिक श्री चम्र श्रोतार

[illegible]

ସୁମନ୍ତ ବାରିକେଡ଼ ବଡ଼ ସ୍ଥଳ

【 454 】

कोहि दिन काज बाक रहि गेल । बाप डेराई कोहि दिन केनि
छोला माय-भाई कहिन मय निपला । बानी लफतारि दुख सुख देखि छलेक
नहनु छै । बापकेँ छह गोन छनि पुत्र । यमुना गाछीमें लप गेलीह ।

इकाएक गेहल गंगान मोल छल । माय बाडीमें हेमनि छलीक । बाकी सब
पलेपुर्वापर छलीक । कौन किछु नहि बचल । बाप कहने होकराई किछु पुत्रक
काज नहि रहल । को दूनि गेल । लपचाप छल रहल ।

माय करमछे कहै रवि भय । मात छल जेना कजरी छाडी भर
बेपस होइ । हुनकर धौपिये गोर जेनामें जहि । गुन दिन बापारमे किमोत
कानि नही दिन भरि गो' काजिय छल । रवि दस वा इन्द्र मेव जोगिना
गुन्य मुही बजरी नहि । गंगामे नहि रहै मेव । हुनका काजिय नहि गुनाय
छनि गेट होइहि बहिउनि । हुनका छ' माय-भर बनि

गाछी कुजि गेली छिहकोमे हाथ बडा बौध मायि प्रकाश केठनीमें पर
हुन बोल ज रहल । माय बदन काय बाज रहल छल । बापेर माय-भर
काज छल । प्रकाशक रस बांकर पर नहि बनि सकल । कोकर र नापर कोकर
पाइ कहिन गेट दीकनेक । माय कहल छलीक । प्रकाशकेँ मुनिबोध रहै बिद्वान
नहि काजक मोल बनेक

गाममें चिटो कावन सरेक—जो बनि तपाय नहि छनि जा धरि
मस लोने क रामा पेट पोसल । गलेक कर्ज बजै मस छ । हुनकाकानि (?) केन
ब बोहो छोरी कर कहल । जमने वाज मछा रहल । बाप नहि छनि हुनका
काजिक —

इकाएक काछी दिना मेव नकली माय काज करैक । जहिमे कोन काज
बाडी कतरि केन छल बदन बरा । कोकने कन जे मछक बाज ल रहल बनि । बाप
बाकी कोकरे मुद्र छनि । बापि बा जहिमे छल बाप जीवित ननेक । बनि
छल ।

मुदा माय निहलनई कहल । बाप मुव इहेन दसके । कोकर सकल ब प
नहि छल —

को चिटोकेँ पारिक ककि देखल । मुदा बापबाई पुर पानी दिह कपने
छनेक—को हल्लु देख चिटो—

पल्लो चिटो छोकरा नहि देखल । पारिक ककि देखल । पल्लो
पल्लो नकला छ कोनेक । चिटो छोकरा नहि देखल । को बदन बरमे ज टक
देखनी पणि पणि पणि ।

बापेर बचनैक । दसक कथाक' न करीनई । बीया-भूत सहाय ठाव
रहल । बापेर बचनैक कोनेक कोक हुनका हुनका छलीक । चिटो कोक
देख कोर मुछली कर लपनेक । बापेर मुछ-मुछ बेलस रहल ।

बापेर बचनैक । बाप बापि गेल छलीक । बापेर बचनैक कोनेक
पुन कोन कोनमे मुनि रहल । हाइ कहिन बाप कोनमे कोन सहाय
छलीक । प्रकाश बदन कोठनीमे दसक निहल बहोना पक पक पक पक पक
बेलस बल । नम प कोनमे एक टा बाप'हाइ बाप'हाइ बा मुयो पसरल छलीक ।

पल्लो चिटो कोठनीमें बापेर बाप'हाइ काज । कोर बीया-भूतकेँ
बरवा लेन देबल-कुन जगल छल । को बचन दसक को एक बर मोतर
दिह देखल । को बाप नहि छलीक । को काज-कलम छ मायकेँ चिटो
लिख बाप —

—को एक दिन डेराई कस बने' बा बाइ तोह चिटो नहि पक'
देखलन न कोनिय रहल बा पकलि छनि । प्रकाश बनि जमनि । नगेठ बनि
जेन मसक मा'मे दसके' बाक ल रहल छल । कोनमे रही जे बचल मस
बाज कन नगर प हाइ ल बचल रहल दसक'मे मुन हल । तोर कोनिय
हुनका पडिने मुन कर बाहेन छ । हुनका बाप'हाइ पर दस क' पमप' पडिने
ई काइ हुनकाकेँ हटव' बाहेन छे' तो' छल ।

दसक ई बाप कोनो छने । हुनका' मस पन बाप बचल कलियेक ।

बनि बचनक बाज हुनका कहियो मुनमे नहि बाकल । को बाप' तोर
मुनकाज काज कोन छ । कपल छ मुनका माय'मे छ' कोर कोर-बचन' को
दसक पडल । पल कहल छिहको माय बा' न बचन' हुनका कोन पक पडि
पडल । बा' दसक'मे तो' हुनका दिह नहि छे' माहिमे बाप हुनका को
बनि हल

प्रकाश कोर किछु लिख बा रहल छल । मुदा नबने कय कोनो हल्लु
देख बल छु न कोनो को

विद्यार्थीकें दृष्टिकोण से विज्ञान के अनेक शाखाओं में प्रयोग । अतः विज्ञान के अनेक शाखाओं में प्रयोग के अनेक प्रकार के होते हैं । अतः विज्ञान के अनेक शाखाओं में प्रयोग के अनेक प्रकार के होते हैं । अतः विज्ञान के अनेक शाखाओं में प्रयोग के अनेक प्रकार के होते हैं ।

काँचो रत्नर तहि देखैक । शोकन आसकई देखैक । जो देखैत तावुनक
बाबाए ह्यष्ट सुनो सुननि । कहाँ बच देखैतक ?

[illegible]

ਘੋਰ ਅਤੇ ਘੋਰੀਲੋਂ ਵੀ ਸਮਝ—ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਆਪਣਾ ਹੁਕਮ

५. हुल्लो बा ओ स्मर बर-बर बोलै खादे कान मोगिआस कर्णक के।
संस्कृत साहित्यिक बाजार बिस्टीट पति नमस्त क रहल हूँ। बबल मंग
प्रकाश प्रकाशन निहाल रहल अ बा स्मर बिस्टीट बाजि रहल कर्णक। कृप
भोकरा कवहु कयो गहि कर्णक।

मक दिवस राकड़ छिटवः कले केप्टन साहूके ईमेन कायन समझिन ए बेन
सदकाहज थोपरी जो महुनन काजकी छय कहै नहि कहि सकैत को जे
हमरा-जाकरिगे खासो हिसाब किताब नम एकापरी होयन बलि दुबरा मोयनि
बासी फटीदारे नहि, बीयरियो बाबि ! नदि सिम' चिउने

प्रकाश बिजुल गहने लगे । केदार मातृवक छोट कर दिखते तुमकिन—
साह कबे दिने बाद एक एक मोन वरुण जे १३ मे न टटनाने बीबक बाई काकत
नैक नात्रेमे अहिक इलाका धामई बनीं छतिथल छल । माइ धरिने कोको पन
माइ पल्लवक कागरी आनन्द छी । बात-बाकल कोनो छनि नैकुर" यस हेल ।
सुनो एक बेर पिकाला क' लेब सकिब कुसादत कहि—

एक समान क प्रकाश क्षेत्र में स्थित दो बिंदुओं के बीच की दूरी को ही हमें प्रकाश की तरंगदैर्घ्य कहते हैं। प्रकाश की तरंगदैर्घ्य को हमें λ से प्रदर्शित करते हैं। प्रकाश की तरंगदैर्घ्य का मान प्रकाश के स्रोत के अनुसार बदलता है। प्रकाश की तरंगदैर्घ्य का मान प्रकाश के स्रोत के अनुसार बदलता है। प्रकाश की तरंगदैर्घ्य का मान प्रकाश के स्रोत के अनुसार बदलता है।

आप एक सार्वजनिक स्थान पर जाकर बैठें। आपका ध्यान आपके शरीर के अंदर की ओर होगा। आप अपने शरीर को महसूस करेंगे और यह महसूस करेंगे कि आप अपने शरीर में क्या कर रहे हैं।

[illegible]

किन्तु दिन की प्रकाशके आगने का प्रकाश बिना नष्ट होकर बा बा ९
कमालके रूप में वह एकत्रित रूप में जो १००० एक प्रकाश के रूप में रहता है
जो बा प्रकाश के रूप में रहता है एक प्रकाश के रूप में रहता है या साक्षात् प्र
काश के रूप में रहता है ।

सिंहसम्बद्ध, पृ. ६, ७-८,

—इति श्रीरामायणं समाप्तम्—

द्वितीयः पत्र विद्या क दीपक शीतो गहिरि मिति यत्न हे
बटवो मातुलादीनि वाच्यते रहस्य कृष्णं सुखजनकं
कथा मति रहस्य ।

मेरा धर्मोपदेश और मैं हूँ पर नरक के लिए जाऊँगा। मैंने कहा कि मैंने
एक ही धर्मोपदेश किया है जो सभी के लिए है। मैंने कहा कि मैंने

[illegible]

बोली बहुत बलपूर्वक कर्णधारों को बताने लगी ।

मृदा का ताप ० से ३०° सेल्सियस तक गत होता है। यह ताप ० से ३०° सेल्सियस तक गत होता है।

मे जो फुर ले खी दूध का लेला नहा गयेक बंधक जे न बचन न लग्योक लेख
बगुन का मरु भन सार खाना बरि, गोक निमंर- न दिये बहने बाला

माहिती सादर करत आहे -

| | | | | | | |
|---------------------|---------|----------|-----|--------|-------|------|
| व्याख्या का पत्रिका | संविधान | अनुच्छेद | खंड | प्रकरण | पृष्ठ | श्री |
| परिचय | आचार्य | का | १ | २ | ३ | ४ |
| मार्गदर्शक | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |

[illegible][illegible]

हस्ताक्षर: सुनील कुमार दिनांक: 15/05/2022

[illegible]

ता' हुनर पहिरा पर कुन्दि खेलेवि । अन्न सङ्ग्रहरे नवन ह जहाँका
कल नहि कहैत जो पाव पान्न । बाही उँ प्रेतक जादो वेह होइत नवन सङ्गतिमान
तो दूरी दिनका देखियनु ॥ १००॥ हुनर नवन बसनायन ॥ १०१॥ विन नवन
हम

वा केर बापद बातके" कर्मिक प्रकट जोईत करबाई: "वसंत बास केर
कर्मिक सुवेत" बाकी जोकर बा इरनायक क बाहुना प ५ होत कर्मिक गहि
पकत केर १ एहि केर बाहुनेक-----बा कि गहि गइ कइत ?

[illegible]

“चित्रा हल उठको कह्यो है को मुझे को जलवा है
 वही है इसलिए चित्रा जि वांते को जलवा है।”

[illegible]

1954年12月

देखा। येन— बपराके— बूटा। येन— ये चेहरा बाह। बूटाके चेहराके
देख बाहो

हमारे बचपन पर कोरी नींद बरस रहित छवि महीं उ बहिरा साहब
कं नीत सी पाइ साहब।

सूठ ! एकदम सूठ ! कभी सूत नाबलि धुलि कोइ दिव । कहां कांनो
उक गां छानि कोइ हमर । न कहिआ काना दिन पार नहि लपेट बांछ । सच
नाहु सा जना बांछन पद मित्रा जात छौंस । पनो जगद बेन कहि पुछत
छणि । अनो प्रान पवन सी बह । जहिक न बंदुग कहि रहत बांछ ।

पकड़ैत छवि सन सी बहिन ककरो— कदका कना ! कुतसी रातिव
विमल-पलक बावि नरपाम कोइ बहल लपे बिलनत बा उद्विग्न । कक
कमलना न केहेन छवि । एहेन विविध वस्तु मुनलहे कल बाव । तहियन न
मानि चित्तन बांस । जाना बिचन नहि येन मुदा न सकत कहननि ने छौंस
मान' के कोनवत सावस । एहेन सूत कथं के सूठ बहताह जो ?

हब नहि क दीसीत कन उद्विग्न न दुखित छवि । एहेन कान बाव जेक
कना ?

पद बांछ ककरो क ककरो— मुनमेन बहिन के लीन दद बेन कक
न गत छ । मुनक बहान नहि येन । पद ककरो छ, गाने-बांछ रहित
छ, ताहि पर ककरो कक ?

हउ एकदम हउ । बपरा छउ बहानि ककरो । नहि ककरो सूत
प्रति गां बपरा । हउ ककरो 'बहाना' ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
हउ ककरो छ । ककरो ककरो 'ककरो' छौंस ककरो रोमकत कका ।

ककरो छौंस ककरो बपरा ककरो बांछ ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
पद ककरो छ । ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो

ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो

बाह सी पंतालि नहि पुन ककरो छौंस नि । ककरो एकदम छवि— निजिल, नहि
नहि छौंस निजिल निजिल । हनको एकदम मुनना नहि ककरो छौंस निजिल निजिल
ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो

बाह के छौंस ककरो नहि सावस । ककरो ककरो ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो

सूठ— एकदम सूठ । ककरो ककरो सूठ ककरो छौंस । नहि ककरो
हमर नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो

ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो

ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो

ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो
ककरो ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो नहि ककरो

अतएव ज्ञातव्यं सन्तु सर्वे यं शोकते शोभा का विद्वत् रहस्यं ततः तत्रापि न वैदुः कीदृश
मः शोभः नः ज्ञातव्यं नूना ई शोभा नना नच, न विवाह आसति कन जा ई दुः
विदुः नना नना । एकर भावना नो हरेकते

हम इनका पेशवांश खेन किन्तु कदु बाहेन छियनि नुहा बां हीपरी एक
 एक नोटि देन छियनि । अन्तिम १९५५-५६ वर्षकें सब ज्ञान छी । असल
 ज्ञान सन लोककें विद्या कहि अरु कहि । एकटा सलहस चीन । बा कहे के
 ज्ञानो कोन जगह छी । अन्तिम पर पहुँच होरी जेन में कंक बाट लोग छी
 भा हम सब छनि । अन्तिम ज्ञान छी । एकटा सलहस बाहेन बाहेन
 रहैत छी ।

गाल्लिक हाई का स्थापना करके बारमान राज्य सिहरण के इरादे से हथकियत का कार्य चलाते हुए उसे कोहिनार का कांच का नकल करने का हुक्म देते हैं। इसी प्रकार ही बारमान राज्य में भी एक ही प्रकार का कार्य चल रहा है।

पन्थिक एवं साक्यमार्गों द्वारा जातीयक कोणित जर्मि जाइन कछि । पन्थिक
आश्रमिप नकटा जाइत हिसक भाक छनि । बांइ नै इनरं इर तगित कछि । जो
कथन प ० रहुत छनि । पठने रहैत छनि । जाय कोन न बाइत छनि ।

हम बुद्ध भगवत् के हैं। अनेक अनेक हैं। हमें धर्म पुण्य
मार्ग में बुद्धिदारी देना है।

बुद्धिमानोंके उत्पन्न आशङ्कामें हृदय राति धरि प्रसन्न रहें। आदर की ।

३५ प्रायः सङ्गतं भवति यः शक्तो परि रात्रि निर्दिष्ट-त कुनैः लब्धः

बंगलूर, १२८३

नवम दशकक कथा : प्रभासक

- ☒ एकलक्षण
☐ हृन्मध्यस्थ
☐ स्थानान्तरण
☐ बहुल्लोक पोता
☐ विकलक्षण
☐ बादि
☒ रसक

एकालाप

श्री चिट्ठी देखते जनोरजनक वस्तु बनि बेक क्षम ।

ओना की चिट्ठी में गहन किन्तु बहि छैनैक जकरा जनोरजनक वस्तु मानैक
 जस मेलनाने निम्नत बिहूँ लुव एवलमजल भुमा पाना क लिखल
 बाधन देह सेह भव दुनै देखिये बस पुनर असल मनोरंजन = यमदण्ड होत गी
 केनाह जेह भव हो न देह अंतर में जोधो पार तकती बाधन यदि मरान सम्भव
 रहि रहती बाधनना नहि नरीत छैक न ककर चिट्ठी किसेक ? हुनर छैक जे
 को मजकरी एतव पामदकाने चला देले जांछि । पामदक बाधनिये होरा बधन पर
 को मोमदक दुपरी लपये बनेत बाछि बरनी चहो को चिट्ठी हाथमे लेत कहैत
 बाछि—“बाधन केतर कपार, 1” आ मूवकिया छैत बाछि कर भविक
 कोकन जेपर मुक्त होत किन्तु बाधनिये होइत बाछि पामदकाने पामदक
 केपार मरैत छी । कोको बाधन परत रहि होइत बाछि पलति न धरा देखैत
 द्विपद कोन दोसर लवक बरबाने सफ सफ निखल पता चिट्ठी हुनरे
 छैक एहिने कोनो बन्नेह रहि । मुदा ककर ?

होना तेबारा लख सेपार कबली पर न पकता कतर पडव सम्भव होइत
 छैक न कोनो जन्मान लगेन बाछि न बाधन चिट्ठी छैक । हुनर जानति देखि कर
 करिक लोक डिटिबाय लगेन बाछि हुनरे छिनिबायन नन हूँमेत को पाने
 मुक्त बाधन कहर बाधन बाछि नहि बाधन ककर चिट्ठी किसेक ?

चिट्ठी हुनर हाथमे छिन्त बाधनिये हुनर पनीन बाछि । एतव बाधनिये
 जेहना में किन्तु जन्मानेन नन पदैन बाछि आ होरा में लवक १५३ हुनका छुट
 जगेन बाछि एतव कतरा जगत बरानि नहिबाय हाथमे कयमे बाधनिये छी कि
 कयमे होइत जन्मान ननर एतव क कोनो पर छिटि जाइत बाछि आ मरता बन्नुनर
 बाछि काइत बाछि ।

एकटा दुर्गो हाथमे छैने दाद बहकतायन बाधनिये जगेन छयि बाध
 नन १५३ नन बाछि दाद नन न कहैत छैक — हुनर छी बाधन काइत

[illegible]

बनसी बानो कांतो रहस्य नहि देखे ! बाहो बाहो नहिबा बेटा य
बैलि "लो लो" मदेदु ! की बात छै

हादा बांधा हावेन कौन हावेन बांधी बांधा ? अ* वैन वं
वेस वे !

बाबूजी" मुद्रा खोल लीं।
को भेजेंगे बाबू ?

बदला काका जिन्नु कहूँ ५ पेन्शन करेंगे सोचें 'तुम्हारे घरवालों' १ सोचें बुद्ध
 एक्को बस्ये नहीं बंदूकधारी छवि' २ 'जो सोचें १० क हूँ अन्तर्गत' ३ 'जो सोचें १० क हूँ अन्तर्गत' ३
 कोनो बाबका' 'बादशाह योग्य' इन्फान्तिन का चर्चों में ' ४ 'हृष्ट' मान लें
 चाहते हैं— 'मान हूँ नहीं' या 'हूँ अन्तर्गत' टर्नियस' ५ 'मान लें नहीं' ६ 'मान लें नहीं' ७
 'हूँ अन्तर्गत' नहीं लिखें' ८ 'कहूँ हूँ सोचें' ९ 'को सोचें नहीं' १०

ब्राह्मणिक नो ब्रॉड स्ट्रीट रैलवे स्टेशन में जवानों का गणना लेता
भीतर -

[illegible][illegible]

५५५]

● **संसाधन**

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 श्रीकृष्णार्चनम् ।
 श्रीगुरुभ्यो नमः ।
 श्रीपद्मे नमः ।
 श्रीशिवाय नमः ।
 श्रीब्रह्माय नमः ।
 श्रीविष्णवे नमः ।
 श्रीशक्त्यै नमः ।
 श्रीलक्ष्मी नमः ।
 श्रीधन्ये नमः ।
 श्रीसौख्ये नमः ।
 श्रीमृत्युर्मुखाय नमः ।

[illegible][illegible]

अपने अर्थ के कारण प्रजापति को कदवाली कहा छोटा धर्म युवा प्रजापति
यह धर्म को जो दुसरे को लोभ और प्रजापति को हरवसकापन प्रजापति प्रजापति
अपने धर्म के कारण प्रजापति को कदवाली कहा छोटा धर्म युवा प्रजापति
अपने धर्म के कारण प्रजापति को कदवाली कहा छोटा धर्म युवा प्रजापति

मुख्यबाली

[illegible]

प्राचीन भारत में इनका कोई दर्शन या चरक आचार्य पर उनके
 प्रभाव से बल द्वारा काया में ईश्वर का मान पड़ने के कारण प्राचीन
 वैदिक विद्वान् प्रोक्त छवि, प्रोक्त छवि से भिन्न !

संज्ञित आश्रयः सिद्धः सन्ने वदन्तः कर्तुः क्षमि कर्मणा वा हुनके शक्तिः
 वदन्तः वदन्तः सन्ने वदन्तः कर्तुः क्षमि कर्मणा वा हुनके शक्तिः
 वदन्तः वदन्तः सन्ने वदन्तः कर्तुः क्षमि कर्मणा वा हुनके शक्तिः

[illegible]

मकल निद्रति जेपास ह लेखन लेखि जसरी व हासि मं मय दिष्ट नके छति ।
बहुतेक हीत छवि । *बुद्धि छै के बाध-१३

अद्विष्ट पीछी नहीं सुनें छविन । दुःख का जल कभी नही छवि
— जो त छुट्टे तबत लयज मुनि : वे उम गंग बसावन ता सक कानक सेवे
काहिसे वननग नहि आदिक् शङ्ख र कहन य त गुजन रह्य पुता कर

२१५ ।

नहि सुख कभीधरे । कर बेकार कृता यय धीमा-धूता । कछर्यो जहि ॥
 कलम ! हृदय द्विजैक हो । कलुषा कपले गुजरियो मरिणि । पुत्र या सभरे । देह अनेनि रेत
 द्विजैक । सुदी हृदये सुखमय । शोक सय मिखा रेत शोक

[illegible]

कौशिकी गणितसूत्रे ब्रह्मसूत्रे रश्मि सूत्रे च।
कर्मसूत्रे धर्मसूत्रे च। इत्यादि। इत्यादि। इत्यादि।
सूत्रादि। इत्यादि। इत्यादि। इत्यादि। इत्यादि।

[illegible]

हृदय बद्ध चाहेन विषयनि मे दीक्षु स्ते, चेष्टा करवनि । पुत्रा बाध नहि
 फट्टा बलि रज्जु बकल छाति नहि ह । हृदये बलम । नान ज्ञाना प । न
 नैकां पदे । कनिषा साकमिको राधेन हेतु ।

५६१ नमः

[४९५]

[illegible]

सादो बीर्या केहो जायसि हउदि 'अब नाम बाप-बलिनमै एकछदि सौं 'न
 क्षि 'अब होन क 'रान बर होम तें नन बाप-बलिनमै सनम
 पन पक दिन उनममैं 'नदिलक्षि 'अबनामनिमैं 'अबम
 अथ लक्षि 'अब नन बर 'नन क 'बोह' मनिम सहुन ननम
 निमोन रहैत सखि '

कसेलक बाहुनि पर एकसे हथमीस काज बासि जाइत छति— 'मुद्रिपे
कराज मे' गेस छैक ! इबाए-तेकरि नारजैक लोकस ?

कलनाक वात योगेन्य वाका विषये लोकि नैत उचित. 'कोन नव वात
वेरव वात। वात वाताय न ई वेरवाक एक वाती ज्ञानेन वावि वृद्धा लकि ।

अपत्त साधनान्न तन्न ईदं तं सन्निधौ न भवति । अथ न भवति । अथ न भवति । अथ न भवति ।
नहि करेत् सन्निधौ नहि करेत् सन्निधौ ।

येन बहुलं सत्यं सुखं वीर्यं च पूर्यते अग्निः । यमयकं मोहं चाग्निर्धोषीक
अस्ति चैव । विद्वान् गच्छेत्तं न भविष्यति । कश्चिदपि ह्यज्ञः पश्येत्तं तत्र अर्चयेत् । हृदय
मतेनैव सुखं चैव विद्वान्नाम भवत्ययं वास्तव अग्निः ।

हैं आज यह केन्द्र यह काम नहीं कर पाएँ। हमने जमीनी
लोकाब बिक्रय के माध्यम से माफ़ गकरने के कर्तव्य नहीं निभा पाएंगे।
कमरे, कमरे, कमरे, यह सब है। हमारे पास है। हमारे पास है। हमारे पास है।
मानव शक्ति एक ही है। हमारे पास है। हमारे पास है। हमारे पास है।
हमारे पास है। हमारे पास है। हमारे पास है। हमारे पास है। हमारे पास है।

[illegible]

मध्य में न गीत... नलि म... गीत...
 ३. उल्लेख के अन्तर्गत प्रस्तावित नलि म... गीत...

मध्य में न गीत... नलि म... गीत...
 किले, मणिक... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...

नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...

नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...

नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...

नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...

नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...
 नलि म... गीत... नलि म... गीत...

श्रीलोक... नलि म... गीत...
 श्रीलोक... नलि म... गीत...

श्रीलोक... नलि म... गीत...
 श्रीलोक... नलि म... गीत...

श्रीलोक... नलि म... गीत...
 श्रीलोक... नलि म... गीत...
 श्रीलोक... नलि म... गीत...

श्रीलोक... नलि म... गीत...

[illegible]

तुम पुनः दिनि एकरा मोरिय कयलकः कपुतरन कपुतरन कपुतरन
परित नेकीक

हम सत्य के लिये जानि लार नै जखन सहीन जोगेन खलन
उलन नृपछो-बदबछो करन ।

(२) जोजि नवग भेज, सेहो लीनडाका मोर नै, सुको टाक रेल । बरान
ब्रानो बल का गहम भेज, सेहो बरान सेर पकडा । बरानो बारि नेर ।

(५) शरीर का परंपरागत रूपों में गति नष्ट होना, हृदय का रुकना, शरीर का नष्ट होना ।

(२) काशीवासी आर्य समाज के प्रति अस्वाभाविक भावों से देखिए, हमारे
काशीवासी क्यों नहीं करते ।

प्रमाणः अष्टादश कल्पानि—सर्वोत्तमम् ॥

[illegible]

सुमरा हूँगी कामि देस—'कुल कटीबानू त' पुरान काँठ सी कामि—
 स्वतंत्रता सेनानी ! मेहर भेटत कवि—

294]

42574

धनिक बायो जोरों से कहता—'कसती खसतः ३३१' केशजी कवि, एक बेर
 कहके मैं जयवाहक त' नष्ट होखत मैं बैलगाड़ी' सवाधीनता। बायो एक बेर कहल
 मैं बाएक सति । 'केशजी' कह करके मैं घबिरे । एक बेर मैं बैलगाड़ी सति, बायोपुता
 एक कसत मैं मुता कहल । 'केशजी' कह करके मैं घबिरे । एक बेर मैं बैलगाड़ी सति, बायोपुता
 मैं बैलगाड़ी ।

हृदय प्रत्युत्पत्तिः पुरुषस्यैव—“एषः केन वाक्येन वाच्यते एकाग्रः ॥”

[illegible][illegible]

१५५५

【 724】

* यदि तै तैविक, माथो मादि मेव सैवो

६. एहि सपथ फेन नहु दाका जानत । साठी खुल्लै पडत नव आ
नहुकक हन्तबास करै पडत । तैं छप वरसैं तकास पक्षीस टाकै राम
चँदा कागत ।

४ तर्ही नाथ छात्रों के लिये गैर-वैदिकीय के प्रकार । हुनकर सम्पूर्ण
सांसाधिक वृद्धिकार नाथक आयात ।

५. यदि नृपयंक संभालनक लेन केन गेटेक हकका सुविधि मिलाई हो-
यसि प्रकार कहल। जहाँ व धु का-14-73 के नाल वस्तु खुलाह नम्य सुदम
रहैतह। बटेसुर बाबू

महिम सुश्रुत उत्था मन्त्रालय—'हृत्कर श्राव कोटा सङ्गति ! कीर्तिवसे
बनारसिपर मन्त्रालय वनापर के मन्त्रालय, वे एकर मन्त्रालय करवाह ! वसे
वस ही

सोनाद जाकिअपर मुदर कयी रहि उठल । घटेवर हाथुस कय छलनि,
माथी धाँचुक घाट । खल्लस खल्लस हुनकर चित्तको के बाँधै ?

मीटिंग समाप्त होता पर धुर्तिक अवन बावन काइत बाबू चौधरी कम्पू
 बाबूके कहलमधिने "अ" मेधनि काही बाइक न्कोत्त । धन्ना पूरा खनिने
 बाबा ने नाइ बाबू गुंत जमि । कलिङ्ग मुरता बा सुदुर्ग के कदा बनि
 अपदाहु हाके सोचक न सोक ल । बा बाग मीरि लेक इनद न्को
 कर्वा नाइ त अत उधमकुं शिवचन्ने नमि नैरं न पावो नतन अहिक बा
 मोन करेता मो—

+ + *

अनित शीटिषक गणः सुदयान् दना अठ वेत । कौबरे माल नदि बानि
श्वेतन धावि रु नलगतन नेमि गनि मे १०१ = लुग न सगनने मन् नोहरी कः
मनु बोधः क टिलकोका गण्य वहु कृष्टलके अमित न बाजा न दिवक रपन
कहतल का पम् येन ।

श्रीहर वेत्तास बख माय कहेनइ - भाव होई देखइ । एहम कामेन
कोला र म उ ग यलनि इ कुंज वंताने एकदम निविचन भुने ॥

अतः द्वन्द्वलोकात् एकद्वयं निश्चिन्ना रहैव सौ । आद्ये च इ एतेकं चात्र
कहल्लट् अथ दुनति वषट्कारः षण् कहल्लक, उँधो कान्तो ह्य नहि भेषः । वाचक
नांकसु यथाक्ते कान्तो इह नहि ऐकं रूपं वर्तनं सौ । होकरा मरु मेन त्तं
मेक वाचक बोलेये कौनो प्रपंच धा राजनीति नहि । जौकरा काकी कर ?

‘‘कहिए, मैं जानने चाहूँ कि आप किस देश के हैं ?’’
 ‘‘मैं तो एक ही देश का हूँ, मैं तो आपकी माँ की तरह हूँ।’’

[illegible][illegible]

इस हंसो कवित्तिक— वा० गणेश प्रसाद उपाध्याय द्वारा। भा० व सं०
कटिपत्र चित्रित कला की ?

कोई पद तो रखना ही पड़ेगा वरना इससे ही ही पदों में गंजना. 'कोन गजबकी
साजिक ?' हमारा साजरे बूझाने वाले इस कहिषी कोन बगैर सबै हक की
हमारे बाद इस जनक प्रसन्न हुआ बगैर अपना नै बूझाई हक । का प्रत्यक्ष दिन
है हक - कोन कथक होर हक ? बहुरिहक है ही हक सब दिन

१७८३-१७८४ ई. में ब्रिटिश-मराठा युद्ध के दौरान, ब्रिटिश सरकार ने मराठा साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध किया।

हमरा हिंदू ब्रौह्म वैदिक जो अपने कहलक—'पुत्रिया १५' मरि गेल
बाकि । कुत देह हलै बूझै नै सरदास भेने भुक्खे मरि गेल । रीखो हूद

हम शिवसाक हुमकर कौतुकीयें बहारा केन रह्यो । कह्योकाहे बिहारे घर धन
वे पुष्टिमान भयनारथे जे अहाक बरमे सगत थक मेहो नय न स । मुने
मिसे नहि तुल्यनिधि । दू सास पति दुख एक्य बात धन रहन उपनिषन केन
छन बदनीय छ अक छन । यह मुक्त न प्रकाशे उदकाल बरनह्य । कह्योके जवयो
नाहि छैत अहाके नय को द नहि सकेत छ । खान द पति मे मेहो न स
मकरी पतिना अरिष नाहु नहि के कह्यो छै । कह्योके बरन नाहु नहि
पहल ।

हम गतिना धू पातक ह्यस्त नानु करवा ऐकिके । अकला कमी वेदन ।
 फीर यस्त न ह्यपकन लोक गण होय । गणन आ तपक क्षातर दान यत्न युगक
 कनेक हम युग अस्तक लोक कोडकोडे कोछन कदापि न मारत न न
 कानि वेदने ।

मुनिर्नृणां मीमांसा कर मे प्रसिद्धा नहं र होति तस्य हरश्च जगदन्तःपुनः
इदं न च अन्तरं प्रपन्नं च इदं नहं मा वेद वेदो मम सुगोचरे माधव ॥ ५ ॥ न च
प्रधानमेव जगत्तत्त्व संवाचयति अथ कथं उपपन्नं च उक्तं । अहिमे वेद भाषण मे
प्रकटाय योऽपि गौतमो वैश्व कथं कथं उच्यते मेन उक्तं ।

हमर मन और हृदय में तेज । आशु कभी किरण कहीं न बहि जगति रहित छन । हम हिंदू क क्षत्रिय वंशजन । यवन राज्य = २४०० जनहुं । या दुई रीति कवन नर सुरस । दुग पद = २४०० । काय चरि हमर नकेन नकामन । गढ़ छन प्र जिनका तेर । य किनका नकामन । पर हम यवन नकेन निरख । जेहि रहै । या सम आहु नरस । यहुन नर । य रहित छन ।

यह हस्तगत पुस्तक श्री श्रीवाराह कृत मूल मूल नाम पर कि 'अथर्व
सूक्त' नाम की प्रमाणन म सुद्ध। नामने पुनः पार्श्व नीचे के प्रमाणन के अन्तर्गत
श्रीवाराह हस्तगत मूल मूल नाम म रत्नम धन हस्तगत म मूल मूल नाम
हमारे पास किमिदं पुस्तक को देख।

ऐसा दिन कबि हूय बंधक केय चिन्तत रहैत बायन क'सके केर केर
 सोखैत बायन रहैत जे तमर बिना मल किलोने बायनके हुनर कायनिय के
 हुनर लखन भुवना ? जाय हने लखन ना भ भुवना कायनियके हुनर
 बंधकके बायन अतिक कलन नहि छैनक ज मर परिवार हुनर सेव धनिय
 कन बायनके हरन के दूरे नाथि बायन जेवर बहुकारन" एहिसे बह छ
 नयनके । जो केर-केर कलपय बायन ।

ब्रह्म अस्तिकर्मा नम इमं योजं ताक जेन बध्ति कयनहुं एवम शास्त्रमे किहुं
काय अरुण रहि गन बलि एक हु वाम अर रहि केहुं तं शम काय पानक
अनुसारे भूरा भ' जाग्रत ।

[illegible]

हय विष्णु बहि कृत्स्निकनि । जोते छे वल कथनहु । छेत्त सोकनिक
मनहु ॥ २ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

हम कोकरा साठईं सम्मिलित होकर जाग्रत रही थीं। जो समय काल या जमाना सौतेला हो जाता था। हमें किन्तु क्रम और कर्तव्य रहता। हमारी भावना बड़ी बड़ी हो गई। हमने लक्ष्य के रूप में अपने सामने हमें अपने नैतिक' नज़र आता है, जो हमारे लक्ष्य के लक्ष्य है।

तस्य ज्ञाने कायस्थितिवत् नष्टवर्षा समस्त वैजं हस्ताशुभ्रान् वटोऽत्र वा नष्टा
कल्पेनैव स पञ्चमगणिक रक्षित्व सुखी भवति न गणाय गृह्य कद्रिहीने कद्रुह

स्वतन्त्रतरेण

【 244】

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

काहें बिना कौचित शक्ति का कूट प्रथम एहि महार का महारक
 भावके न होतमाय पर भजन विषय होत अ क उ सके बेर द हाए प्रसन्न
 हय अलम्बत युक्त बिना के प्रथम भक्त ।

मार्च १९८७

जी मुझके क' बापत—'तुम इन्सान के बापत । बाप ही है जो...
इन्तबाम होइत छै—'बकू' का बकू' । बाप...
छाणक बमकी दिमीक, मधदा काज के बापत ।

हमरा बापकोक सम्पत् बड़े बड़त भैल । तब...
कल है देखि मधोखक गोहा भैल, जोकरा बापि क' कहनि...
काज नहि-क' । करत' बाप' तैल तब पेरक हुं पाइ अमा के रहक ।

बापकोक सम्पत् बरतल—'एकर अतलेन कर दूक सभ भल । एकरि...
तारीख बाप भ' मूल भुं ।

दीबाधा रिजल होइत-होइत हीकि एक भव भक गल...
नेरक फल बलाय भेटल' । वही अमाका...
बड़ विजयविजयल पर, जे हमर अवन विजयविजयल के हेतु हल, हमर काका...
होत बागल ।

जोना आस्था रखनाक कोनो प्रयोजन नहि तल । आमाक...
परीक्षामे जे बिल छलक तकरा हेतल हमरा सभक रू...
एकटा मंथोम बालि टारि देल अनिरक ।

बापकोक काइ... एमे समय बाप नहि भेटल' । तब...
देखि आइत भल...
अधिक नमर रहबाक कारणे को पाव क' भल छल मुदा होकर वेपर...
देलाक बाधा थीकरा अनुस्मिन् देखाओल गल धर्मक ।

बहुत केर तहिवो रोहुल रहल । हमरा परतारत एकटा अधिकारी कहलनि—
'बाप छानू, एकर सोच सोचो । कोनो हरा भल इतक त' अनुपस्थित...
गल हुत' । जी० ए० मे नाम लिखाइ...
कियेक ?'

तब गुम्मा रहि गेल रहल । आमाक सुनल...
होइत नहि हुत' । जोकरा कोना रोमर नमकाक कपेक डकर हाटि...
रहल बाजिए छक एकर सभक ।

हमरा बापि दिन विद्वान नहि भैल छल । मुदा जी० ए०...
काज...
...

मानि केबाक अधिकार बाकी उपान नहि छल तब...
विधानके केन बड़ उच्च भाव छल जे, एहन बात मानबाके...
रहल छल ।

जीना स्वयम् हमर अपन समकालीन...
बला ए०...
...

"काइ करि प्रयोजन नहि देख बापि ?"

जी हँस' बापत—'प्रयोजन त' छोक । प्रथम स्वामि जीना...
अधिकार...
...

जब मधोमध...
...

ई त बहुत पुरान बात भैल' । कोहु दिनमे थीकरा मानबामे हमरा...
...

बांशोक्त एवम् एवम् गरीश्वर भैरवः शालक वदन्तः यौन साधने । धृष्ट
 कर शीघ्रतः सव गन्धर्वक व सप्त परीक्षिते कुंडल आयस धर्मक । इत्येव धर्मो
 नहि भवत्येक । नन्दर धर्मक न पुत्र विक्रमो कुरु अनुमतिभक्त निबल धर्मक ।
 बांशोक्त बांशो दिवः गृहं नृप कथं कारण कथनक किं हंसरा हर भैरव । कर इति
 सप्तके बांशोक्त धर्मक नै कथं काह नै कं भंडर । बांशोक्त वदन्तः यैहो कथन न
 इत्येव धर्मो नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न
 नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न
 नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न नन्दर न

[illegible][illegible]

हम श्रीरामदास दीक्षित बाहुर श्रीरामदास श्री सुभा हरमर बाग मृति काशी

श्रीद बलिभारोक्त कतह पता नहि छननि । कारजियतो कुटुम्ब हाम लि
महि ।
धवि भवन
धवि वायल मुरी

दोसर दिन शुभ संर काशीस्यमं सुर्तु जं क पुरुषने वही । बारह बजेके
४५ श्री गणेशाय नमः । नमः २ । पंन उवाच परमेश्वर । बल ५ । नमः

येति वनं रुह्यं । जीवने यस्य ह्येतेषु च धनं सताहं चक्रेण बाधयति, ॥१॥
 चरन्ति च यन्ति । यदनेन वनं धनं सताहं चक्रेण बाधयति, ॥१॥

[illegible][illegible]

—“कान्तिं पुनः वर्तमानेति विदुः ।”

—^१अपने निश्चय रखो, किंतु हम हमसे सोचने के लिए आपको प्रेरित करेंगे।

आ आइ नको कठिन नसार बसेन छी । हमरे ब्याहृम्पिर जालोक बार्नि क
मामनने छइ बरि । ते बीकरा हिं बनेबाक धरिष न रहल बरि, ते धो
बाबु रहि छल बरि । बालीकमे दुखद तर भ रहल बरि

मौलिक हक का अर्थ क्या है ?
उत्तर :-

इसका प्रयोग नीचे दिए गए प्रकार से करना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति का नाम है, तो उसे नीचे दिए गए स्थान पर लिखें। यदि किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, तो उसे नीचे दिए गए स्थान पर लिखें। यदि किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, तो उसे नीचे दिए गए स्थान पर लिखें।

[illegible]

निर्वाहः ॥

मेल घुल । तब हम मिलाए वन में । रहत छै । अहं ५ । ३ । न । न ।
आदि केनहुँ ? कोन काय भौंछ ?

हमरा मीनर जेना एकादश तह रहति रहत । न । न । न । न । न । न ।
हमरा न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

— 'मिन कहन हम कोना दुमन ?' को अपन कहताह ।

हमरा बीतर जेना एके तह हमार चित्तो कहति कहत । हम मुटा कहति
मुक्ति मेल । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
हो । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

को सकपका केताह—'को कामन ? काह तं नहि क' कहत ।'

हम कहत काकिरु' निजिया कहतहुँ । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
को काकन केन हम नहि भावत । नहि न' काह—काह कामनिये कोन मया
नहि हम । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
पर ठाक क' देन । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
हम काह न' कहत एत'ह' बिना काय भेन ।

उनेववाहुँ हार रह रह परवर कोन रहत कह । न । न । न । न । न । न ।
मु' न' n
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

हमरा काय काय स्थिति कहत । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

कायविक काय धर्मिक । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

किसी कामके को अधिकारी कामन केन बाहुन कहत । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।
न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न । न ।

विद्यमान १६६७

बादि

और मजदूरी बंद करके छुट्टी देना सभी पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 राष्ट्रीय संघों के बीच समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

अन्तर्गत सभी पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

राष्ट्रीय संघों के बीच समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

राष्ट्रीय संघों के बीच समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

राष्ट्रीय संघों के बीच समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

राष्ट्रीय संघों के बीच समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

राष्ट्रीय संघों के बीच समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

राष्ट्रीय संघों के बीच समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

राष्ट्रीय संघों के बीच समझौता होना चाहिए।
 राजा सचिवों के पक्षों में समझौता होना चाहिए।
 अंतर्गत,

[illegible]

१. १००० रु. = १००० रु.
 २. १००० रु. = १००० रु.
 ३. १००० रु. = १००० रु.
 ४. १००० रु. = १००० रु.
 ५. १००० रु. = १००० रु.
 ६. १००० रु. = १००० रु.
 ७. १००० रु. = १००० रु.
 ८. १००० रु. = १००० रु.
 ९. १००० रु. = १००० रु.
 १०. १००० रु. = १००० रु.

[illegible][illegible][illegible]

मिस्त्रु लपकारो एषो सर्वस्य वारुणस्य कृष्णप्रसवि- 'इमरा लोकिनि स' ज्ञाने
इते ज्ञाने रुचिः स कोनो यद्विदुः सैतै उक्तं पापं वारुणस्य कृष्णप्रसवि ।

[illegible]

[illegible]

१. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 २. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 ३. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 ४. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 ५. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 ६. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 ७. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 ८. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 ९. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।
 १०. निम्न काका के लिये नर्सिंग के प्रारम्भिक शिक्षण को सुनिश्चित करना।

[illegible]

304

५६

हिन्दू धर्म की मूल बातें
 १. ईश्वर का अस्तित्व
 २. आत्मा का अस्तित्व
 ३. कर्म का अस्तित्व
 ४. मोक्ष का अस्तित्व
 ५. धर्म का अस्तित्व
 ६. समाज का अस्तित्व
 ७. परिवार का अस्तित्व
 ८. शिक्षा का अस्तित्व
 ९. स्वास्थ्य का अस्तित्व
 १०. धन का अस्तित्व
 ११. सत्य का अस्तित्व
 १२. न्याय का अस्तित्व
 १३. श्रम का अस्तित्व
 १४. सद्गुण का अस्तित्व
 १५. सद्भाव का अस्तित्व
 १६. सद्भाव का अस्तित्व
 १७. सद्भाव का अस्तित्व
 १८. सद्भाव का अस्तित्व
 १९. सद्भाव का अस्तित्व
 २०. सद्भाव का अस्तित्व

विष्णु महा पात्रक शाल से सुसुदीकृत बचलाई—^{१२६} एकदा
 एकदाक से जहाँ बचत पात्रक से बचलाई जाति
 गति ।

[illegible]

बापू

सबहुक गोलक बादी मानस जगत कलानीमे बैसके रहने । यहिक एतने
बहुत कम भुक्त मन पदमान बिहू ईहाइ परिजनन बरिहक मनन व जा
जन लैक भी बावद मे हुन हन इधरजातमे बह कान हक मे पाने ह कान
एक नका नन जा भुक्तमे प्रति बहि वरुने हन कादक कनका कनिका
कन नका न ननननन न नननननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन
नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन
विहारक बाकि जा भुक्तमे, एतद प्रवेसक लौकीके दिनिनि दिनेक नन
नन ननन हन ।

[illegible]

मास्य मृत्यु गदस्य नहि रति पश्येत् अस्ति । मोक्षर किम्वा मृत्युं मोक्षं
 भूय । अपानं पश्यन् दिनं तेन सम्यग्मे उक्तं वा पश्यतां परं क्षतरं । सन्नेहं येन
 मसि परिबद्धं क्षयौक, एकां पृथ विद्रिष्टुमेषं भेदि रक्ष्य भूयौक ।

पटना बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पटना पर कोनों का महत्व है।
 पटना नगर के उत्तर दिशा में एक बड़ा बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप पटना के उत्तर दिशा में है।
 पटना बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पटना पर कोनों का महत्व है।
 पटना नगर के उत्तर दिशा में एक बड़ा बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप पटना के उत्तर दिशा में है।
 पटना बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पटना पर कोनों का महत्व है।
 पटना नगर के उत्तर दिशा में एक बड़ा बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप पटना के उत्तर दिशा में है।
 पटना बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पटना पर कोनों का महत्व है।
 पटना नगर के उत्तर दिशा में एक बड़ा बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप पटना के उत्तर दिशा में है।

२५३५

• **Time**

टीका काव्यविनोद यम गुरुक पञ्चम एतन्मन्त्रं क क आ विदुः ब्रह्मर्षी श्रीः दत्त
 शरणम्—“वर्षात् परोक्षिक केन वाच्यं विद्योक्तं, तस्मिन् विद्यमानं वाच्यं ब्रह्म ।

वर्जान्तर लक्ष्मण रङ्ग हल । मुहं वर्जनि १५५५ खलीक । यां फलको
 फलको जे यां जे वर्जनि खल लक्ष्मण रङ्ग हल । यां फलको
 वर्जनि । वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि
 वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि वर्जनि

जो विमाने कुत पुष्पक भूदि क' भँचटकही छांदि लेलक— "माठा बंराप
ह' देखक । पँचटकही जमा ख' दिजाक ।" कर संभाभी सट्टो लेलक जे भूट
नरि ज' जे गटव ज' विमान जयत बट्टा ज' गू सट्टीक न मारत मुन क
मारि लेनक । सार, निखंवा : भँचटकही स' क' मटरकही करत बाछि— हार
रपट्टी ब...

मानस्य कृपाया इवाम् अस्मि । एकदो किंचु कहनां न कथनम्
तद्वा वदन्ति आह यथा दायः श्रद्धां चैव । भूधर चर्चा श्रीवी अयं नहि स्थित उच-
यत् के मातुष आ मातुषि मोक्षाय न देहात् अपन्न परमात्म ।

पटनासे अंबेडकराज कोट टुल्ल भुम नम एहने पराक्रमो लोका सुभा पट
मेन छनीक । पुन नम काइबारजन छनीक बाहिपर मीबा जा क एकटा टुक
=रिह गेक छनीक घोर । काग धंटासो जाम छनीक बा कासुको साख घंटा तव
साइन नाक टैकाक फायो बाध नहि छनीक । बाबक हुनाक हांमठ पटना भुन
जबवाक कान पाबा लागन छल ।

ममने बामक एकटा छोर एकदमरीक । बहुते रास आइवेद कार बा
मिबन । मांल्याभुंफन शुभ मनरंछ संहि गाम बाटे एकटा बंलाह म्बधपन रेग
रख्न छनेक । त्राइवर कहनक बे ओकरो सैमसी-टीकरो खेति बाटे निकलि
गछेते लेब । बब क्यो इमम सोइस लादी बाटे बिषा मेस ।

[illegible]

परमि

1243

मानों विमान नहि मानिये मनु । नहि ॥ ५५ ॥ नहि ॥ ५५ ॥
 का। अपन नाम भी करके विन्दननि का कायस्थ न कि अत्रगति दया कायस्थ
 भेसाह

हैं जिससे मुनि माननेके लय भाव कोन करके । नहि मानि कोन
 हानतिमे हुनक । काहो करके नांक है न करके नाच काइ भक्ति कर्मस
 दिके । हक न मय कर्म तनो न मय मयमेक हक न मय मय मय मय
 रहैत यदि कोकर कोनो उछार ॥ ५५ ॥

॥ उछार हुनक ॥ हुनक केडोय कनो न दम मय ॥ ५५ ॥
 चाही कांकेसक विकल्प । निपाहोपी सुझाये कवि क मयदम के रहम
 शक्ति । हुनकाय लख मयमे उछारह । हुन निमित्त दैतिदति कांकेसक विकल्प माक
 काय न अति । उछार न मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 कांकेसक विकल्प हुनिदुखी, इतिदश कर्केत, इतिदश कर्केत विकल्प कोन पो
 पुरात कांकेसो अ। एतल केर राणीक मीशक कांकेसक विकल्प ।

॥ ५५ ॥ तिह ॥—“उछारही विकल्प कांकेसो प्रलय होइत रहतिह— अपन
 त कृम लख दैतिदति अति, कहिमा अपन ॥” हुनक केडोय कनो न दम
 मय ॥ हुन न मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 मय । गीत एक अतिह रहो । लख मय अपन लख मय रहो । कनका केर मय
 रहो । उछार न मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 कांकेसके केम न कत धुकि कतहु । एकटा मुनक कांकेसके के मयिह। मय
 कांकेसके अतिह उछारह। कन मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 एकटा मयतो केमके के मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 एक केर मय लख काइत ही । कनका केर मय केर एकटा कनका केर मय
 मय कांकेसके केम केर मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 लख मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय

हउत कहि का हुनक केडोय कनो न दम मय ॥ हुनक केडोय कनो न दम
 मय ॥ ५५ ॥ हुन मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 मय

छेक । नत किछु हउत किछु मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 मय
 मय

हैं कात मय
 मय
 मय
 मय
 मय

मानम गुन मय
 मय
 मय
 मय
 मय

काहो काहो मानमके देहमे मय
 मय
 मय
 मय
 मय
 मय
 मय
 मय
 मय

[illegible]

आइ सामने एकदर बैठक मानसके जाँद विनुकर भाव सब खोल पति
छाँक । बाह्य मानस सग हो जिनभक्त अ मनस न भव न मर पर कर्मभक्त किस्म
मानसहि रहनेके । निकलो वेरा कारिक ने समझ द पहेल हस से छठ हन, ६
कगदू कजा नवराह नहि छरीक । सम्मुख इशका पुनवत खलोख सा दुवापुखान
मथ गीत बाग जगज्ज के धरि क नयक खला आँसुख खनकये धीरत खलस ।

[illegible][illegible]

तथा च नाना किञ्चिद् भारी सलोक । धीर वेदा किञ्चिद् कालं वेति मया सलोक
मुदा दीर्घस्य स्यात्तु यद्वा नहि सलोक । अथ ब्रह्मलोक किञ्चिद् दूर-समाश्रय ।

सूर्योपनिषद् के माहारी के रहल जगैक—आने आन नकर। अमरतीक कृति
 बनि गेल जगै, क-इय ब्रह्मलोरी सैक, कानिहु बिम्बहू। रगति १८८ नं० ४५
 रहल सैक। कविदेव आन आन ककर तीन पति नाटक होतक। बंनान सभ

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$ $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$ $\frac{1}{256} \times \frac{1}{256} = \frac{1}{65536}$

मामस अत्युत्तमसं क्षामु मरुतः । विदुः तं हल गल कर प का द्युस गटे
विदुः कं द्युसरे वेरि कं विविधः दृष्टत सनेकः । मासस एकदय मग जति यत्तः ।

असमं सुकटा धीरे साहसिन् जीवन् यस्य हनैकः । मन्त्रकैः ४५ ।
 विष्णुकोटि कविनां वषट् नमो नमो भवः सुरैक पादौ साहसिन् हनैक

[illegible]

मुन्क जाके निकिबाध भाषण श्रुताह । पंजना बाह्यक उपदेश वा पठित
नरक दे- श्रुतिनि । हुनकर कान्द दृष्टि मातमपर श्रुतिनि । बाह्यक देव
हुनकर जाकुनि पर स्थल उपरि ब्यवतिनि वा धकार कुटसनि । चबाउ भानस
काउ, श्रुता नमस्त हमरी बधाउ ॥

भारतके शत्रु। गण्ड साँत महाराष्ट्र । ई शत्रु। हुनकराई केन्द्र। शत्रु।
नहीं न हमरा। सुभक्त वदुषा वन । आभन सुभक्त वदुषा वन ।
रहव कवि । राति भरिमे ई दीपों सपन बँधवाक बाट ताकि केन बलि ।
आब कौनो बादि एकरा समके बुझा नहि सकनैक । कौनो कवरमभइ एकरा
समके गोरि नै सकतैक । बादिनै बंधाक बाट ई सस खपन ताकि केन अलि ।
एकरा कचरो महति नहि आदिमैक ।

मदति सुरजके काहिबनि । जो विधिया रहै कलाह भुषा मानस प्रभ
तैं हक ज्ञान सोचि +रन दल करन कर न ब्रज न मण्डप य गये पनें

अंकजगत् १६५ =

रक्षक

इस वही काल है शैलकुर्मरं हर तृदिता यत्न कलाह ।

नही की वृत्त नई प्रकाश । वेही से बेधा पंथाथ कन वषम हैति मुवा
 ननेक दुव्वर छवि का तेनर भु क क ज न हल छवि से हुनका जानकी देर वषावृद्ध
 वति केवाच नय कोदुल सेन : प्रसवि केवा जाने छवि का दौलो पबकोटन देहम
 पहे छवि नृन वेहा नृन अर अनाप दुल वा कोन ओह दुल वा कोन
 कातिवा ही अमिज ओर वाकुति बह सुहाय छोटपटाहुटि सुहाय विकनसा
 छवि केवकाय पर कट्टी नयन छवि चहुर वति नृन वति सादखन वमिने
 रहेर वषि वा देर नृन वति का नयन कोनिक प्रतीतस्तन पग नृनकावत
 लवि ।

नृसिम्हाय नमः । अथ कथाः । त्वत्कराविति वरं सुखदा इति भावः यतः
भवति तावत् । सर्वेषु लोकेषु भक्तान् प्रीतिना दृष्ट्वा ह्रीर्मात्रेण प्रत्यक्षं निराश्रये
परित्यज्यैकं वा पश्यन्तीति ।

कादम्ब सेव्य अर्थात् जा मंके पय दौन्दाम कुन्ति पहिरा नुशितात कृपा
कर्म जगत्प्राप्तिके नैष्ठिक सुखि लभ्यमान दिनचर्याप्रित मुद्रा अपय
मेटीयं चयन कल्पना रूपाङ्गमनि सकार अर्थात् प्राप्ति

[illegible]

शुभेय नमः सुनिवासाय रविः न उज्जाग्र इति अत्र दक्षिणे =
सुनदिने । प्रणिनां संख्या द्विष पञ्च पंच चक्राद् देवता दत्तः । एतेन कुलीये
आश्रिते पुत्रिणा । न तुपन के कर्मादेष न निजग कर्म न वर न मान्य आह ।

राजसि मुद नगिब मेतनि । कइत से तदि जनि हुनक रेखत क
फुरसनिमि रंदि रहति अगन भुग से मगन छलत । रुदिसन सपन मे बुक रहन
अजाहू भाव दिम तककाल फुरसतिरे नहि छलनि ।

सो कला त्रोट दिव जतिपा म नी कहलावत मद्रा कसन उरि न न पुन
जति । कलिह हासिये वें घर नहि बांझ जति ।

[illegible]

नगर जन्ति विविक्तः कः उद्वेगः । नगरि कौं बहवः प्रजाः । नगरं नगरं दन्ति
नगरनिवासः । पहा दन्ति किल न कश्चिदस्ति । नगरं बहवः प्रजाः । नगरं नगरं दन्ति
नगरं किल न कश्चिदस्ति । नगरं बहवः प्रजाः । नगरं नगरं दन्ति ।

[illegible]

कृषीर कर्तुं भिन्ना आरंभ आरंभ दंडि गन्ति पष्टि नरुत्ता विप्राय नरुत्ता
छोड चन्ता मुदी राम आरंभ विप्राय नरुत्ता नरुत्ता नरुत्ता नरुत्ता

राज्य ही एक नवजात शिशु है। अतः राज्य को संभालने के लिए हमें बहुत सावधानी बरतनी पड़ेगी। यदि हम इसे ठीक से नहीं संभालेंगे तो यह देश भी ध्वस्त हो जाएगा।

सुयोग वाचु बान्नी वीरि वीरि आनं आहो ठाम उपा गृहा कन श्रम

[illegible][illegible]

अथ चारुं किमु वरिचैकं त वलं काकरं मातुः सरसं महोदकं— चारुं
= चारुं वरिचं काकरं मातुः सरसं महोदकं इति संज्ञा । ती १ कोन
सुखं लोच २

राज कृष्ण के नेतृत्व में सुवर्धित नौकाएँ काशी के रास्ते ब्रह्म दिवस तक
 आ पहुँचीं । इन्हें स्वयं राज कृष्ण के नेतृत्व में आया । काशी के शहर में जाकर जहाँ
 रहने के मकान में रुक गये । सुदृष्टि भोजन वह विस्तार में थी ।

राष्ट्रक पाव कोने जय' व नै डेडपिन या भीतर जाहूत कहुनविन—“बसो
या राज, बकरी काय बसि ।

सुन्दर दास नेत्रोत्थ भक्तविरह—“हृदय की राग, कल नवकी ओर
नैलक ५४ ५५ = नित नैलक नैलक नैलक नैलक नैलक नैलक नैलक
नैलक ।

राज इंद्रिय ज्योति बालस—कोट्टर कारक काव से एकटा कोठनी
 छेक । कोट्टर से बाल छेक तौनक । बालक कावो बालक प्रम ज्योति छेक ।
 'कोट्टर बालक देव दे प्रम ज्योति कोठनी ।' सुन्दर बालु नेहारा बालकविन्द ।

[illegible]

—'मुना' शीघ्रतर दियेक अवसरों ? कौनो सम्प्रदाय कहि जसि कहहि

१५५५

[୨୧୮]

जो । कफरो अविज्ञ मान परंतु जिन । धन धनको रक्षक उह लोकान छनि ।
कफरो जीवा मज्जको रक्षक हुने सो भविष्य होय छनि । ते मानवनि त हुमो
माफत । कफने हरेर भाव मान्ने मेरु ते मेरु । ते शीतल छनि निनका
मज्जामन् ।

सुनो राजा अथाक रति भवाह—“ई क्षण कहि रहत छी । उद्यत म ।
 गह्वरक लोक कछरा सग जायत ? के वनीतक बाँकरा कहि दुखवत; मुथत—

एषः पौ. सङ्ख्येन दुषोपनिष - १५० नै वषः वषेन सङ्ख्ये । इह पण्डिते
भीतर करवैक, अन्तर्ये अन्तर्ये सङ्ख्ये । दोषोपनिष, इह वषो वषो
नहि वेन । भी अन्तर्ये सङ्ख्ये । इह अन्तर्ये सङ्ख्ये । १५०
कोपे सङ्ख्ये सङ्ख्ये । सङ्ख्ये सङ्ख्ये सङ्ख्ये । इह अन्तर्ये सङ्ख्ये
विनयी सङ्ख्ये नहि विनयी । इह अन्तर्ये सङ्ख्ये सङ्ख्ये सङ्ख्ये ।

सुर्धर बाबू के किछुबो बोक नभू भाषम सल्लमि । एउ० पो० साहू
इलीक बा दिहलसदीन लोमक हनमिद । को कुनकर कोसोचं दलिक' नन
कापस सल्लारु ।

दोरा ५२ एकक देहदा सेहत रहैक जेना कोर यकी बारन केत हो । आर्वकिन सुवीर नावुंके किनु गुलबार्न कहिने होनी एकदा दोसर गुलबार्न देनकति— एव० पी० लन गेल रहो । बेटी गुलबार्न हुनु है होन दिनक भीतर देहाई दिन-देखात दटा लेक ! बारा सिध, जेकरा बर्बेनाक हो ।

गुनोद साधु फेर बाहर होत । नमो गुनोद बाहर भक्ति बेलनिभ—ते
बाहर बेलनि, बाहराधि धरने बेल ।

नदी कान' प्रपनरि—पर कुरिक नरेश क' देत आ' सभ, जाय रिपौन
बाँध' । सस क' सैन ।

बैद्य पुत्रतु कनेव कदापि शक्ति भवति नैव सत्ते कयो बरदस्यो जटन' सेव
भावि नैवे होइ ।

[illegible]

मे बाइस सत्रों। एकदा जार गलतिये भवन होने अनारु काउच पर। मे गोपाल जीक रहल छलें। जीन बाहर लटक गेल ईक मुदा तेरो सुनीन बाबूक लखवि के ओ किछ कहि शुरू छनि हुन्का मे-----

श्री श्रीगुरुदेव ! तबि बसकाल । तबि नरक तर कथाह । श्रीगुरुदेव ! बसकाल
 रहनि । श्रीगुरुदेव ! बसकाल निश्चयता रहनि । जगनि केना सही, तब सारण प्रयताह ।
 प्रयण केनि, सन कथा प्रयताह । तबि एक तहि छति । श्रीगुरुदेव ! तब प्रयताह ।
 तब दिव बसकाल । बसकाल तब ।

धीरे धीरे एक-एक शब्द मरने लगता है। दूसरे पी० अहिंसक बंध पर गोल
 खुल्लि । नरुह कृष्णमन । करना बल बल सगल । विराध तुनीर बाहु धी० एक
 पी० क देश पर मेलाह । विपही दुकहे देलकनि । कामग अरवट पर दूध धारि
 टा नेवानुमा कोन लक्षक मग ही० मम० पी० काहप देवत छत्रह । मुचोर बाहु
 धीरे धीरे शिखिलजम लकवाह । सिपाही केर केर धनका देव लगलनि, उदुग
 कनकर बांगिते पांगितम म' गेलनि मुदा ओ छलि लहि क' विपिआ ल रहनह ।
 बी० एक पी० बाहुय शीघ्रपल मपने लपक केर घोर अलनह आ गौरि वेत
 कहलनि—'क' इला क' गुरु धी—'द कहबाक बलि माना मे निभा
 दिवोह ।' बी० एक पी० काहप बल गेलथिग आ समकीय पुर्त लेन
 ओ बनिज्जापुर्त माना बिल बहलह । ओवर छमर खेदा ओ देखत रहथिग ।
 लखन मग मे वेदित रहन, बिलम कोन बर दीत छलह, हुनकर एकीर धरि गहि
 लिखत छलनि । गारि क' कना देल छलनि । ओत' अपराध कोनी दच्छा नहि
 रहनि । अहाय क' ओन्दरे बल पदकनि । प्रसाहे तुनका दोहले कोर मुह । देवका
 लिलकनि । ओ समकीय हुन पुनी देलथिग । ओ कोरि क' कोनि देलथिग—'बद
 ने को देल । ओ दल के लिखत बलि ? क' लकैर बलि जहाँ जने निदि सेन दीध
 तीन के' कयब' केत ।

सुदीर बाहु सावके घल्गरो उद्वेगि । धमकीक मण्डल बरग देगे रहति ।
अणु नष्ट जा गोतामक बने मण्डल बरग गुणक छैक । सावक बुनियो छैक-वेर
बराह को कुंजि बेल छभाइ । सुदीर को बास नै छोड़ग कभाइ ।

विशेष क' कहलसिब—हमर बानस किमैक का कहल' भइ ?

इससे जान सकते हैं—हमारा कौन सा देश है ? जहाँ-बाद,
सब वस्तुओं का ध्यान देते हैं। हमारा देश, हमारे देश के सब देश का

क' दिनों में ही देखा गया क'। राति भर हुआनाके बहुत छ' पथरों द्वारा
काचि जयतेक।

मेवक हुनुपान आशुपानन करैत देवावन बेंत कस्तन' कस्तनि। तसि देह
दासि उवदि गेलनि। हुनकर वीरवार पर अभाही गहिन जारैलम हुँवैत रहलनि।
तेवक हुनुपान हुनका छदविटवैत थ कपटैत हुनाकभन कोठनीमे रहकि बाहर
तारा लागैत नल गेलनि। और राति बाहर कोठनीमे पवन बवंस मुहुरैत रहल
मुवा प्याज तेरे दिख रहलनि। नहि जानि को कयल देव ?

धोरे लजिवा क' बाहर क देलकनि। जमदास जमदास देवा पहुँचल।
गन जदेवावे रहनि। जमके पुत्रिज देवैत रहुवा मय कष्ट कष्ट विनि
गेलह।

धोरे पुत्रिज बरला मष्ट कपने छद रहनि डेरक साकने लवक पर। छेति
मोहभाने हुनाक नहतकनि—धेम रही ने कपन, सुलतिरेक मया। जवनो
मया मय बुझरे। एह राति मय डेरके कन व' उवा जमके के कोर बरैत भनि
मे छेकि डेरी पुत्रीके क' जावत—देवा किम' जकरा नमकक हो।

कपन कपन जेग छ' मय मुनकके मष्टक पकको। मुवा लवके लव
जपन दरवारा मय क' छेतिरे मया किमु मेन व हो। कपको गेने कोरा क' डेरम
काचि कतेको वेर नहि गेल रहनि—कोकरा मे मुनको रहि कक। न कोपन मयि
सहो बगल।

एव० पी० साहब सहो वैह कहुन रहलनि। सब साँक सँह कहुन छनि।
कोनटा मय कपके कोनक छरे जमल सहर बा जमल प्रतापन भयमोह छेक।
एव० पी० साहब भयमोह साँपन। कहेत छनि—जमलो बार' विमान'न
जमले वैसल छनि, मय हुनक जादेश छे होइत छेक।

मुवीर बाहु क' कर्ष नहि जपेय छनि जे जमरवारा के एकटा जमोवक
जातक कोन काज छेक। जमक मय व' कोकर कोन हिय किनि बेल छेक।
औ सय किनेक नया रहल छेक एकटा मुनी के—

हुनकर बाहु नर पदोको जमल। जम्मु ओइ दिन ईक' जावत रहलनि—
“जान कोन मुनियारे कोइ जो हुनकर बाहु। मुखा-मुनीक बिना रजमोडि-
जमलन बा मुनिक काज काज। जमलो जावत मे वैह लव छेक। हमर

परीक विनयो छ' मय मोदी छेक कोकरा मय जेव। मोर ऐन धा जेव,
मोम देवैक मयि देव। कोकरे सभक हुना छे मोरैत मयि सय कयो
बार।

मुनेर मय हुना कोरा कोनह। कोरा बलहनि हुनकर परिचार। रसक
मय मय सनि—ककरा लव जपताह ?

पत्नी पदुमचिन—मय मय सय कयो। न जाही ई नीकरी-जाकरी।
मय पात को क' मुनर क' मेव मय के।

जमोद कस्तकनि—छेके कहेत मयि नाम। हुनहूँ छुट्टी क' छेक छे—
हु बाहुक—हु-मय मय देवन जयतेक ?

—“बा हु मय बाहु। हु बाहु मे ई बहर आ देव कयनि जयतेक ?
मयन आ मुनिक उवदि कयतेक। कोर मे कोर' न एवदि बाहु' पवन। मयन ?
बा कोर' न' नर कोर' सहर, हु मयन छुट्टी कोरा जेवतह।” मुवीर बाहु
रोकनचिन।

जमोद मुना बरल छल—“देवन जयतेक। नीम विदाउय' मेह मे। मे छेक
ह' नीकरी छुट्टी वैह मे। एव' नहि खुब हुनरा कोकनि। जाम जम्मु।”

जमोद बाहु न' जेको डेरा जेरोक कोन बरा देने रहनि। मुनक जाचि मे
एवत मयमोह न' निमोह मय रसक जेना जमले पयो कोनेक आ मयन मयमे
मोचि-मोचि क' जा जयतेक। हुनकर मोचिक सोसो मे।

मुना ओर व' कोकरा क' जठनह। जमक जेवतमे मियानी फेर
हुनकर बरवराह देह के एकदि क' कोन कस्तकनि—“बहुत करा रहल औ
मुना बाहु ? कोको कोर' जमला देवतह ?

जमक। मुना काजकात एककनि। औ पाटीक विनयो मे छलह बा बाही
जपन जेव जे जामल जा रहल छल। जपना। जने औ जपना देवने
जमल। एकटी बेनीन मयन। नल पलल कतेक जेजमोन होइ। फेर जमके
जोपकनि, सय छ' मय दिन कपना छे जेको जेराधीन होइते छेक।

जपन देव कर मियानीक हाथक इवई विन प्यथ मेवनि त' फेर देवा
जेनाह। जवननि जे वैह मय हुनकर बरटी जाचि देवनि। कोकर मय औ जने
जो न' मुना देवनि। औ मयमय मियानी मय कोकन। जमला मुनक जमल
मुन न' कोर' काचि रहल जयतेक। मुनकनि—“क' जावत मुना बाहु ?

बुद्ध। इन्द्राणी चवना। भारी से अथ कपडविन—रात आनि येनहुँ ।
ओ सिवाहो कने भारी बकिन होत सटववि—यथा आनि आयत
भावा चण्डा मे ।

काका भण्टा मे ? कृता चोरेकाम् ! कृतेक चाली हसय मोति भेलैक !

कमल-व' नहुष-प्रति मेक समक ! जोही दिन परिवार के काम पड़ें ते
 छलधिन । एम करैत रहि संवति पुरा करने तहि नेतह । गिन ययं न' संवति ।
 पकरा व' जेह रहि छनि, एही जेह नाम रहि गेल छनि । एत लोक के, भूमि के
 भूति जहराई नाम लेल लेपन रहि जेतनि । जमोदकोर्यो छेहि देखवति । एतने
 न' द' चरि कहुन गेल न' र' छनि, जोही के नाव न' रहि छनि । किन्तु एतक पढ़ा के
 छनि ।

काम मुदा नहि जाइत छनि जेना रोगी ससक लखार भनि । नदिछन लगेत छनि जेना रमणस जखन न्याय भोजे बहुत छनि । निजाक काय मे जोड़ करमाक नहि पिक नैक सिद्ध कर जखी छनि । सबजस कोर सारि बीडा रंजक छनि मुदा काम नहि छोड़ने छनि ।

तेज शीत में बल गेल छनि सुख एकदम लपकोर जवा क' । एकीटा पढाई नहि । राम लक्ष्म नवादि सेवक - । बहुतकैने ओ किछु नहि जनेन बलि । विनिमय सपूज कलशविम जे गण्डू त' रसोनेन देखे नहि चल, आ त' प्रथम धर्म मे जगीन सेन अलि ! रजिसेन त' रमन गेल छल, बरिषो करीन सै पयस गेल छल ।

पुत्रीर चातुः पाद-रश्मि शोकर साक्षे लोभादिव दहन्तु । एवंगी० चतुर्भुज
वदनोक्तं न' लेख्यं कलनि सा नर एव० पीठं दूतकर नारी पुन' मेन लोभार नहि
छेदित । एतन्ना वा अर्थो धुनवदपी, सुमन परवता नर वनना न' जायत छेदित ।
नर श्रोत्रो नहि नयनानि । एतन्ना किन्तु एव किन्तु एतन्ना अति नय निर, एवंगी०
नारी मुकुटादी, ली० गार्दो पीठ, नार० ली० वनरो । कन्तु न' लोभो अरार
नहि जायत छति ।

कोश मे निम्नलिखित प्रविष्टि कथ आ पाठ्यक्रम अनुसार चले
उने आ एकटा गणना आ गिनाय । एहिवा योजनाय योजनाय तन्त्रिये कार्ये
कृष' लेव अपि, शीत शक्ति ऐन रवि आ दोन खेती खेतिगान य' लेव छनि ।

३ = २]

DATE

कालिये रहा प्रसन्न रहति वे यणी जा क्षात्र जी। सहाय लायत छवि
बहुरस। यह बेष्टा कवलनि मुका सफल नहि। वेसाह। पता जपननि जे
आयत
छलत। प्लेबने धुरताह दुबे छ। प्लेबकार्य जोपरि जेलनि। मारि बकता
आयत
मनुका दुबने जति पलाह। पलाह रहि। वे मात आयत पलाह देरी
छलत। पलाह
पहिलि बेल पर कर भेटी ने कर। देतनि।

सुकोन काहु जय क' उठनाह । उठि क' उठ ख' बेलाह । सिपाही
सभ रेषकनि मुदा उठान नहि दैसकनि । ओ बाहर पैसलमे जाति गेलाह ।
मजरा सेत एकटा सिपाही जोनो केनिल मे बल गेल छल प्राय । दोसर जोही
उठ उठ जोषा खुल छल । तरिसक छाड़ैछाड़ै मुनि खुल छल । नारकल
घोडना क' राखल छैनह, जोकर पहर लख भ । सुम०पि० साहेबक बाब फेर मोर
गहरनिहार नै जादैब बाबल छल । मंत्री, भाइजो साहबक आदेश छल—...

सुकीर वासूक जीणि चमक' लगमनि । श्रृंगार हांडि बेतरा तणि केसनि ।
 लमकि क' राइकन अडीमनि जा केनि ये पुनि येनाह । राइकन हू मीर
 मरमल ।

सुधीर शत्रु हस्त में गिरा। विद्वाना एकदम डोक छपति । मेनपपक
टुंलिन नेकर गति बैस छपति : को पदकतके मुभाक दोसर दिखई बेट
उरई रहति मे रनि का जोरने पुपतिनि । लनका : एक बेर कोर मुपतिनि—छका ।
इन् पाव उरिह कीका आनि क एक दोसर पर बेटा गेल रहति । किकेट मे
ननवर मे भुव छनक परई छलहु सुधीर शत्रु । हुनकर वृत्त नपता छल
एकपक क बीडा रहल छलनि । जार मे कल्ल रामपक आकृति बेर बेर हुनकर
अंशिन जाग ननि रहल छलनि आ जोग रहल छलनि जेहा जगत वापक
एककरई देखि होकरो बाहुति पर डुंभी पसरि गेल छल ।

कुर्यात् वैदिक ऋषिः केचिन् ये वैदिक दृष्टौ गौतम साहि परं सुवीर वादु
निश्चितार्थं वैदिक साहित्य या ऋषिः ये सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः ।
कान्ते वरं सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः ।
सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः सन्तः ।

उत्सुर्न सुखानन्द सम्प्रेक्षित इत्युक्तिः काङ्क्षेति । इत्येकं गतिं मद्रिमं च ।
 इत्युक्तं । अस्मिन् स्थितौ नान्यं नान्यं नान्यं नान्यं ।

सिद्धिपथ १५८५

रमक

143

[illegible]